

Reliving an emotional love saga on stage

As a tribute to 75th Republic Day, a play-Swaha was staged in the city.

Presented by Darpan Theatre Group on the initiative of Dr Radha Rangarajan, director, CSIR-CDRI, the story of the play was an emotional love saga of an army officer Major Bhatia and a girl called Shikha whose family was saved by the Indian army when they were abducted during 1971 war.

Theatre and Bollywood actor Anil Rastogi played the lead role along with Divyam Bhardwaj Bhattacharya.

"To perform on the premises and among the people where I have worked for 41 years is an emotional moment for me. This organisation helped me to get recognition not only in the field of science but also in

acting," said Dr Rastogi who is also the general secretary of the theatre group. He thanked staff and director of CDRI on the occasion.

The drama also featured Vikas Srivastava, Dr Rakesh Kumar and Shubham Dubey was conceived by writer-director Shubhdeep Raha.

HTC



Dr P Trivedi, Dr R Rangarajan



(Above) Play being staged at CDRI Club



Dr Vidhu Rane, Dr Ritu Trivedi, Anil Rastogi, Pradeep Srivastava

LUCKNOW/METRO

Monday, January 29, 2024

अमर उजाला

गणतंत्र दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं

लखनऊ शुक्रवार 26.01.2024

स्वाहा के मंचन में देशभक्ति का ताना-बाना

संवाद न्यूज एजेंसी

लखनऊ। गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर बृहस्पतवार को सीडीआरआई स्टाफ क्लब की ओर से दर्पण नाट्य संस्था की ओर से मुख्य प्रेक्षागृह में नाटक स्वाहा का मंचन हुआ। भारत-पाकिस्तान युद्ध (1971) की विभीषिका की पृष्ठभूमि में प्रेम, परिवार, अंतरद्वंद और देश के प्रति कर्तव्यों के ताने-बाने पर रचा गया स्वाहा रोमांच और सस्पेंस से भरपूर रहा। कहानी में भारत का एक खुफिया एजेंट मंदार, पैसे की खातिर पाकिस्तान की एजेंसी आईएसआई को देश की गोपनीय जानकारी देने लगता है। मेजर के अहम किरदार में देश के मशहूर चरित्र रंगकर्मी डॉ. अनिल रस्तोगी का अभिनय यादगार रहा। शुभदीप राहा द्वारा निर्देशित नाटक में प्रेक्षागृह खचाखच भरा रहा और लोग सीटियों पर बैठे नजर आए। सीडीआरआई की निदेशक डॉ. राधा



नाटक स्वाहा का मंचन करते कलाकार। संवाद

रंगरानन की मौजूदगी में सीमैप के निदेशक डॉ. प्रबोध त्रिवेदी ने सीडीआरआई प्रीमियर लीग की टीशर्ट का अनावरण किया। संचालन संस्थान के संस्कृति सचिव पंकज प्रसून ने किया।

NBT

नवभारत टाइम्स। कानपुर (कानपुर व लखनऊ में एक साथ प्रसारित)। शुक्रवार, 26 जनवरी 2024

स्वाहा में दिखा परिवार और फर्ज के बीच का अंतरद्वंद



■ एनबीटी, लखनऊ: सीडीआरआई स्टाफ क्लब के स्वापना दिवस पर व गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर नाटक स्वाहा का मंचन कराया गया। इस दौरान सीपीएल (सीडीआरआई प्रीमियर लीग) की टीशर्ट का लोकार्पण सीमैप के निदेशक डॉ. प्रबोध त्रिवेदी ने किया। इन टीशर्टों में सीडीआरआई द्वारा बनाई गई छह दवाओं के नाम पर बनी छह टीमें

गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर सीडीआरआई में नाटक का मंचन दर्पण संस्था द्वारा शुभदीप राय द्वारा स्वाहा के माध्यम से परिवार और देश के प्रति कर्तव्यों के निर्वाह में पैदा हुए अंतरद्वंद को दिखाया गया। इसमें रियायत आर्मी ऑफिसर एसपी (अनिल रस्तोगी), बांग्लादेश की महिला जर्नलिस्ट शिखा (दिव्या भारद्वाज भट्टाचार्य), एसपी के बेटे मंदार की कहानी दिखाई गई। नाटक में बीच-बीच में हास्य का पुट दर्शकों को बांधे रखा है। अनिल और राकेश की जुगलबंदी पर दर्शकों ने जमकर ठहाके लगाए।

स्वाहा के सस्पेंस ने दर्शकों को किया चकित

जबलपुर, अग्निबाण। उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार द्वारा एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत पाँच दिवसीय नाट्य समारोह आयोजित किया जा रहा है। नाट्योत्सव के चतुर्थ दिवस प्रो. सुरेश शर्मा ने 'खनक' की संस्था दर्पण द्वारा शुभदीप राहा जी के लेखन-निर्देशन में नाटक स्वाहा की प्रस्तुति को आर्म्बित किया। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के स्नातक शुभदीप राहा लिखित एवं निर्देशित नाटक स्वाहा दर्पण के लिए विशेष रूप से लिखा गया एक सस्पेंस थ्रिलर है। सन 1971 के युद्ध पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) की पृष्ठभूमि से उपजी एक प्लेटोनिक

प्रेम कथा जिसमें बहुत गहरा लगाव, निस्वार्थ भाव, अटूट विश्वास, समझदारी और संवेदना है। कहानी की शुरुआत उस युद्ध में बची शिखा बॉस और रिटायर्ड मेजर एसपी भाटिया के फोन कॉल से होती है। वह 40 साल बाद आकर उनसे मिलना चाहती हैं क्योंकि मेजर उनके रक्षक हैं। परिवार और कर्तव्य के बीच कहानी में सस्पेंस परत दर परत खुलता है और दर्शकों को चकित कर देता है। इस दौरान रंग पर डॉ. अनिल रस्तोगी, शुभम कुमार दुबे, डॉ. राकेश कुमार, विकास श्रीवास्तव, दिव्या भारद्वाज भट्टाचार्य, वीरेंद्र रस्तोगी ने अभिनय किया।



‘स्वाहार’ में दिखा कर्तव्य और परिवार के बीच गजब संतुलन

40 साल बाद आए फोन से मेजर हतप्रभ

प्रदेश टुडे संवाददाता, जबलपुर

उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार द्वारा ‘एक भारत-श्रेष्ठ भारत’ के अंतर्गत पाँच दिवसीय नाट्य समारोह केंद्र निदेशक प्रो. सुरेश शर्मा की परिकल्पना में चौथे दिन पृष्ठभूमि से उपजी प्लेटोनिक प्रेम कथा स्वाहार का मंचन किया गया। इस अवसर पर शहर के कलाप्रेमी सुधिजन उपस्थित रहे। संचालन स्वाति दुवे ने किया। लखनऊ की संस्था ‘दर्पण’ द्वारा शुभदीप राहा के लेखन-निर्देशन में नाटक ‘स्वाहार’ की प्रस्तुति को आमंत्रित किया। शुभदीप राहा लिखित एवं निर्देशित नाटक ‘स्वाहार दर्पण’ के लिए विशेष रूप से लिखा गया एक सस्पेंस थ्रिलर है। सन 1971 के युद्ध पूर्वी



पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) की पृष्ठभूमि से उपजी एक प्लेटोनिक प्रेम कथा जिसमें बहुत गहरा लगाव, निस्वार्थ भाव, अटूट विश्वास, समझदारी और संवेदना है। कहानी की शुरुआत उस युद्ध में बची शिखा बोस और

रिटायर्ड मेजर एसपी भाटिया के फोन कॉल से होती है। वह 40 साल बाद आकर उनसे मिलना चाहती है, क्योंकि मेजर उनके रक्षक हैं। परिवार और कर्तव्य के बीच कहानी में सस्पेंस परत दर परत खुलता है और दर्शकों को चकित कर देता है। मंच पर डॉ. अनिल रस्तोगी, शुभम कुमार दुवे, डॉ. राकेश कुमार, विकास श्रीवास्तव, दिव्या भारद्वाज भट्टाचार्य, वीरेंद्र रस्तोगी उपस्थित थे। मंच पर निर्माण मधु सूदन, प्रॉप्स मधु, रंग दीपन गोपाल स्वरूप सिन्हा, रंग दीपन सहायक सुमित श्रीवास्तव, मंच व्यवस्था प्रवीण (वंश) श्रीवास्तव, वेशभूषा अनामिका, संगीत संचालन अविजीत पांडे, सहायक निर्देशन अंकुर वर्मा, लेखक एवं निर्देशक शुभदीप रहे।

सरस्पेंस थ्रिलर रहा 'स्वाहा'



समझदारी और संवेदना है। कलानी की शुरुआत उस युद्ध में बची शिखा बोस और रिटायर्ड मेजर एसपी प्पाटिया के फोन काल से होती है।

इनकी रही उपस्थिति:मंच पर डा. अनिल रस्तोगी, शुभम कुमार, डा राकेश कुमार, विकास श्रीवास्तव, दिव्या भारद्वाज भट्टाचार्य, वीरेंद्र रस्तोगी ने भूमिका की। मंच निर्माण मुख सुदन, ग्रास मधु गोपाल स्वय सिरहा, सुमित श्रीवास्तव, मंच व्यवस्था प्रवीण श्रीवास्तव, वेशभूषा अनामिका, संगीत संचालन अविजीत पांडे का है। लेखक एवं निर्देशक शुभदीप राहा है। सहायक निर्देशन अंकुर वर्मा ने किया है। इस अवसर पर कृष्णमोहन द्विवेदी, शैलेंद्र कुमार, वरिष्ठ रंगकर्मी अरुण पांडे, हिमांशु, आशीष पाठक, संजय पांडेय आदि की उपस्थिति रही।



स्वाहा

स्वाहा

Darpan festival plays left drama buffs spellbound

Godhooli Sharma | TNN

Lucknow: The ten-day theatre festival organized by Darpan at UP Sangeet Natak Akademi (UPSNA) and Bhartendu Natya Academy (BNA) concluded on Saturday with people of all walks of life appreciating the theatrical treat.

The festival not just brought the theatre lovers of the city together but also provided them an opportunity to watch theatre performances from artists from across the country under one roof.

Each day there would have been a long queue of people waiting for their turn to enter the auditorium about an hour before the play began. The love for theatre for some was such that they did not even mind sitting on the floor to watch the plays.

From applause during the plays to all performances ending with a standing ovation, the different genres of plays—comedy, thriller, suspense and contemporary theatre left the audience spellbound. Ashok Kumar (71), a regular visitor said that it was good to watch plays of different genres that left his wife and him surprised.

"Watching theatre personalities from across the country gave an exposure to various cultures. It also provided an insight to the theatre techniques used by the people," said Kumar.

Meeting film personalities, Anoop Soni, Juhi Babbar and Nivedita Bhattacharya, to some was like a dream come true.



A scene from one of the plays staged during the 10-day theatre festival in city

Anju Singh (51) said that she had been following Soni in various shows for quite some time. "I found an opportunity to get some pictures clicked here. Besides, I also enjoyed the shows by the National School of Drama repertory during the festival," said Singh.

Meanwhile, theatre veterans, including Atamjeet Singh and Suryamohan Kulshrestha, opined that good theatre should be promoted.

The auditoriums filled to more than its capacity was a sign that people are interested in watching good theatre. "Such programmes should also be organized by the government authorities like UPSNA, BNA and department of culture," said Kulshrestha.

Mukesh Bahadur Singh, the conveyer of the festival, thanked theatre buffs of the city for giving an unpredictable support to the 10-day event.

General secretary, Darpan, Lucknow, Anil Rastogi said that there were several problems which came up their way while organizing the programme but their aim to cater the audience with quality theatre kept them going.

TOI

29.05.23

‘स्वाहा’ नाटक : सन 1971 के युद्ध से उपजी एक प्रेम कहानी

जबलपुर, देशबन्धु। उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार द्वारा एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत नाट्य समारोह में चौथे दिन स्थानीय सेठ गोविंददास रंगमंच प्रेक्षागृह में स्वाहा नाटक की प्रस्तुति की गई। स्वाहा दर्पण के लिए विशेष रूप से लिखा गया नाटक एक सस्पेंस थ्रिलर है। सन 1971 के युद्ध पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) की पृष्ठभूमि से उपजी एक प्लेटोनिक प्रेम कथा, जिसमें बहुत गहरा लगाव, निस्वार्थ भाव, अटूट विश्वास, समझदारी और संवेदना है। कहानी की शुरुआत उस युद्ध में बची शिखा बोस और



रिटायर्ड मेजर एसपी भाटिया के फोन कॉल से होती है। वह 40 साल बाद आकर उनसे मिलना चाहती हैं, क्योंकि मेजर उनके रक्षक हैं। परिवार और कर्तव्य के बीच कहानी में सस्पेंस परत दर परत खुलता है और दर्शकों को चकित कर देता है। नाटक दौरान डॉ. अनिल रस्तोगी, शुभम् कुमार दुबे, डॉ. राकेश कुमार, विकास श्रीवास्तव, दिव्या भारद्वाज भट्टाचार्य, वीरेंद्र रस्तोगी मंच पर मौजूद रहे। आज नाट्योत्सव के पंचम एवं अंतिम दिन शायर शटर डाउन नाटक का मंचन होगा। दिल्ली की संस्था फ्लाइंग फेदर्स आर्ट एसोसिएशन द्वारा स्व. त्रिपुरारी शर्मा के निर्देशन में होगा।

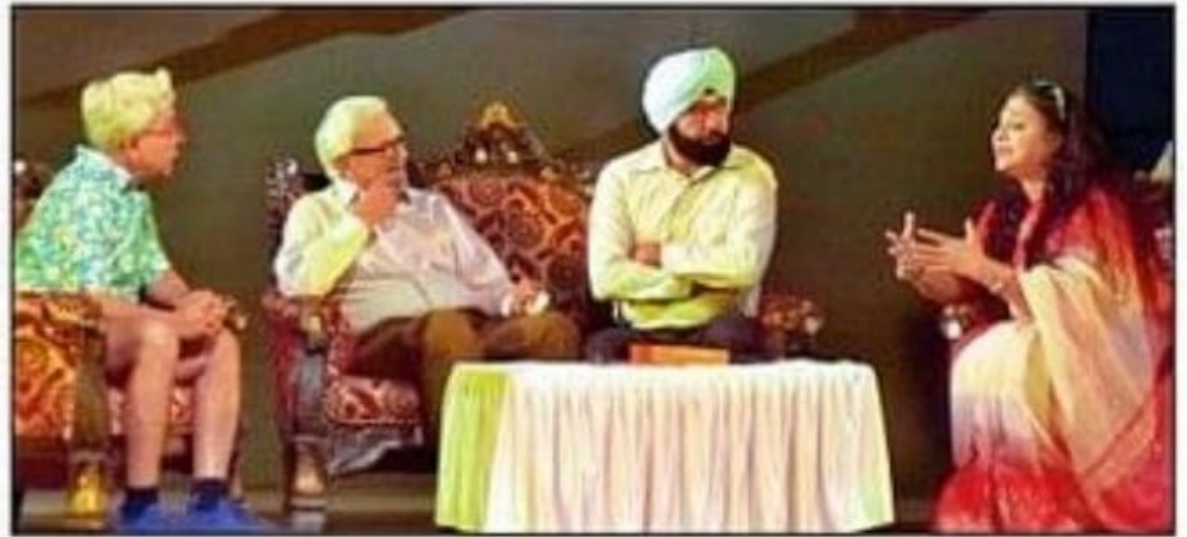
पत्रिका

जबलपुर, रविवार
10 दिसंबर 2023

दर्पण में दिखा निस्वार्थ प्रेम और अटूट विश्वास

आगरा। सूरसदन में सोमवार को दर्पण नाटक का मंचन हुआ। जिसमें निस्वार्थ प्रेम, अटूट विश्वास का मार्मिक चित्रण दिखा। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के शुभदीप राहा का यह नाट्य सस्पेंस थ्रिलर है। जिसमें वर्ष 1971 के युद्ध की पृष्ठभूमि में उपजी एक प्लेटोनिक प्रेम कथा है। इस युद्ध में बची शिखा बोस और रिटायर मेजर एसपी भाटिया के फोन कॉल से नाटक की शुरुआत होती है। शिखा 40 साल बाद मेजर से मिलना चाहती है। परिवार और कर्तव्य के बीच कहानी में परत दर परत सस्पेंस खुलता जाता है और दर्शक चकित रह जाते हैं।

लखनऊ की संस्था स्वाहा की इस प्रस्तुति में मेजर का किरदार डॉ. अनिल रस्तोगी, दिव्या भारद्वाज शिखा बोस और खुशवंत सिंह का किरदार डॉ. राकेश कुमार ने निभाया। शुभम दुबे, वीरेंद्र रस्तोगी, विकास श्रीवास्तव आदि ने अभिनय किया। ब्यूरो



सूरसदन में नाटक का मंचन करते कलाकार। संवाद

खुफिया एजेंसी से उठा पर्दा, जिंदगी स्वाहा

जागरण संवाददाता, आगरा: शक की बुनियाद कमजोर निकली, रा और आइएसआइ के एजेंट से पर्दा उठा। जिंदगी स्वाहा हो गई। ताजमहोत्सव के तहत सूरसदन में नाटक स्वाहा ने दर्शकों को बांधे रखा।

नाटक स्वाहा में मेजर जनरल एपी भाटिया डा अनिल रस्तोगी के घर बांग्लादेश की महिला शिखा बोस दिव्या भारद्वाज भट्टाचार्य का फोन आता है। खुद को पत्रकार बताते हुए कहती है कि '71' के युद्ध में आपने हमारी जिंदगी बचाई थी, भारत आए हुए हैं इसलिए आपसे मिलना चाहते हैं।

यहां से शक शुरू होता है, उनका बेटा खुद को रा का अधिकारी बताता है और शिखा पर आइएसआइ की एजेंट होने का शक। नाटक की कहानी आगे बढ़ती है, नया

● ताजमहोत्सव के तहत सूरसदन में नाटक 'स्वाहा' का मंचन

● रा और आइएसआइ के एजेंट की कहानी से बंधे रहे दर्शक



सोमवार को सूरसदन में ताज महोत्सव के तहत "स्वाहा" नाटक का मंचन करते अनिल रस्तोगी व अन्य कलाकार ● जागरण

मोड़ आ जाता है। शिखा रा की अधिकारी निकलती है और उनका बेटा आइएसआइ का एजेंट। दर्पण की प्रस्तुति, लेखक और निर्देशक शुभदीप राहा रहे। दर्शकों ने नाटक का आनंद लिया।

हिंदुस्तान आगरा 27-02-24



सोमवार को ताज महोत्सव के तहत सूरसदन में नाटक का मंचन करते कलाकर।

स्वाहा का मंचन देख ताजा हुई यादें

अभिनय

आगरा, कार्यालय संवाददाता। तीन बुजुर्ग जिसमें एक महिला और दो पुरुष...। जो एक-दूसरे से इस प्रकार बात करते हैं कि दर्शक समझ नहीं पाते हैं कि आखिर इनमें संबंध किसके गहरे हैं। नोकझोंक, खुशी, गम, आंसू और फिर सालों बाद मिलन अंत तक दर्शकों को बांधे रहता है। यह कहानी थी शुभदीप रहा लिखित और निर्देशित नाटक स्वाहा की। इसका मंचन सूरसदन में ताज महोत्सव के तहत किया गया।

नाटक की कहानी संस्पेंस थ्रिलर

- नाटक में कलाकारों ने बखूबी निभाया किरदार
- मंचन में परत दर परत खुला संस्पेंस

थी। जिसमें वर्ष 1971 के युद्ध पूर्वी पाकिस्तान की पृष्ठभूमि की प्रेम कहानी है। ये एक प्लेटोनिक प्रेम कथा थी। जिसमें बहुत गहरा लगाव, निस्वार्थ भाव, अटूट विश्वास, समझदारी और संवेदना है। कहानी की शुरुआत उस युद्ध में बची शिखा बोस और रिटायर्ड मेजर एसपी भाटिया के फोन कॉल से होती है। वह 40 साल बाद आकर उनसे मिलना चाहती हैं, क्योंकि मेजर

उनके रक्षक हैं। परिवार और कर्तव्य के बीच कहानी में संस्पेंस परत दर परत खुलता है और दर्शकों को चकित कर देता है। जिसमें मेजर एसपी भाटिया का किरदार अनिल रस्तोगी और शिखा बोस का किरदार दिव्या भट्टाचार्य ने बड़े ही शानदार तरीके से पेश किया। संवाद और अभिनय ऐसा कि मानो 1971 के युद्ध की यादें ताजा हो गयीं। किस प्रकार मेजर एसपी उनके परिवार के रक्षक बने। कैसे एक प्रेम कहानी का उद्गम हुआ और वो 40 साल तक उसको ढूंढना। नाटक में खुशवंत सिंह का किरदार डा. राकेश कुमार ने निभाया। वहीं, जसप्रीत बेदी, मंदार के किरदार भी आकर्षण का केंद्र रहे।

Aakhri Vasant: Poignant portrait of evening of life

Varun Bhatt | TNN

Lucknow: Emotional crisis of an abandoned elderly couple was portrayed delicately in Darpan group's play 'Aakhri Vasant' staged at the Central Drug Research Institute. The performance resonated deeply with the audience, as the play created pathos and showed how new bonds formed in the most unlikely situations.

The elderly couple's only son is settled in Canada after marrying a woman of that nation. While the mother maintains occasional phone contact with her son and daughter-in-law, the father is estranged with the son who refuses to speak with him. The atmosphere in the household is of silence and longing until an unexpected twist



Veteran actor Anil Rastogi performing an act in the play

disrupts the monotony.

A fugitive dacoit breaks into their home and secures shelter at gunpoint. The situation takes another dramatic turn when the son calls on his birthday, sharing that his wife is pregnant and that they would soon be visiting home. On arrival, the son and his wife are surprised to find the dacoit working as a servant in the home. When police arrive looking for the criminal, the couple hide

him, claiming their servant is out in the market.

The climax comprises a touching moment in which the son confesses that he is not their real child, but a hired actor from an organisation that provides companionship to elderly parents abandoned by their children. His contract period is over and he must leave. This revelation stirs the dacoit, leading him to call the police and surrender. Anil Rastogi who played a central role in the play said, "This play shows that in today's world, you can even hire children who act like your own. A play is only meaningful when the audience truly connects with it." Chitra Mohan, Vansh Srivastava, Alka Vivek, Vikas Srivastava and Sanjay Deglurkar also acted.

राग रंग आलोक पराइकर

'दर्पण' का वसंत

साहित्य की हर विधा का अपना चरित्र और अनुशासन है। कोई रचना कहानी होने की मांग करती है, कोई उपन्यास, कोई कविता तो कोई रेखाचित्र। नाटक को लेकर मुझे जो बात सबसे आकर्षित करती है वह यह कि उसमें नाटकीयता से अधिक चरित्रों की इंद्रात्मकता कैसी है, अपने भीतर विचारों की उभेड़बुन, चरित्र की परतें, उनके असमंजस और उनके कई चेहरे। वास्तव में दूसरी विधाओं में मन की बात को, अन्तरविरोधों को व्यक्त कर पाने का पूरा स्थान और अवसर होता है लेकिन किसी नाट्य प्रस्तुति में हम दृश्य, संवाद, गतिविधि या चुप्पी से कुछ व्यक्त कर रहे होते हैं तो कुशलता इसमें होती है कि हम विचार के इन भिन्न स्तरों को एक साथ कैसे व्यक्त करें और अगर व्यक्त न भी करें तो वह हमारे अभिनय में किस प्रकार शामिल बना रहे जिससे कहानी के मोड़ लेने या उसमें नाटकीय घटनाक्रम आने पर वह उस स्थिति में अपने चरित्र के साथ न्याय करता रह सके।

बहुत सारे निर्देशक इसके लिए कई प्रकार की कलायुक्तियों का इस्तेमाल करते हैं। कोई स्वागत के लिए किसी सूत्रधार, विदूषक जैसे चरित्रों का इस्तेमाल करता है, तो कोई कलाकारों को स्थिर कर संवादों को बुलवाता है।

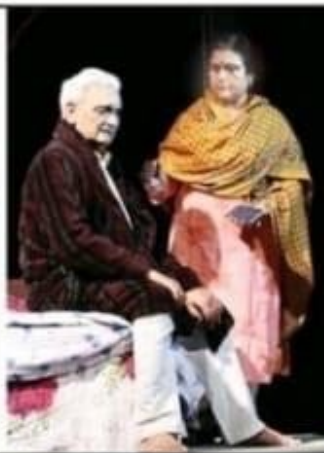
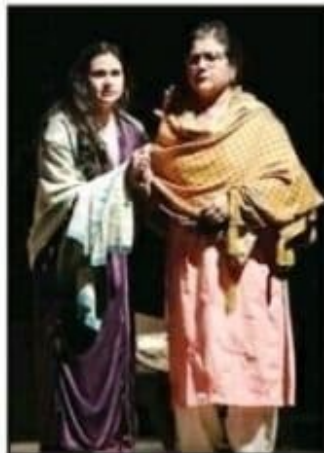
पंढियों के बीच टकराव, बेटे-बेटियों का विदेश बस जाना, वृद्धावस्था में मां-बाप का अकेलापन कई नाटकों के विषय रहे हैं। पिछले दिनों एक पोस्ट सोशल मीडिया पर खूब साझा की जा रही थी जिसमें बताया गया था कि मां के मरने पर छोटा बेटा विदेश से आता है। पिता बेटे को मां की इच्छा के बारे में बताते हैं कि बड़ा बेटा अंतिम संस्कार करे। बेटा कहता है कि हम दोनों में तय हुआ था कि बाप के मरने पर बड़ा बेटा और मां के मरने पर छोटा बेटा आएगा। यह सुनकर बाप खुद को गोली मार लेते हैं। कोरोना में स्वर्ण जयंती का उत्सव न मना सके दर्पण (लखनऊ) द्वारा इन

दिनों विभिन्न नगरों में मंचित किए जा रहे 'अंतिम वसंत' में एक वृद्ध दंपति के अकेलेपन की कथा तो है, लेकिन यह कथा अपने आखिरी प्रसंगों में नाटकीय रूप लेकर चौंकाती है। पिता से झगड़े के बाद बेटे के कनाडा में बस जाने और पिता के अवसाद में होने के बीच कथा कई मोड़ लेती है, जिसमें जेल से भागे अपराधी का उनके घर में प्रवेश लेना तो है ही, बेटा-बहू की कमी को पूर्ण करने का एक अनूठा तरीका भी शामिल है।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के छात्र रहे और भारतेन्दु नाट्य अकादमी

में व्याख्याता शुभदीप राहा लिखित-निर्देशित इस नाटक के सभी पात्र चाहे वह गीता के रूप में चित्रा मोहन हों, राघू के रूप में संजय देगलुरकर, रणदीप के रूप में विकास श्रीवास्तव हों या वंदना के रूप में अलका विवेक, अपने चरित्रों के साथ न्याय करते दिखते हैं। हालांकि पुलिस अधिकारी के रूप में वंश श्रीवास्तव थोड़े अतिरंजित हैं, लेकिन मुझे नाटक में वृद्ध सुधीर की भूमिका करने वाले

अनिल रस्तोगी ने विशेष तौर पर प्रभावित किया तो इस कारण कि वे न सिर्फ एक वृद्ध पिता के भीतर चल रहे संघर्षों को कुशलता से संश्लेषित कर पाते हैं, बल्कि उन परिस्थितियों के बारे में पहले से जानते हुए भी उन्हें छुपाने का इंद्र भी उनके अभिनय का हिस्सा होता है, जो बाद में नाटकीय रूप में सामने आती हैं। पेशे से वैज्ञानिक होते हुए भी अनिल रस्तोगी लंबे समय से अभिनय से जुड़े हैं। लखनऊ के अनुभवी कलाकार हैं। कालिदास सम्मान मिलने के अवसर और भारत भवन की 40वीं वर्षगांठ पर इस नाटक की प्रस्तुति भारत भवन में हुई थी। लखनऊ में इसकी चार और गोरखपुर में एक प्रस्तुतियों के बाद 15 सितम्बर को इसकी प्रस्तुति वाराणसी के नागरी नाटक मंडली में थी।



जीवन के आखिरी पड़ाव में संबंधों का महत्व बता गया आखिरी वसंत



गांधी भवन में नाटक आखिरी वसंत का मंचन करते कलाकार • जागरण

जागरण संवाददाता, शाहजहांपुर : शहर के गांधी भवन में संगीत नाटक अकादमी की ओर से आयोजित संभागीय नाट्य समारोह के दूसरे दिन लखनऊ की दर्पण संस्था ने नाटक आखिरी वसंत का मंचन किया। फिल्म अभिनेता अनिल रस्तोगी व चित्रा मोहन भी अहम भूमिकाओं में रहे। शुभदीप राहा लिखित व निर्देशित नाटक का शुभारंभ मुख्य अतिथि महापौर अर्चना वर्मा ने दीप प्रज्वलित कर किया।

नाटक बुजुर्ग दंपती सुधीर और गीता के साथ शुरू होता है जो अपने बेटे रणदीप के साथ अपने झगड़े को निपटाने की कोशिश कर रहे हैं। जो कि विदेश में बस गया है और वंदना नाम की युवती से शादी की है। वे लोग किसी तरह रणदीप और वंदना को वापस भारत में अपने घर ले आने का प्रबंध करते हैं लेकिन जेल से भागा

लखनऊ की संस्था दर्पण की रही प्रस्तुति, अभिनेता अनिल रस्तोगी व चित्रा मोहन ने भी किया अभिनय

अपराधी राधू सब गड़बड़ कर देता है। नाटक में मंच पर फिल्म अभिनेता डा. अनिल रस्तोगी, चित्रा मोहन, अलका विवेक, विकास श्रीवास्तव, संजय देगलूरकर, वंश श्रीवास्तव ने अपना अभिनय दिखाया। मंच पर देवाशीष मिश्रा, विवेक श्रीवास्तव रहे। संचालन कवि इंदु अजनबी ने किया। अंत में मंथन आर्ट्स सोसायटी के अध्यक्ष शिवा सक्सेना ने सभी का आभार व्यक्त किया। नाटक देखने वालों में शमीम आजाद, जरीफ मलिक आनंद, अनिल द्विवेदी, राजाराम, कृष्ण कुमार, मनोज मंजुल, कप्तान, योगेश, प्रेम आदि मौजूद रहे।

दर्शकों को झकझोरने में सफल रहा आखिरी वसंत

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार : उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी लखनऊ और जिला प्रशासन के तत्वावधान में गांधी भवन में चल रहे संभागीय नाट्य महोत्सव के दूसरे दिन आखिरी वसंत नामक नाटक का प्रभावी मंचन किया गया। नाटक की कहानी कलाकारों के दमदार अभिनय ने दर्शकों को अंत तक जोड़े रखा।

दर्पण नाट्य संस्था लखनऊ के शुभदीप राहा द्वारा लिखित और निर्देशित नाटक आखिरी वसंत एक बुजुर्ग दंपति सुधीर और गीता के जीवन से शुरू होता है, जो अपने बेटे रणदीप के साथ झगड़े को निपटाने की कोशिश कर रहे हैं। बेटा रणदीप कनाडा में बस गया है और उसने वंदना नामक लड़की से



नाटक आखिरी वसंत का भावपूर्ण मंचन करते कलाकार।

शादी कर ली है। पांच साल पहले बेटे से संपत्ति को लेकर झगड़ा हुआ था। सुधीर और गीता किसी तरह रणदीप-वंदना को वापस भारत लाने का प्रबंध करते हैं, लेकिन जेल से भागे एक अपराधी राधू ने सब कुछ गड़बड़ कर दिया और अफरातफरी के बीच मूल सच्चाई

सामने आती है, तो कहानी अटूट मानव बंधन और संबंध की प्राप्ति की ओर चली जाती है। आखिरी वसंत वास्तव में संवेदनशील समाज का आइना है।

नाटक को टीवी और फिल्म अभिनेता डॉ. अनिल रस्तोगी, बीएनए की पूर्व प्रोफेसर चित्रा मोहन

- कलाकारों ने किया बेटे के प्रवासी होने की पीड़ा का प्रभावी मंचन
- संभागीय नाट्य महोत्सव का दूसरा दिन, महापौर ने किया नाटक का आरंभ

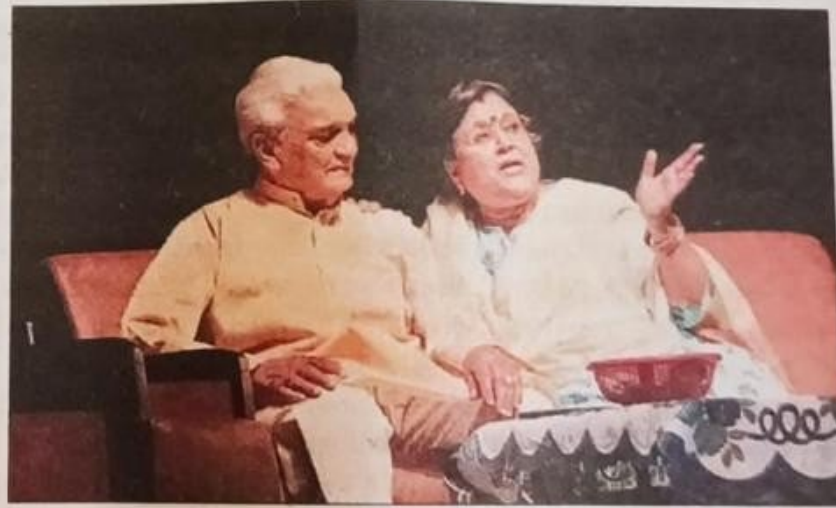
जैसे कलाकारों ने जीवंत करने का काम किया। उनके साथ अलका विवेक, विकास श्रीवास्तव, संजय देगलुरकर, वंश श्रीवास्तव का अभिनय भी दर्शकों को खूब भाया। जबकि मंचीय विभिन्न व्यवस्थाओं में सुमित श्रीवास्तव, मधुसूदन, नंद किशोर, डॉ. सुधा रस्तोगी, स्मिता देगलुरकर, रोजी दुबे, संध्या दीप, मनोज वर्मा, देवाशीष मिश्रा, राधेश्याम सोनी, विद्या सागर गुप्त आदि का सहयोग रहा। इससे पहले नाटक का आरंभ महापौर अर्चना वर्मा ने दीप जलाकर किया किया। संचालन डॉ. इंदु अजनबी का रहा। महोत्सव आयोजन समिति की टीम में शिवा सक्सेना, मोहित कनौजिया, सुमित सक्सेना, शंकर लाल, यशदेव शर्मा, ऐश्वर्य, समन, पारस दीक्षित, अंकित अवस्थी, मोहित वाजपेयी आदि का सहयोग रहा।

रंगमंच | प्रादेशिक नाट्य समारोह की दूसरी शाम नाटक आखिरी बसंत का मंचन, एकाकी वयोवृद्ध अभिभावकों की दशा दिखाई अकेले रह गए बुजुर्ग दंपति के दर्द की छाया मंच पर उतरी

लखनऊ, कार्यालय संवाददाता।
उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी की ओर से त्रिदिवसीय प्रादेशिक नाट्य समारोह की दूसरी शाम दर्पण लखनऊ की प्रस्तुति आखिरी वसंत का मंचन किया गया।

शुभदीप राहा के लेखन और निर्देशन में संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह में मंचित हुए नाटक में विदेश में जाकर बस गए बच्चों के बाद हिन्दुस्तान में एकाकी रह गए वयोवृद्ध अभिभावकों की परिस्थितियों को, आधुनिक

बाजारवाद के परिवेश में प्रभावी रूप दर्शाया। नाटक ने संदेश दिया कि रिश्ते खून के कारण नहीं घनिष्ठ होते बल्कि भावनाएं उनको घनिष्ठ बनाती हैं। नाटक एक बुजुर्ग दंपति सुधीर और गीता के साथ शुरू होता है जो अपने बेटे रणदीप के साथ अपने झगड़े को निपटाने की कोशिश कर रहे हैं जो कनाडा में अपनी पत्नी वंदना के साथ बस गया है। सुधीर की भूमिका वरिष्ठ रंगकर्मी डॉ. अनिल रस्तोगी, गीता की चित्रा मोहन, वंदना की अलका विवेक ने अदा की।



संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह में मंगलवार को नाटक आखिरी बसंत का मंचन हुआ।

03

दिवसीय नाट्य उत्सव का आज अंतिम दिन

आज भुवनेश्वर-दर-भुवनेश्वर का मंचन

अकादमी के निदेशक डॉ. शोभित कुमार नाहर के अनुसार समारोह की अंतिम और तीसरी शाम 19 मार्च को शाहजहांपुर की नाट्य संस्था गगनिका द्वारा नाटक भुवनेश्वर दर भुवनेश्वर का मंचन कप्तान सिंह 'कर्णधर' के निर्देशन में होगा।

आखिरी वसंत में दिखा बुजुर्ग दंपती का एकाकीपन और रिश्तों का ताना-बाना

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। संगीत नाटक अकादमी में मंगलवार शाम संत गाडगे प्रेक्षागृह दर्शकों से खचाखच भरा था। दर्शकों की नजर मंच पर मानवीय संवेदनाओं का ताना-बाना बुनते कलाकारों पर टिकी हुई थी। मौका था दर्पण संस्था की ओर से नाटक आखिरी वसंत के मंचन का।

मुख्य भूमिका में वरिष्ठ रंगकर्मी, फिल्म अभिनेता डॉ. अनिल रस्तोगी, भारतेन्दु नाट्य अकादमी में प्रशिक्षक रही अभिनेत्री चित्रा मोहन के अभिनय ने शुरू से लेकर अंत तक दर्शकों को बांधे रखा। बुजुर्ग दंपती के एकाकीपन को उन्होंने अपनी बेहतरीन अदाकारी से जीवंत कर दिया।

शुभदीप राहा के लेखन और निर्देशन में इस नाटक ने आधुनिक बाजारवाद के प्रभाव में जी रहे वयोवृद्ध अभिभावकों की भावनाओं को प्रभावी ढंग से पेश किया। विदेश में बस चुके बच्चों और भारत में अकेले रह रहे बुजुर्ग

डॉ. अनिल रस्तोगी और चित्रा मोहन के अभिनय ने किया भावुक



संगीत नाट्य अकादमी में दर्पण संस्था की ओर से नाटक का मंचन करते कलाकार। संवाद

माता-पिता के रिश्तों की जटिलताओं को नाटक में उजागर किया गया। कहानी सुधीर और गीता नामक बुजुर्ग दंपती के इर्द-गिर्द घूमती है, जो अपने बेटे रणदीप और उसकी पत्नी वंदना को कनाडा से भारत बुलाने की कोशिश कर रहे हैं।

कलाकारों की अभिव्यक्ति ने नम कर दीं आंखें

जासं • लखनऊ: मंच के एक छोटे हिस्से पर उजाला हुआ और नाटक आखिरी वसंत की शुरुआत एक बुजुर्ग दंपती सुधीर और गीता के साथ हुई, जो अपने बेटे रणदीप के साथ पांच साल पहले हुए झगड़े को निपटाने की कोशिश कर रहे थे। बेटा कनाडा में पत्नी वंदना के साथ बस गया है। कलाकारों की अभिव्यक्ति ने क्षण भर में ही दर्शकों की आंखें नम कर दीं। मौका था उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी की ओर से मंगलवार को गोमती नगर स्थित संगीत नाटक अकादमी के संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह में आयोजित नाटक का।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आयुष, खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन के प्रमुख सचिव रंजन कुमार रहे। नाटक के अंत में परिस्थितियों का मारा अपराधी राधू सच्चे प्यार की तलाश में अंजान बुजुर्ग दंपती को अपना



एसएनए में आखिरी वसंत नाटक का मंचन करते अनिल रस्तोगी और चित्रा

अभिभावक बना लेता है। इसके बाद सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। तीन दिवसीय प्रादेशिक नाट्य समारोह की यह दूसरी शाम थी, जिसका मंचन शुभदीप राहा के सराहनीय लेखन और निर्देशन में हुआ। नाटक की प्रस्तुति दर्पण लखनऊ की टीम ने की।

नाटक संदेश देता है कि रिश्ते खून के कारण नहीं घनिष्ठ होते,

बल्कि भावनाएं उसे घनिष्ठ बनाती हैं। कार्यक्रम का संचालन सुनील शुक्ला ने किया। इम मौके पर अकादमी के अध्यक्ष प्रो. जयंत खोत, उपाध्यक्ष विभा सिंह, निदेशक डा. शोभित कुमार नाहर आदि लोग मौजूद रहे। बुधवार को नाटक भुवनेश्वर-दर-भुवनेश्वर का मंचन कप्तान सिंह 'कर्णधार' के निर्देशन में किया जाएगा।

'Aakhri Vasant' highlights plight of elderly whose kids settle abroad

TIMES NEWS NETWORK

Lucknow: A play 'Aakhri Vasant' was staged on the second day of a three-day 'Regional Drama Festival' organised by UP Sangeet Natak Akademi on Tuesday.

Presented by theatre group, Darpan Lucknow and written by Subhdeep Raha, the play effectively presents the situation of elderly parents who are left alone in India after their children settle abroad, in the environment of modern commercialism.

Renowned actor and senior dramatist Anil Rastogi and senior theatre artist Chitra Mohan played the lead characters in the play.

Akademi chairman Jayant Khot said that divisional theatre festivals and state theatre festivals have been organised for the past four decades. Earlier, the state theatre festival was organised after divisional, but now it has been changed to regional theatre festival. Just like there is divisional music competition and regional music competition in music competition, similarly divisional and regional theatre festivals have been organised in drama. In this financial year, 30 applications were received for the divisional theatre festival, out of which 12 plays were selected by the committee constituted for the purpose. Out of 30, four plays



Renowned actor Anil Rastogi and senior theatre artist Chitra Mohan played the lead characters

each were staged in Shahjahanpur, Bijnor and Bareilly. Among the plays selected from those three divisions, Aakhri Vasant from Shahjahanpur, Rashmirathi from Bijnor and Bhubaneswar-Dar-Bhubaneswar from Bareilly were selected on the basis of the decision given by the local observers and the audiences.

2011

नौ रत्न

कुछ बातें उनके बारे में जिन्होंने वर्ष 2011 में अपनी उपलब्धियों से न केवल अपने परिवार का नाम रोश भी डाल दिए गौरव के अमिट क्षण। वर्ष 2011 में लोककमालिनी अवरथी, वरिष्ठ रंगकर्मी डॉ. अनिल रस्तोगी, श्रीवास्तव, डॉ. सुनील प्रधान, डॉ. चंद्र शेखर नोटियाल मावाली रश्मि तिवारी सुर्खियों में रहे।



वरिष्ठ रंगकर्मी डॉ. अनिल रस्तोगी की ऊर्जा और उनकी समर्पण शक्ति भी युवा रंगकर्मी के लिए भी एक मिसाल है। उन्होंने वर्ष भी कई नाटक किए, जिसमें 'आइनों का कोरस' खासा चर्चित रहा। वर्ष भर व सक्रिय रहे। न केवल कार्यक्रमों का आयोजन किया बल्कि अभिनय भी किया। एक के बाद एक करके तीन नाटकों में उन्होंने अभिनय किया। 'दण्ड रंगमंडल' के स्वर्ण जयंती समारोह के अंतर्गत उन्होंने एक संगोष्ठी जयशंकर प्रसाद सभागार में आयोजित की, जिसमें 'लखनऊ की रंगयात्रा' पर प्रकाश डाला गया। फिल्म 'मोनिक्स' में भी वह दिखाई दिए। इसमें उन्होंने अभिनेत्री दिया दत्ता के भूमिका अदा की थी।

डॉ. अनिल रस्तोगी, वरिष्ठ रंगकर्मी



कुछ समय पहले की बात है। एलडीए कोविंग सेंटर में अभ्यास करते समय प्रशिक्षक गोपाल सिंह ने अपने एक साथी की ओर इशारा करते हुए कहा कि यह बच्चा एक दिन देश के लिए खेलेगा। बात सच साबित हुई और क्रिकेटर अशदीप नाथ का चयन इस साल भारतीय अंडर-19 टीम में हो गया। चार देशों के टूर्नामेंट में अशदीप ने आस्ट्रेलिया और श्रीलंका जैसी मजबूत टीमों के खिलाफ अपने बल्ले से कई मैच जिताऊ पारी खेलकर चयनकर्ताओं को प्रभावित किया। एक मैच में वह 'मैन ऑफ द मैच' भी रहा। अशदीप ने उत्तर प्रदेश की अंडर-19 टीम की कप्तानी करते हुए इतिहास बनाया और पहली बार टीम ने प्रतिष्ठित वीनू मांकड ट्रॉफी अपने नाम की।

अशदीप नाथ, युवा क्रिकेटर



लखनऊ के लिए गौरव का एक बड़ा कारण ब्राजील से आया। ब्राजील की 'यूनीवर्सिटी ऑफ साओपोली' में एमएस-सी मास कम्युनिकेशन के कोर्स में अब साइंटिस्ट भी शामिल होंगे। केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान के मेडिसिनल एंड प्रोसेस कैमिस्ट्री डिवीजन के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. पीके श्रीवास्तव द्वारा इजाजत 'साइंटिस्ट' विधा को ब्राजील अमेजन जंगलों के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए भी इस्तेमाल करेगा। साइंटिस्ट को मेट्रो, मॉल व अन्य स्थानों पर लगाया जाएगा। डॉ. श्रीवास्तव को ब्राजील ने अतिथि शिक्षक भी नियुक्त किया है। अब डॉ. श्रीवास्तव ब्राजील के लोगों को साइंटिस्ट विधा के जरिए जंगल बचाने के प्रति जागरूक करेंगे।

डॉ. पी.के. श्रीवास्तव, वैज्ञानिक



एमबीबीएस में टॉप करने वाली रश्मि चिक्रस्ता विश्वविद्यालय के सातवें दीक्षांत समारोह में सुर्खियों में रही। उन्हें बारह स्वर्ण पदक, चार सर्टिफिकेट ऑफ ऑनर और एक बुक प्राइज से अलंकृत किया गया। कानपुर निवासी रश्मि के पिता राकेश कुमार तिवारी व्यवसायी हैं। रश्मि को पढ़ाई के अलावा कविताएं लिखने का भी शौक है। फिलहाल वो पीजी में दाखिल की तैयारी कर रही हैं।

रोड टू सक्सेस
मैंने कभी टाइम टेबल बनाकर पढ़ाई नहीं की क्लास करना और घर आकर उसे दोहरा लेना, सफलता का राज है। तमाम व्यस्तताओं के बीच नियम कभी नहीं तोड़ा। देर रात तक पढ़ाई और तक सोना लेकिन समय पर क्लास में पहुंच

हेडिया सिटी जागरण सिटी सिटी की शान



जुनून रहा थियेटर

सीडीआरआई से सेवानिवृत्त साइंटिस्ट, अनिल रस्तोगी जितना अपने वैज्ञानिक के रूप में उभरा मिसाल है, उतनी ही शोहरत उन्हें रंगकर्मी के रूप में भी हासिल है। बकील रस्तोगी जी-

- 1 आम आदमी से जुड़े मुद्दों पर दर्शकों से सीधे संवाद का थियेटर सबसे पावरफुल मीडिया है। इससे मैं एक जुनून की तरह जुड़ा।
- 2 इस क्षेत्र में आने पर आदरणीय संतराम शुक्ल जी, राधेध्याम जी से काफी प्रेरणा मिली। और भी बहुत से लोगों से सीखने को मिला।
- 3 थियेटर में आज अच्छी रिफाइट का अभाव, दर्शकों की कमी का मतलब बहुत खलती है। कुछ गये लोग इसे महज टीवी और फिल्मों में जाने का माध्यम बनाकर आ रहे हैं।
- 4 1962 में जब लखनऊ विश्वविद्यालय में पढ़ रहा था तभी कुछ अच्छा थियेटर देखने को मिला। सभी इसमें खुद को अभिव्यक्त करने की संभावना दिखी और इससे जुड़ गया।
- 5 थियेटर और साइंटिस्ट की नौकरी, मेरे लिए दोनों महत्वपूर्ण रहे। दोनों को ही पूरा समय दिया, ये कभी एक दूसरे के आड़े नहीं आये। जहां चाह वहीं राह होती है।

अजय शुक्ला

Radio City 104.8 FM की संयुक्त प्रस्तुति दैनिक जागरण यह साप्ताहिक आज आप रेडियो सिटी पर भी सुन सकते हैं।

31.12. TOI 2022. THE Newsmakers FROM LUCKNOW

Shradhanand Tiwari

Shradhanand Tiwari, the son of an escort driver of Lucknow DM, was India's spearhead at the Junior Hockey World Cup quarter final match against Belgium in Bhubaneswar. He converted a penalty corner to score the only goal of the match to take his team into the semi-finals.



Himanshu Bajpai & Pragya Sharma

The daastango duo found mention in PM Modi's Mann ki Baat. During the virtual address, Modi mentioned the storytelling of Rani Durgawati, narrated by Bajpai and Sharma at one of their events in Madhya Pradesh. Defence minister Rajnath Singh also lauded them for keeping the art form alive.



Anil Rastogi

Celebrated theatre and film artist and ex-CDRI scientist Anil Rastogi was conferred with the prestigious Rashtriya Kalidas Samman by the Madhya Pradesh government. Rastogi started his journey with the play 'Noor Jahan' in 1962 and has been working in the field of theatre and cinema.



मंच पर दिखी अटूट विश्वास की कहानी

उत्तर मध्यक्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र द्वारा जारी नाट्य समारोह में हुआ नाटक स्वाहा का मंचन

जबलपुर। उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, संस्कृति मंत्रालय द्वारा जारी नाट्य समारोह के चौथे दिन सेठ गोविंददास रंगमंच प्रेक्षागृह में नाटक 'स्वाहा' की प्रस्तुति हुई। लखनऊ की संस्था 'दर्पण' द्वारा शुभदीप राहा के लेखन-निर्देशन से सजी प्रस्तुति ने सबका दिल जीता। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के स्नातक शुभदीप राहा द्वारा लिखित एवं निर्देशित नाटक एक सस्पेंस थ्रिलर है, जो कि सन् 1971 के युद्ध पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) की पृष्ठभूमि से उपजी एक प्लेटोनिक प्रेम कथा है, जिसमें बहुत गहरा लगाव, निः स्वार्थ भाव, अटूट विश्वास, समझदारी और संवेदना है।

कहानी की शुरुआत उस युद्ध में बची शिखा बोस और रिटायर्ड मेजर एसपी भाटिया के फोन कॉल से होती है। वह 40 साल बाद आकर उनसे मिलना चाहती है क्योंकि मेजर उनके रक्षक हैं। परिवार और कर्तव्य के बीच कहानी में सस्पेंस परत दर परत खुलता है और दर्शकों को चकित कर देता है। मंच पर डॉ. अनिल रस्तोगी, शुभम कुमार दुबे, डॉ. राकेश कुमार, विकास श्रीवास्तव, दिव्या भारद्वाज भट्टाचार्य, वीरेंद्र रस्तोगी वहीं मंच से परे मंच निर्माण में मधु सूदन, प्रॉप्स - श्रीमती मधु, रंग दीपन गोपाल स्वरूप सिन्हा, रंग दीपन सहायक - सुमित श्रीवास्तव, मंच व्यवस्था - प्रवीण श्रीवास्तव, वेशभूषा - श्रीमती



अनामिका, संगीत संचालन - अविजीत पांडे, सहायक-निर्देशन-अंकुर वर्मा का रहा। केंद्र निदेशक प्रो. सुरेश शर्मा ने बताया कि इस नाट्य समारोह में विभिन्न राज्यों की दुर्लभ प्रस्तुतियों को आमंत्रित किया गया है। आज नाट्योत्सव के पाँचवें एवं अंतिम दिन को नाटक 'शायर शटर डाउन' का मंचन दिल्ली की संस्था 'फ्लाइंग फेदर्स आर्ट एसोसिएशन' द्वारा किया जाएगा।

जबलपुर, रविवार, 10 दिसम्बर 2023 . 05

#Theater शहीद स्मारक ऑडिटोरियम में नाटक का मंचन

सामान्य से बेहतर दो लोगों में अफलातूनी प्रेम

जबलपुर. शहीद स्मारक ऑडिटोरियम में उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय नाट्य समारोह में शनिवार को लखनऊ की संस्था दर्पण ने शुभदीप राहा के लेखन और निर्देशन में स्वाहा नाटक का मंचन किया। इस मौके पर केंद्र निदेशक प्रो. सुरेश शर्मा, कृष्णमोहन द्विवेदी, अतुल, शैलेंद्र कुमार, परिषद रंगकर्मी अरुण पाण्डे, हिमांशु राय, आशीष पाठक, संजय पांडेय, ऋषि यादव, आशुतोष द्विवेदी, तपन बैनर्जी, राजेंद्र दानी मौजूद थे। अफलातूनी प्रेम कथा-नाटक की कहानी 1971 के युद्ध पूर्वी पाकिस्तान



की पृष्ठभूमि से उपजी अफलातूनी प्रेम कथा पर आधारित है। इस कथा में बहुत गहरा लगाव, निस्वार्थ भाव, अटूट विश्वास, समझदारी और संवेदना दिखाई गई है। कहानी की शुरुआत



उस युद्ध में बची शिखा बोस और रिटायर्ड मेजर एसपी भाटिया के फोन कॉल से होती है, जो 40 साल बाद उनसे मिलना चाहती है। कहानी के सस्पेंस में परतें खुलती हैं।

DRAMA TARGETS SOCIAL EVIL, DAN

Play exposes drug mafia underbelly

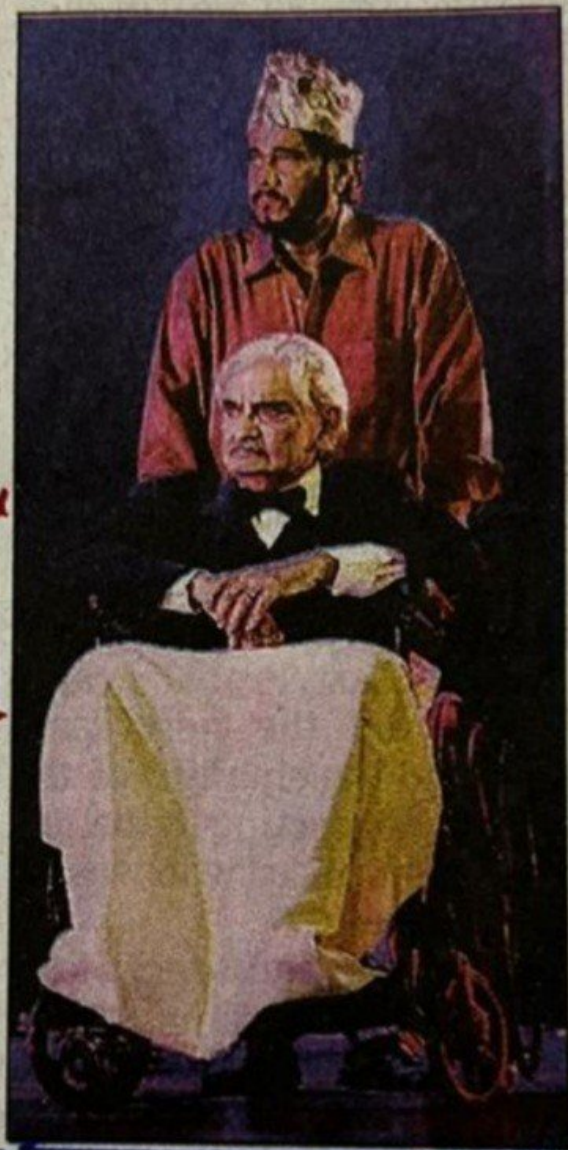
TIMES NEWS NETWORK

Lucknow: A play 'Lighter on the Lips' based on drug peddling mafias was staged at UP Sangeet Natak Akademi on Tuesday. Written and directed by theatre artist Shubadeep Raha, it was organised by Darpan theatre group.

The play revolved around Nepali drug peddler Daichin and Akai Tamang played by Anil Rastogi and Rakesh Kumar and brought out the dark secrets of the mafia and how youth get addicted to drugs and or get involved in drug peddling and the consequences they face.

It ended with the message of keeping the country free of drugs by spreading awareness.

Other important roles of Pema, Prateek and Dwivedi were played by Shalini



Anil Rastogi in role of drug don

Vijay, Shubham Dubey and Saurabh Tiwari, respectively.



DARPAN

Presents

DADDY

Director Surya Mohan
Kulshreshtha

**REVIEW OF THE
PLAY**





Review
by Prafulla Tripathi, a theatre personality from
Lucknow

"As I said earlier, I am ready to watch the much-awaited play "Daddy"; you too should grab your ticket quickly. As the name, so is its worth. If you miss such a powerful production, you might regret it later after hearing praises from those who watched it.

When writing, direction, acting, lighting, music, costumes, and sets all fall perfectly into place, that's when the magic of theatre is created. Just understand this - this play has that magic.

Those who love theatre should definitely go and experience this magic and those who practice theatre have a golden opportunity to learn a lot and take inspiration from the work of senior artists like Dr. Anil Rastogi ji and Suryamohan Kulshreshtha ji.

The state of theatre in the city leaves much to be desired. It's rare to find a really good production here. There are many reasons that can discourage theatre in this region. Yet, when we have a director like Suryamohan Kulshreshtha and a determined actor like Dr. Anil Rastogi, the ray of hope not only remains alive but grows stronger.

Congratulations to the entire cast, director, Govind ji for such a beautiful light design and it's flawless operation, the other technical and backstage team. You all have done a really wonderful job.

So, come what may—storm or rain—the show must go on. It is our responsibility as an audience to ensure that the Sant Gadge Auditorium is packed to capacity tomorrow, echoing not with noise, but with the spellbound silence that only a truly great play can command."





Review

by Pankaj Prasun , Pankaj Prasun is a Hindi poet,
satirist, humorist and author

“ ‘डैडी’ नाटक को देखकर दिल एक अजीब से सन्नाटे में चला जाता है। यह सिर्फ एक वृद्ध पिता की कहानी नहीं है, यह हर उस इंसान की कहानी है जो अपने प्रियजनों को धीरे-धीरे भूलते देखता है, और उस पीड़ा को सहता है जिसे शब्दों में नहीं कहा जा सकता।

डैडी अनंत की भूमिका में डॉ. अनिल रस्तोगी को देखना किसी संत के प्रवचन जैसा रहा। उनके अभिनय में डिमेंशिया की पीड़ा नाटकीय नहीं, जीवंत और असहनीय लगी। बेटी अन्नू के किरदार में शालिनी विजय की आंखों में वह थकी हुई ममता थी जो अपने पिता की पहचान को बचाए रखना चाहती है, लेकिन वक्त और स्मृति धीरे-धीरे उसे छीनते जाते हैं। यह वही संघर्ष है जो कई घरों में चुपचाप घट रहा है – बिना शोर, बिना स्वीकार्यता के।

नाटक डिमेंशिया जैसे जटिल मानसिक रोग को सिर्फ बीमारी की तरह नहीं, एक पारिवारिक और आत्मिक त्रासदी के रूप में पेश करता है। जब एक पिता अपनी ही बेटी को कभी नर्स और कभी अजनबी समझने लगे, तो रिश्तों की ज़मीन कितनी बुरी तरह कांपती है – यह अनुभव इस प्रस्तुति ने भीतर तक उतार दिया।

सूर्य मोहन कुलश्रेष्ठ का निर्देशन चुपचाप संवेदनाओं को परोसता है। कोई बड़ा मोड़ नहीं, फिर भी हर क्षण भीतर एक विस्फोट छुपाए है। मंच की रोशनी, ठहराव, और संवादों के बीच का मौन उस भ्रम और पीड़ा को इतनी खूबसूरती से रेखांकित करता है कि दर्शक खुद भी कभी बेटी बन जाता है, कभी डैडी।

यह नाटक खत्म होने के बाद भी खत्म नहीं होता। कुछ लोग अपनी सीट पर देर तक जमे रहे, कुछ की आंखें भरी हुई थीं, और कुछ शायद अपने भविष्य से पहली बार इस तरह रूबरू हो रहे थे। क्या हम भी कभी ऐसे ही किसी को भूल जाएंगे? या कोई हमें भूल जाएगा?

‘डैडी’ एक नाटक नहीं, एक दर्पण है। इसमें हम अपने बुढ़ापे की परछाईं, अपने माता-पिता के वर्तमान और समाज की खामोश पीड़ा को एक साथ देख सकते हैं। ये मंचन हर उस इंसान के लिए एक अनुभव है, जिसने कभी किसी को धीरे-धीरे खोते देखा है – चाहे वह यादों में हो या ज़िंदगी में।”





Review
by Tariq Khan, a filmmaker and Literature

"Last evening, I had the privilege of watching a deeply moving play titled "Daddy", centered around the painful yet important subject of Dementia.

Veteran actor Dr. Anil Rastogi delivered an exceptional performance in the lead role, layered, sensitive, and hauntingly real. Every scene, every moment, echoed with memories of my own mother's final year... her gradual withdrawal, her confusion, and those surreal hallucinations that the play portrayed with such truth and tenderness.

A big salute to Baba, the director, for crafting this powerful piece of theatre that doesn't shy away from reality but instead makes us confront it with empathy. I'm truly grateful to both Baba and Dr.

Rastogi for inviting me to witness it.

This is the kind of meaningful, issue-based theatre we desperately need today, to create awareness, to build compassion, and to remind us of the quiet battles so many families fight behind closed doors.

Please support such productions. They don't just entertain, they enlighten."





Review

by Dr Rakesh Kumar , an eminent cardiologist

"Saw the press show of Darpan's latest production "DADDY". A fantastic play translated & directed by eminent theater personality of Lucknow - SURYA MOHAN KULSHRESHTHA. Being a person from medical profession, I can vouch that this is a wonderful production depicting the life of a person having Dementia. Anyone who is interested in good theatre must see this. Performance of all the actors was par excellence including Dr. Anil Rastogi who was too good."





Review

by Lata Sadhwani, a Regular Theatre Lover

"This was, without a doubt, one of best performances of Dr Anil Rastogi I 've seen till date! Seeing the character chipping away, bit by bit through each scene touched a nerve not just for me but every person sitting in the audience! Those who have dealt with Dementia first hand could relate to Anant fading away and the struggles of Anu!

I could not bear to see him on that hospital bed, it was heartbreaking...

Kudos to the entire team of play Daddy, beautiful adaptation, beautiful acting, loved the idea of stripping away a part of the set with every scene and how it portrayed Anant's fading memories.."





Review
by a Spectator

“ दर्पण नाट्य संस्था के संस्थापक प्रोफेसर सत्यमूर्ति जी की जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में यूपी संगीत नाटक एकेडमी में नाटक डैडी का 2 दिवसीय मंचन हुआ। मुख्य भूमिका देश भर में अभिनय के क्षेत्र में लखनऊ का नाम रोशन करने वाले डॉ अनिल रस्तोगी जी का कभी छोटे बच्चे से, कभी निष्ठुर पिता, कभी डरा हुआ वृद्ध, बहुत स्वाभाविक, सहज बिना प्रयास के किया गया अभिनय सबके दिल को छू गया। लगता था ये रोल उन्हीं के लिए लिखा गया है। कभी हंसाता, कभी रुलाता नाटक डैडी की भविष्य में प्रस्तुति हो तो अवश्य देखें। कुछ याद न रहने की बीमारी जीवन और संबंधों पर बहुत असर डालती है। ”





Review

by a Sudha Sharma, former Cultural Reporter with a newspaper

“ आजकल पिता के संघर्ष की बाते साहित्य से लेकर सोशल मीडिया में भरपूर दिखाई पड़ती है । एकपिता की कहानी लेकर दर्पण नाट्य संस्था इस बार मंच पर आई है डैडी नामक इस नाटक में एक पिता और पुत्री के जटिल संबंधों की कहानी है । पिता डिमेन्शिया रोग से पीड़ित है और अकेली बेटी उसकी देखभाल करना चाहती है जिसमें कभी पिता का स्वाभिमान आड़े आता है कभी बढ़ती बीमारी के कारण होते मतिभ्रम जो पिता बेटी से देखभाल के लिए नर्स रखने से इंकार करता है वो ही उसके बंगलोर जाने की बात सुन उसके निर्णय को बदलने के लिए वहाँ की परेशानियाँ बताने लगता है । आज के समय ऐसे बहुत से घर हैं जिनमें बच्चे अपने माता या पिता के अकेले रह जाने पर ऐसी समस्या से जूझ रहे हैं । कहानी भले ही विदेशी परिवेश से उठाई गयी थी किन्तु अनुवादक और निर्देशक ने उसे अपने परिवेश में बखूबी ढाल लिया था । नाटक की सबसे बड़ी खूबी डॉ अनिल रस्तोगी का अभिनय था जो हर दृश्य में परिवर्तित होकर नए रूप में सामने आता था विशेष तौर पर कथक नृत्य वाले प्रसंग में या फिर बेटी के पति के साथ वाले दृश्य में बार बार होनेवाले मतिभ्रम के कारण पात्रों का अभिनय काफी जटिल रहा पहले दृश्य में जब बिरियानी बनाने की बात होती है उसके बाद अनेक दूसरे प्रसंग मंच पर आते हैं जो दर्शकों को कनफ्यूज कर रहे थे यही तो डिमेन्शिया की समस्या होती है जिसमें रोगी घटनाओं का तारतम्य नहीं जोड़ पाता है ।

बेटी की कशमकश भी उसके अभिनय में पूरी तौर पर दिखाई पड़ती है एक तरफ वो अपने पिता के लिए चिंतित है दूसरी ओर उसकी अपनी जिंदगी की आवश्यकताएँ हैं जब वो अपने पति से बाहर कहीं घूमने जाने के लिए उत्सुकता दिखाती उस समय उसका उल्लास देखते बनता है और उसके पति अतुल से जब पिता कहता है की तुम दोनों कहीं बाहर घूमने क्यों नहीं जाते तब पति के क्षोभ का प्रदर्शन भी बेहतर रहा था । नर्स महक की भूमिका भी दर्शकों की स्मृति में रहने लायक है ।

डैडी नाटक अपनी संपूर्णता में दर्शनीय रहा सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ अनुभवी नाट्य निर्देशक है उनसे ऐसी ही प्रस्तुति ही अपेक्षा रखी जाती है जिसमें वे सफल रहे मंच संचालन के लिए सुमित श्रीवास्तव प्रकाश परिकल्पना के लिये गोविंद यादव सहायक निर्देशक शिवांगी निगम के साथ शलिनी विजय का अभिनय सराहनीय रहा । कथ्य, परिकल्पना और मंच संचालन और प्रकाश संचालन को साकार करने का श्रेय डॉ अनिल रस्तोगी को जाता है लगभग चालीस वर्षों से डॉ साहब के अभिनय की मैं साक्षी रही हूँ मैं पंछी आ पंछी जा से लेकर पच्चीसों नाटकों में उनको अभिनय करते देखती रही हूँ डॉ राज बिसरिया के निर्देशन में शोभना जगदीश के साथ किया नाटक हो या हाल में ही किया गया नाटक आखिरी वसंत सभी बेहतरीन रहे हैं लेकिन डैडी में उनका अभिनय उनके अभिनय यात्रा का तिलक है जिसके लिये उनकी सराहना की जानी आवश्यक है जिसमें उनके साझीदार सूर्यमोहन भी होंगे जिन्होंने डॉ साहब को इस पात्र के चयनित किया । ”





Review

by a Sunita Aron, Ex Editor Hindustan Times Lucknow/Mumbai

" The play was brilliant in every way, very powerful, very emotional. Anil Rastogi ji made us laugh and cry along with him, the shades of emotions that he exuded were par brilliance. In fact every time he is on stage he wears, lives the character he is playing, like Daddy, suffering from dementia here. Other actors also performed their best. Direction by Surya Mohan Kulshreshtha ji was flawless. Thank you for keeping the power of theatre alive."





Review
by Sudhanshu Mani Creator of Vande Bharat Train

*"Really memorable performance by Dr Anil Rastogi sir...and all
other actors were good too."*





Review

by Jayant Krishna , Former TCS Head , North zone

“What a powerful performance by the seasoned theatre and film actor Dr Anil Rastogi in Dapan’s play Daddy, inspired by Florian Zeller's Le Père, so competently written and directed by Mr Surya Mohan Kulshreshtha. One rarely comes across such a brilliant theatre role as the one so ably played by Dr Rastogi while portraying the trials and tribulations of an old patient suffering from acute dementia!”





Review
by General AK Puri,
Member (Administrative) Armed Forces Tribunal, Lucknow

"The play leaves the audience with an ache—both for the father who is slipping away and for the daughter who must watch it happen.

Daddy produced by Darpan Theatre group and directed by Surya Mohan Kulshreshtha. Daddy (played by veteran actor Anil Rastogi) - a dementia patient and his daughter Anu (Shalini Vijay).

Could not at any stage take my father (daddy) away from my brain.

Daddy is not just theatre; it is an emotional immersion into what it means to forget, and what it means to remember through love."





Review

by Benu Kalsi , very senior theatre and film artist

“कल आपका नाटक देखने का मौका मिला। मुझे बहुत ही बढ़िया नाटक लगा सभी ने अपने पात्र बहुत अच्छी तरह निभाये। आपकी बात कुछ अलग थी पूरे स्टेज पर आप ही छाए रहे, आपने बहुत अच्छा काम किया है ऐसा लग ही नहीं रहा था कि वह कैरेक्टर आपका नहीं है। बिल्कुल सटीक है आपके लिए, मेरी तरफ से सूर्यमोहन जी को भी बहुत बधाई दीजिएगा। आप सबको बहुत-बहुत बधाई। भविष्य में आप इसी तरह नाटक करते रहें यही कामना है मेरी।”





Review
by Amit Verma , Journalist and theatre lover

“मंगलवार को संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह में दर्पण की ओर से प्रस्तुत नाटक “डैडी” ने दर्शकों को भावनाओं के गहरे सागर में डुबो दिया। राष्ट्रपति से संगीत नाटक अकादमी अवार्ड प्राप्त वरिष्ठ अभिनेता डा. अनिल रस्तोगी और रंग निर्देशक सूर्य मोहन कुलश्रेष्ठ की जुगलबंदी लंबे समय बाद लखनवी रंगमंच पर देखने को मिली।

फ्लोरियां जेलर के ले पेरे से प्रेरित और सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ एवं शिवांगी निगम द्वारा लिखित नाटक “डैडी” डिमेंशिया से पीड़ित बुजुर्ग पिता अनन्त और उनकी बेटी अन्नू के रिश्ते पर केंद्रित रहा। एक तरफ बेटी के सपने, जीवन और प्यार की चाह, तो दूसरी ओर अपने पिता की जिम्मेदारी—इस द्वंद्व ने दर्शकों के दिलों को छू लिया।”





Review
by Prof Nadeem Hasnain
Retd Professor and HOD Anthology Lucknow University .

*"Marvelous. Heart touching performance by Dr Anil Rastogi . My wife cried and my throat choked in some scenes.
Thanks for giving this opportunity."*



THANKYOU



‘आखिरी बसंत’ में दिखाया एकल परिवार का ताना-बाना



नई दिल्ली, प्रमुख संवाददाता।

भारत रंग महोत्सव (भारंगम) के तहत बुधवार को एलटीजी सभागार में मशहूर नाटक ‘आखिरी बसंत’ का मंचन किया। इसमें बुजुर्गों के अकेलेपन और एकल परिवार के सामाजिक ताने बाने को बहुत की खूबसूरती के साथ दिखाया गया।

इस नाटक में मशहूर कलाकार 79 वर्षीय डॉ अनिल रस्तोगी मुख्य भूमिका में थे। उनके अभिनय खूब सराहना मिली। डॉ. अनिल रस्तोगी बताते हैं कि रंगमंच मेरा पहला प्रेम है और इससे मुझे ताकत मिलती है। इस नाटक की कहानी से मैं खुद को

जुड़ा हुआ पाता हूँ। इस नाटक के कई शो में देश के विभिन्न हिस्सों में कर चुका हूँ। मैंने महसूस किया कि दर्शक भी इस नाटक से सीधा जुड़ाव महसूस कर रहे थे। डा. रस्तोगी को शोध कार्य के लिए राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी की फेलोशिप व कला के क्षेत्र में बहुत से पुरस्कार मिल चुके हैं। उन्हें यश भारती और उग्र संगीत नाटक अकादमी की रत्न सदस्यता और अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

बुजुर्ग दंपति की है कहानी: यह कहानी एक बुजुर्ग दंपति सुधीर और गीता की कहानी है। इसमें सुधीर की भूमिका डॉ अनिल रस्तोगी और गीता की भूमिका चित्रा मोहन ने निभाई। जिन्होंने अपने बेटे को उच्च से उच्च शिक्षा दी और उम्मीद करते हैं कि एक दिन वह बुढ़ापे में सहारा बनेगा। लेकिन बेटा रणदीप विदेश में



नाटक मंचन के दौरान डॉ. अनिल रस्तोगी और चित्रा मोहन। • हिन्दुस्तान

बस गया और वहां उसने वंदना के साथ शादी कर ली है। वह भारत वापस आने को तैयार नहीं है, क्योंकि उसके अपने पिता के साथ गंभीर मतभेद हैं।

रहस्य और रोमांच पैदा किया: सुधीर अपनी सारी संपत्ति दे देना चाहते हैं और अपने बेटे के साथ अपने मतभेदों को भुलाने के लिए तैयार है। सुधीर किसी तरह रणदीप और वंदना

को भारत वापस लाने का प्रबंधन करता है, लेकिन कहानी में मोड़ तब आता है जब जेल से भागा राष्ट्र उनके घर में प्रवेश करता है और सब कुछ गड़बड़ कर देता है और अराजकता के बीच, यह रहस्य और रोमांच पैदा होता है, जो अन्त में सामने आता है। लखनऊ के दर्पण समूह द्वारा प्रस्तुत इस नाटक को सुभदीप राहा ने लिखा और निर्देशित किया है।

खबर पढ़कर नाटक तैयार किया: सुभदीप

नाटक के निर्देशक सुभदीप राहा ने बताया कि जापान में एक ओल्डएज होम की मैंने खबर पढ़ी थी उसके बाद इस नाटक की तैयारी की। अब यह कहानी केवल जापान की नहीं बल्कि दुनियाभर में देखने को मिल जाती है। बुजुर्ग माता पिता अकेले पड़ गए हैं। कहानी में दंपति का बेटा विदेश में बस गया और वापस नहीं आना चाहता। पिता सारी संपत्ति बेटे को देना चाहता है। राहा बताते हैं कि आखिरी बसंत उन सभी अकेले लोगों की मनोदशा, करुणा, उम्मीदों और कामनाओं का चित्रण है, जिनके जीवन में बिखरे रश्ते हैं। सुभदीप एक अभिनेता, निर्देशक, थिएटर गुरु होने के अलावा नाटककार भी हैं और उन्होंने पांच नाटक लिखे हैं।

ઉડાન

ચોમસીના મુખ્ય ભાસના સંદર
ભૂમિકા ભજવનાર અને
"આનંદમય" સિરિયલમાં
ભાભિયાનું સંદર પાત્ર ભજવનાર
અનિલ રસ્તોગી હમણાં જ
અમદાવાદના આજણે આકાશવાણી
અમદાવાદ આયોજિત એક
કાર્યક્રમમાં ભાગ લેવા આવ્યા હતા.
પહેલી જ વાર કદાચ લોકનૃત્યનો
પ્રકાર "નોટંકી" અમદાવાદના
પ્રેક્ષકોએ માણ્યો હશે. લખનોના
સેન્ટ્રલ ડ્રગ રિસર્ચ ઇન્સ્ટીટ્યૂટમાં
વૈજ્ઞાનિક તરીકે કામ કરતા આ
કલાકાર છેલ્લા ૨૫ વર્સથી રંગમંચ
સાથ જોડાયેલા છે.

મે કહ્યું: "એક તરફ વિજ્ઞાન
અને બીજા બાજુ થિએટર કેવી રીતે
ચાલે છે?"

એમણે હસતાં કહ્યું,
"સાથનિસ્ત તરીકે કામ કરતો થોડો
મોનોટોનસ લાઈફ થઈ જાય છે.
એ ઘરેડેને હોડવામાં થિએટર મજા
આપે છે. વૈજ્ઞાનિક તો હું પછી
બન્યો, પણ નાની ઉંમરથી
થિએટરનો ચસ્કો લાગ્યો. થોડો
પ્રશંસા મળી, નામના મળી અને આ
નયો ચંડતો જ ગયો અને પોતાના
શોખ ખાતર તો માનવી હિમ્મત
સમય કાઢી જ લેતો હોય છે."

મે કહ્યું, એક બાજુ થિએટર,
બીજા બાજુ સિરિયલ..." મારી
માત પૂરી થાય એ પહેલાં જ એમણે
કહ્યું, "થિએટરથી ખૂબ સંતોષ મળે
કે કારણ કે એમાં જીવંત ઇમોશનલ
પ્રેક્ષકોની સામે
લાયો-આપ આવી જનું હોય છે,
ધારે સિરિયલમાં ઘણી વખત પરાણે
મોશનલ સીન ઊભા કરવા પડે છે.
માં એટલી જીવંતતા નથી આવતી
ને જે આવી પણ જાય તો સુંદર
મ કર્પાનો ઘણી વખત સંતોષ પણ
દી હોતો. આમ જોવા જઈએ તો
મ-દામ તો સિરિયલથી વધારે મળે
પણ હું આત્મસંતોષ માટે
થિએટર સાથે જોડાયો છું."

આજથી ૨૫ વર્સ પહેલાં
નુપુરમાં "દર્પણ" અકાદમીની
આત સ્વ. પ્રો. સત્યમૂર્તિએ કરેલી
મે આજે તો આખા દેશનાં
દાં-જુદાં શહેરોમાં એની બ્રાંચો
તેમાં જુદાં-જુદાં નાટકો થાય
એટલું જ નહીં, સમસામયિક
ગ્રોને લાગતી રચનાઓ, લોક

આદમી, વાંચવા સવાર, વ્યકિતજન
દંદા, અબુ હસન, જુદાં જેવા
પ્રખ્યાત નાટકોનું મંચન અહીં થઈ
ચૂક્યું છે.

લખનોમાં ૧૯૭૧થી સક્રિય
આ સંસ્થાએ "ખામોશ અદાલત
જારી છે"નું મંચન કરી શરૂઆત કરી
તે આજે સક્રિય છે. ૭૫ નાટકોનું
૭૫ વખત પ્રદર્શન કર્યું છે.
ઉડીયા, તેલુગુ, ગુજરાતી, મરાઠી
આમ જુદી જુદી ભાષાઓનાં
નાટકોનું પણ મંચન કર્યું છે. એમણે

થપલિયાલ, વિનોદ રાસ્તોગી, રોકેશ
વર્મા અને મને ઉત્તર પ્રદેશ સંજીત
નાટક અકાદમીનો પુરસ્કાર પ્રાપ્ત
વયો છે.

પોતે દૂરદર્શનના સારા કલાકાર
હોવા છતાં દુઃખની લાગણી વ્યક્ત
કરતા એમણે કહ્યું, "રિઝનલ
ક્લચરલ થિએટર ઉવલપ થઈ શક્યું
નથી. ગામડાના કલાકારોને આજળ
આવવાની કોઈ તક નથી અને
રાષ્ટ્રીય પ્રસારણ પાસે એટલે કે મંડી
હાઉસ પાસે સમય નથી. રાષ્ટ્રીય

ચેનેલ સાડા આઠે ચાલુ થાય તો
રિઝનલ ચેનલમાં તો બંધુ સમાપ્ત
થઈ જાય છે વળી પ્રાદેશિક ચેનલમાં
પણ સમય એવો ખરાબ હોય છે કે
સારી કૃતિઓ લોકો જોઈ થકતા
નથી. દા. તરીકે હમણાં જ મારી
એક સુંદર ટેલિ ફિલ્મ હતી જે
લખનો દૂરદર્શન પરથી પ્રસારિત
થઈ, પણ સમય-સાંજના સાડા
પાંચ વાગ્યે.... મોટા ભાગના લોકો
ઓફિસમાં હોય કે ઓફિસથી
આવતા હોય... એટલે કે પ્રેક્ષકો



કાર્યક્રમો પર અસર એ રીતે પડશે કે
એમના બીજા મનોરંજનના જે
કાર્યક્રમો છે એ જેવી તેવી
કવોલીટીના નહીં ચાલે....
મનોરંજન પ્રોગ્રામો જો જી ટી.વી.
પર સારા આવે અને દૂરદર્શન પર ન
આવતા હોય તો લોકો સ્વીચ ચેન્જ
કરશે નહીંતર દૂરદર્શનનું મહત્વ
ઓછું થવાનું નથી.

મે કહ્યું, "રેડિયો વિષે તમે શું
માનો છો?"

એમણે કહ્યું, "હજુ પણ
ગામડાંઓમાં રેડિયો એટલો જ
લોકપ્રિય છે."

મે કહ્યું, "આવા કાર્યક્રમોથી
કંઈ ફાયદો થાય છે?"

"કેમ નહિ," એમણે કહ્યું,
"આવા સારા કાર્યક્રમો દ્વારા એકથી
બીજા ખાંતના લોકોને સાંકળવાનું
કામ જો થતું રહે તો ખૂબ સારું રહે
છે, કારણ કે કલાકારો પણ સીધા
એક બીજાના ઇન્ટોડક્શનમાં આવે
છે. મેં કહ્યું, "હંગામા" "ચના
ચાર વરમ" અને "ચૂં-ચૂં" કા
મુરબ્બા"ની તમે ખૂબ સુંદર પ્રસ્તુતિ
કરી છે. તમને અમદાવાદના પ્રેક્ષકો
કેવા લાગ્યા?"

એમણે કહ્યું, "ખૂબ સુંદર,
શિટ પ્રેક્ષકો છે, પણ અમને લાગે છે
કે નોટંકીની અસલ ભાષાના લીધે
કદાચ પ્રેક્ષકોને થોડો મુશ્કેલી પડી
હશે, પણ.... મજા તો એમણે મળી
જ છે. જેમ ભાષા નહીં
સરજવાથી ભવાઈમાં અમને થોડો
અચવડ પડી, પણ મજા તો આવી
જ છે." એમણે કહ્યું, તમે મને
"આઝાદી કી શિખાઈ" સિરિયલમાં
જોશો. તે રાષ્ટ્રીય પ્રસારણમાં
અસનાર છે. આઝાદીની લડતમાં
ભાગ ભજવનાર મહિલા
વીરંગનાઓ પર આધારિત આ
સિરિયલ છે. એમાં ખેતરમ હજાર
મહત્વના એપીસોડમાં મેં મહત્વનું
ભૂમિકા ભજવી છે."

આકાશવાણી અમદાવાદ વાંડર



નોટંકીમાં નેતાની ભૂમિકામાં અનિલ રસ્તોગી અન્ય કલાકારો સાથે

ખૂબ ઓછા હોય. હવે એક સુંદર
કાર્યક્રમ આમ અસક્ષ્ય થાય ને.

મે કહ્યું, "જી ટી.વી. જેવી
અન્ય ચેનલો આવી છે શું એ
દૂરદર્શનને અસર કરશે?"

એમણે કહ્યું, "આ બધી
ચેનલો એન્ટરટેનમેન્ટ માટે જ છે,
જ્યારે દૂરદર્શન માત્ર મનોરંજન
માટે નથી. એના ઘણાં કાર્યક્રમો છે,
દા. તરીકે ફોકસ અને બીજા ઘણાં
કાર્યક્રમો જે ભારતીય સંસ્કૃતિ સાથે
સંકળાયેલા છે. માટે દૂરદર્શનના

छह साल बाद साथ आए रंगमंच के दो दिग्गज

जैसे, लखनऊ : रंगमंच संसार के दो दिग्गज छह साल बाद नाटक 'विभास (रसियन प्ले द लास्ट वर्ल्ड का हिंदी रूपांतरण)' में साथ काम कर रहे हैं। उत्तर भारत में आधुनिक रंगमंच के जनक वरिष्ठ रंगकर्मी पद्मश्री राज बिसारिया और वरिष्ठ रंगकर्मी डॉ. अनिल रस्तोगी ने फरवरी, 2013 में साथ में नाटक 'बेयर फुट इन एथेंस' किया था। उसके बाद अनिल रस्तोगी की फिल्मों और सीरियल आदि में व्यस्तता रही। वहीं, 2016 में राज बिसारिया ने नाटक 'राज' किया था। 31 मई को संगीत नाटक अकादमी में राज बिसारिया के निर्देशन में होने वाले इस रसियन प्ले का हिंदी रूपांतरण इत्य के अध्यक्ष राकेश ने किया है। नाटक की कहानी दो पात्रों पर केंद्रित है, जिसमें अनिल रस्तोगी के साथ ही दूरदर्शन में चार दशक तक समाचार वाचिका की भूमिका में रही शोभना जगदीश हैं। शोभना को 30 साल बाद रंगमंच संसार में वापसी हो रही है। राणा प्रताप मार्ग स्थित राज बिसारिया स्टूडियो में नाटक की रीहर्सल चल रही है। नाटक की पटकथा मानवीय संबंधों के इर्द-गिर्द घूमती है। यह सहज संबंधों का उत्सव है। जिसमें दो उम्रदराज स्त्री और पुरुष के एकाकीपन और रिश्तों की गहराई को बखूबी पिराया गया है। युद्ध के आम जीवन में पड़ने वाले प्रभाव का मार्मिक चित्रण है। युद्ध टल गए पर एक तरह का युद्ध हर वक्त जारी रहता है। इसी युद्ध की बीच हमें आपसी जीवन और रिश्तों की गरिमा तलाशनी होती है।

अभिनय संसार

- 2013 में नाटक 'बेयरफुट इन एथेंस' में राज बिसारिया और डॉ. अनिल रस्तोगी ने साथ किया था काम

- तकनीकी रंगशाला, एसएनए में रिवेटर आर्ट्स कंशाम की प्रस्तुति 'विभास' का मंचन 31 को



राज बिसारिया स्टूडियो में नाटक विभास का रीहर्सल करते वरिष्ठ रंगकर्मी डॉ. अनिल रस्तोगी, शोभना जगदीश और निर्देशन करते राज बिसारिया

शोभना जगदीश

1972 में 16 वर्ष की उम्र में 'हयवदन' नाटक की पद्मिनी के किस्तर में मंच पर प्रवेश किया। वर्षण नाट्य संस्था से जुड़ने के बाद अभिनय का सिलसिला चलता रहा। एव इन्द्रजीत, पांचवां सवार, बुढ़ा, सिंहासन खाली है, खामोश अदातत जारी है, आषाढ़ का एक दिन, हरिश्चन्द्र की लड़ाई, जूलियस सीज़र नाटकों में अभिनय किया। नाटकों के अतिरिक्त टेलीफिल्मस में भी काम किया।

डॉ. अनिल रस्तोगी

नेशनल एकेडमी ऑफ साइसेस (1999) की फेलोशिप के साथ ही संगीत नाटक अकादमी के अकादमी रत्न (2007) और याश भारती (2016) से भी अलंकृत है। केंद्रीय ड्रग रिसर्च इंस्टीट्यूट, लखनऊ के पूर्व वैज्ञानिक होने के साथ ही 600 से ज्यादा रंगमंच प्रदर्शन कर चुके हैं। 30 वर्षों में करीब 28 फिल्मों में काम किया।

‘दर्पण’ का वसंत

साहित्य की हर विधा का अपना चरित्र और अनुशासन है। कोई रचना कहानी होने की मांग करती है, कोई उपन्यास, कोई कविता तो कोई रेखाचित्र। नाटक को लेकर मुझे जो बात सबसे आकर्षित करती है वह यह कि उसमें नाटकीयता से अधिक चरित्रों की द्रष्टात्मकता कैसी है, अपने भीतर विचारों की उधेड़बुन, चरित्र की परतें, उनके असमंजस और उनके कई चेहरे। वास्तव में दूसरी विधाओं में मन की बात को, अन्तरविरोधों को व्यक्त कर पाने का पूरा स्थान और अवसर होता है

लेकिन किसी नाट्य प्रस्तुति में हम दृश्य, संवाद, गतिविधि या चुप्पी से कुछ व्यक्त कर रहे होते हैं तो कुशलता इसमें होती है कि हम विचार के इन भिन्न स्तरों को एक साथ कैसे व्यक्त करें और अगर व्यक्त न भी करें तो वह हमारे अभिनय में किस प्रकार शामिल बना रहे जिससे कहानी के मोड़ लेने या उसमें नाटकीय घटनाक्रम आने पर वह उस स्थिति में अपने चरित्र के साथ न्याय करता रह सके।

बहुत सारे निर्देशक इसके लिए कई प्रकार की कलायुक्तियों का इस्तेमाल करते हैं। कोई स्वागत के लिए किसी सूत्रधार, विदूषक जैसे चरित्रों का इस्तेमाल करता है, तो कोई कलाकारों को स्थिर कर संवादों को बुलवाता है।

पीढ़ियों के बीच टकराव, बेटे-बेटियों का विदेश बस जाना, वृद्धावस्था में मां-बाप का अकेलापन कई नाटकों के विषय रहे हैं। पिछले दिनों एक पोस्ट सोशल मीडिया पर खूब साझा की जा रही थी जिसमें बताया गया था कि मां के मरने पर छोटा बेटा विदेश से आता है। पिता बेटे को मां की इच्छा के बारे में बताते हैं कि बड़ा बेटा अंतिम संस्कार करे। बेटा कहता है कि हम दोनों में तय हुआ था कि बाप के मरने पर बड़ा बेटा और मां के मरने पर छोटा बेटा आएगा। यह सुनकर बाप खुद को गोली मार लेते हैं। कोरोना में स्वर्ण जयंती का उत्सव न मना सके दर्पण (लखनऊ) द्वारा इन

दिनों विभिन्न नगरों में मंचित किए जा रहे ‘अंतिम वसंत’ में एक वृद्ध दंपति के अकेलेपन की कथा तो है, लेकिन यह कथा अपने आखिरी प्रसंगों में नाटकीय रूप लेकर चौंकाती है। पिता से झगड़े के बाद बेटे के कनाडा में बस जाने और पिता के अवसाद में होने के बीच कथा कई मोड़ लेती है, जिसमें जेल से भागे अपराधी का उनके घर में प्रवेश लेना तो है ही, बेटा-बहू की कमी को पूर्ण करने का एक अनूठा तरीका भी शामिल है।

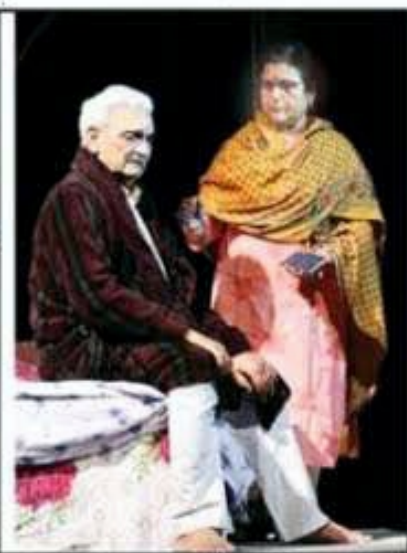
राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के छात्र रहे और भारतेन्दु नाट्य अकादमी

में व्याख्याता शुभदीप राहा लिखित-निर्देशित इस नाटक के सभी पात्र चाहे वह गीता के रूप में चित्रा मोहन हों, राधू के रूप में संजय देगलुरकर, रणदीप के रूप में विकास श्रीवास्तव हों या वंदना के रूप में अलका विवेक, अपने चरित्रों के साथ न्याय करते दिखते हैं। हालांकि पुलिस अधिकारी के रूप में वंश श्रीवास्तव थोड़े अतिरंजित हैं,

लेकिन मुझे नाटक में वृद्ध सुधीर की भूमिका करने वाले

अनिल रस्तोगी ने विशेष तौर पर प्रभावित किया तो इस कारण कि वे न सिर्फ एक वृद्ध पिता के भीतर चल रहे संघर्षों को कुशलता से संप्रेषित कर पाते हैं, बल्कि उन परिस्थितियों के बारे में पहले से जानते हुए भी उन्हें छुपाने का द्रष्टा भी उनके अभिनय का हिस्सा होता है, जो बाद में नाटकीय रूप में सामने आती हैं। पेशे से वैज्ञानिक होते हुए भी अनिल रस्तोगी लंबे समय से अभिनय से जुड़े हैं। लखनऊ के अनुभवी कलाकार हैं।

कालिदास सम्मान मिलने के अवसर और भारत भवन की 40वीं वर्षगांठ पर इस नाटक की प्रस्तुति भारत भवन में हुई थी। लखनऊ में इसकी चार और गोरखपुर में एक प्रस्तुतियों के बाद 15 सितम्बर को इसकी प्रस्तुति वाराणसी के नागरी नाटक मंडली में थी।



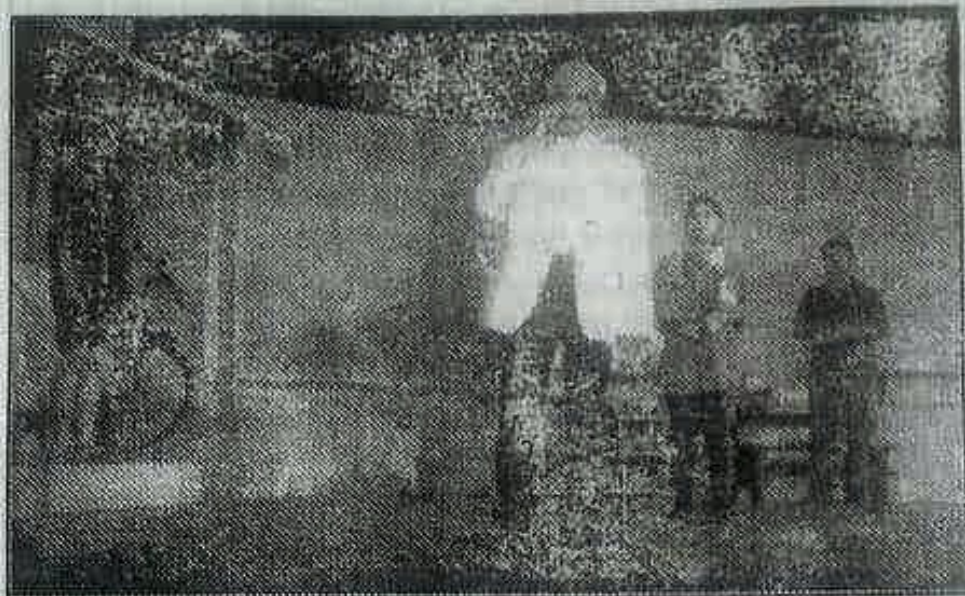
बरसों बाद दर्पण की नाट्य प्रस्तुति 'तुम' में मंच पर उतरे दिग्गज रंगकर्मी डॉ अनिल रस्तोगी

आलोक कुमार गुप्ता

लखनऊ। प्रसिद्ध नाट्य संस्था दर्पण, लखनऊ और संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली की प्रस्तुति नाटक 'तुम' का मंचन शनिवार 19 अक्टूबर को गोमती नगर स्थित भारतेन्दु नाट्य अकादमी के थ्रस्ट प्रेक्षागृह में हुआ।

पिता-बेटी के आत्मीय संबंधों पर आधारित नाटक 'तुम' एक लड़की की तलाश के सफर के बारे में है। एक मुलाकात, जो उसकी जिंदगी को ही बदल डालती है। साथ के लोग, रोज के एहसास, एक नया आयाम ले लेते हैं और उसकी तलाश के मायने बदल जाते हैं। संबोधन 'तुम' आपसी रिश्तों की गहराई व आत्मीयता का प्रतीक है। मंचन में दिखाया गया कि बचपन में अपने पिता ब्रह्मानंद वशिष्ठ से अलग हुई पूजा, सालों बाद जब उनसे मिलती है तो पहले उन्हें अपना परिचय न देकर एक साक्षात्कार के बहाने परिचय आगे बढ़ाती है। कई घटनाक्रमों के बीच ब्रह्मानंद वशिष्ठ को पूजा की सच्चाई पता चलती है और फिर पिता-बेटी के बीच एक नए आत्मीय रिश्ते की शुरुआत होती है।

इस भावुक नाट्य प्रस्तुति ने प्रेक्षागृह में बैठे दर्शकों को भी खूब प्रभावित किया और नाट्य प्रस्तुति के समापन पर दर्शकों ने करतल ध्वनि से सभी कलाकारों का अभिनन्दन किया। नाट्य प्रस्तुति 'तुम' का लेखन, पटकल्पना एवं निर्देशन किया जाने माने नाटककार हेमैन्द्र कुमार भाटिया ने। मंच पर ब्रह्मानंद का दमदार किरदार निभाया डॉ अनिल रस्तोगी ने। पूजा के किरदार में भव्या द्विवेदी ने भी प्रभावित किया। इनके अतिरिक्त सोनाली की भूमिका में रुपालि चंद्रा, सैनी की भूमिका में अंकुर सक्सेना, अर्जुन की भूमिका में मेराज आलम और शालू की भूमिका में पावनी गुप्ता ने भी अपने अपने किरदार बखूबी निभाए।



नाट्य प्रस्तुति के पार्श्व में प्रस्तुतकर्ता - विद्यासागर गुप्ता एवं राधेश्याम सोनी, स्टेज मैनेजर - अभ्युदय तिवारी, प्रकाश - अरुण त्रिवेदी, संगीत - विवेक श्रीवास्तव, वेश भूषा - कुशा सेठ एवं रुपालि चंद्रा, मुख सज्जा - मनोज वर्मा, मंच निर्माण - मधु सूदन तथा मंच व्यवस्था - अक्षय कुमार, सौरभ शुक्ला एवं अर्पित कटियार की रही।

मॉडल टाइम्स के साथ विशेष बातचीत में डॉ अनिल रस्तोगी ने बताया कि करीब

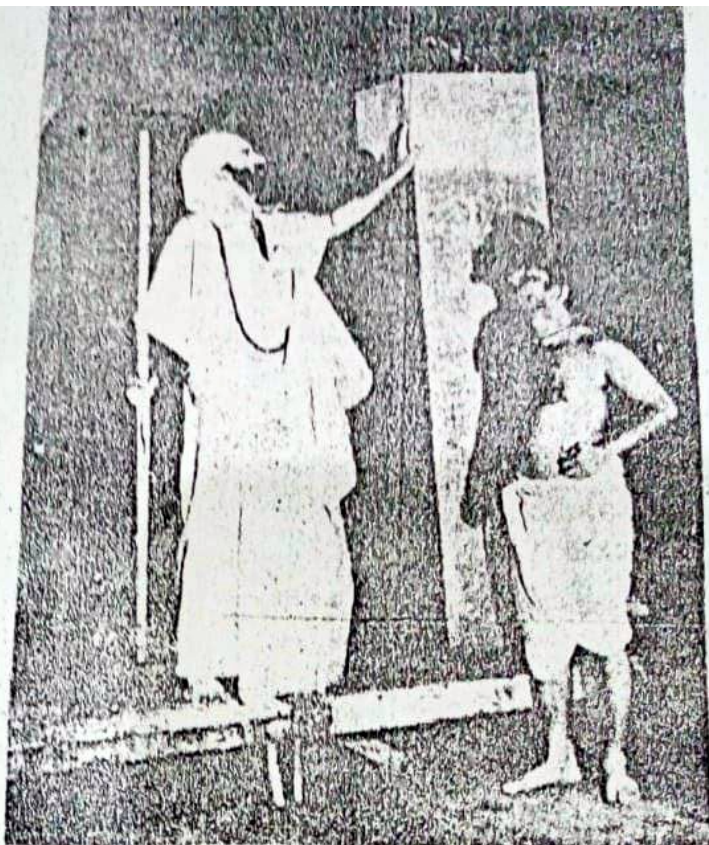
आठ वर्षों के बाद उन्होंने दर्पण की किसी नाट्य प्रस्तुति में अभिनय किया है। फिल्मों और टी वी में अभिनय के कारण काफी व्यस्तता रही। लंबे अंतराल के बाद दर्पण की नाट्य प्रस्तुति में अभिनय करना सुखद अनुभूति है। गौरतलब है कि डॉ अनिल रस्तोगी दर्पण के संस्थापक सदस्यों में शामिल हैं।

नाटक 'तुम' के दो शो का मंचन रविवार 20 अक्टूबर को भी थ्रस्ट प्रेक्षागृह में हुआ।

पुलिसकर्मियों ने दिखाई गुंडई, पैसे मांगने पर दुकानदार को पीटा

लखनऊ। यूपी पुलिस की कार्यशैली पर लगातार सवाल उठ रहे हैं। विवेक तिवारी हत्याकांड के बाद फिर से एक बार राजधानी लखनऊ की पुलिस सुर्खियों में है। इस बार फास्ट फूड की एक दुकान लगाने वाले युवक को आशियाना पुलिस से पैसे मांगना भारी पड़ गया। पैसे मांगने पर पुलिस कर्मियों ने युवक की जमकर पिटाई कर दी। राजधानी लखनऊ के आशियाना थाना क्षेत्र में फास्ट फूड की दुकान पर दो पुलिसकर्मियों ने पहले चाउमीन खाया फिर पैसे देने की बारी आई, तो युवक की जमकर पिटाई कर दी। इतना ही नहीं दोनों सिपाहियों ने फोन कर अपने और पुलिसकर्मियों को बुलाया। जिसके बाद करीब 10 से 12 पुलिसकर्मियों ने जमकर युवक को बेरहमी से पीट दिया। साथ ही बीच बीचों बीच करने पहुंचे युवक के मामा को भी पुलिस वालों ने जमकर पीटा। बता दें कि लखनऊ पुलिस की गुंडई का यह ऐसा पहला मामला नहीं है।

**धनतेरस, दीपावली व भइयादूज के पावन पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं**



Anil Rastogi and Virendra in a scene from 'Buri', staged on Monday.

'Buri': Staging a philosophy

Pioneer News Service

LUCKNOW, Aug. 30—Emphasising the philosophy that men believe what they want to believe and see what they want to see, Darpan's 'Buri' came as a pleasant surprise for the city's theatre-goers, at Ravindra-laya here, last evening.

The production, based on the much-acclaimed Akira Kurosawa's Japanese film 'Rashomon' spoke of superb technical designing and the credit for which goes to the director, Alopi Verma, a product of NSD and associated for a long period with the internationally famed theaterist Karanth. Alopi executed the script with an excellent ease insight and total grip of the playgraphy.

Tulika Gupta, emoting Kirani went through the span of the production with soulful realsticity ease and elegance. She has the making of a great actress.

Anil Saxena (Jr.) lived on the stage the vicious character of Meghmaru, a killer and a rapist. Anil's intense physical presence and a quality of refinement marked his performance.

Makin a total communication between the plot the character

and the audience Anil Rastogi, subtly playing the role of Bhikshu gave a memorable performance. Virendra Rastogi as the wood-cutter and Radhe-shyam Soni as the husband were also impressive. Special mention must be made of Neeraja Gupta and Prayag Verma, who, in their bit roles proved their skill and histrionic skill again and again—(A K).

Pioneer - 31.08.83

PARAJIT NAYAK

Writer- Dhananjay Bairagi Director- Prayag Verma

Character- Nayak, the Protagonist

Northern India Patrika- 02.11.1979

LUCKNOW: FRIDAY, NOVEMBER 2, 1979.

Page 10. NORTHERN INDIA PATRIKA. FRIDAY, NOVEMBER 2, 1979

DARPAN EXCEL WITH 'PARAJIT NAYAK'

By A Staff Reporter

LUCKNOW, Nov. 1.—Dhananjay Bairagi smoothly presented throughout with Bairagi's drama, "Parajit Nayak", a our any so-called 'jump' in narration. really novel play from the viewpoint. It was ably directed by Prayag Verma. of script, was unanimously acclaimed when staged last night at Bal Ravindra as its tenth Regular Theatre Series by Darpan.

There were many features in the drama which made it novel and made it worth providing a lesson to the local amateur artistes and drama units.

Firstly, it was a two-person story—a man and a woman. Secondly, these two characters remained the same in all respects except one when each of them had to portray different roles with nominal change in make-up.

Thirdly, these two characters had been amply provided with a number of contrasting situations in which each of them had to project the best of his and her histrionic talents. And fourthly, the whole story was a continuous unbroken theme which was

And, above all, the two characters who carried the drama successfully on their shoulders—the man (Dr. Anil Kestogi) and the woman (Sangeeta Sinha) had to excel the other in portraying contrasting situations, conflicting ideologies and very many different moods. That both of them immensely succeeded in performing their difficult roles speaks volumes for their acting abilities.

The story, as is the usual feature of a good drama, is very brief. It centres round the life of a leader defeated in the election. About the woman, it would suffice to say that she was a fallen one. Both were basically frustrated. But how they behaved with each other and helped in 'rehabilitating' themselves is the main theme. The drama deserves all praise for its perfection in presentation and portrayal.

'Fando and Lis' is a thespic treat

By A Staff Reporter

LUCKNOW, Oct. 11.—French writer Arable's famous drama 'Fando and Lis' was appropriately selected and successfully staged by 'Darpan', a premier drama unit of the city, in celebration of the first decade of its formation.

The selection of this tragedy was absolutely appropriate because Darpan has already already come to be famous of staging a variety of plays in these ten years, including the two popular Parsi theatre drama of Agha Hashra, Yahudi Ki Beti and Rustam Sohrab. It has this time selected two French books. While 'Fando and Lis' was a tragedy full of pathos and deep sentiments, its next, 'Janab-e-Aaala', to be staged at Ravindralaya on October 15 and 16, is a hilarious comedy of Mollieres.

'Fando and Lis', staged last night at Mini Ravindralaya and enjoyed by an appreciative audience for its dramatic and histrionic values, was a tragedy directly touching the heart. Lis, though young and beautiful, was a paralysed woman. Fando used to carry her on a perambulator wherever he went. Both loved each other immensely and neither could stand separation from the other even for a while. While looking after Lis with all his sincere attention, Fando was always trying to put courage into her to make her stand up and try to move. In these efforts Fando sometimes even hit her with a cane, thinking that she might some day use her legs out of sheer agony. He behaved like a sadist on occasions. But his real aim was to somehow make her stand on her legs. All his attempts failed and one day she breathed her last in agony. The drama ends with Fando visiting the graveyard to light candles and to put flowers on her grave.

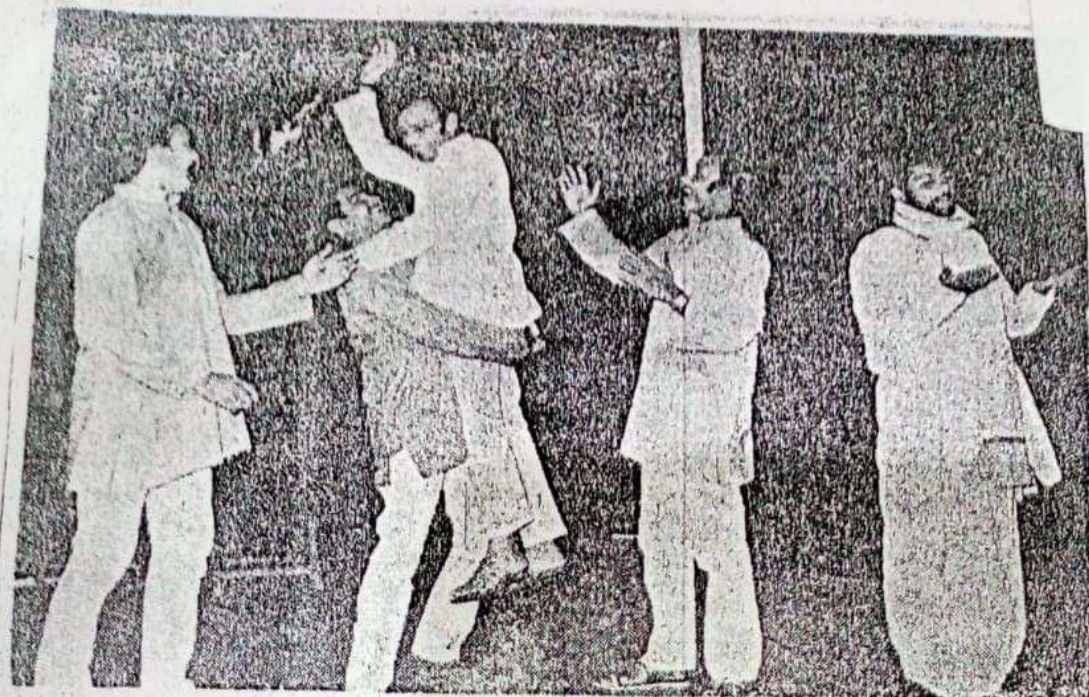
The theme is tragic, relieved to some extent by some comical touches provided by a group of three madcaps who crossed the path of Fando and Lis.

While Dr. Anil Rastogi with his towering personality and forceful delivery of dialogues deserves kudos for his excellent acting, Nasrin Shah, who also gave ample proof of her histrionic talent on her debut in Yahudi Ki Beti, also presented in marvellous manner the difficult role of the sick, long-suffering and paralysed Lis.

The French drama who translated into Hindi and also directed by Ajai

Kartik, a graduate of the National School of Drama. The light effects which formed an important part of the whole presentation, went to the credit of Hemendra Bhatia, already a famous and popular figure of the stage. The other three characters who provided comic relief were portrayed by Mohammad Aslam, Ebner Sadiq and Ragnish Vats.

T01 12.10.82



A lively scene in the unusual and thought-provoking play 'Evam Indrajit' at Ravindralaya. From left to right: Vimal (Dr. Anil Rastogi), Amal (Vijay Vastava), Indrajit (Rakesh Verma), Kamal (Prayag Din) and Lekhak (Bimal Bannerjee).

An Outstanding Play

'EVAM INDRAJIT' AT RAVINDRALAYA

By Our Drama Critic

LUCKNOW, Oct. 31—It is an unusual play with an unusually gifted cast, the production lifted much above the average by flawless direction. 'Evam Indrajit', originally written in Bengali by Academy Award winner Badal Sircar and adapted in Hindi by Dr. Pratibha Agarwal, was mounted at Ravindralaya last evening for a press preview by Darpan, which can justifiably take the credit of producing by far its best play to mark the Asian Theatre Day. The preview was in the nature of a curtain-raiser for the public show to be put up at the same Theatre on November 1 at 7 p.m.

Majority of men, it was Thoreau's thesis, lead a life of quiet despair. Badal Sircar has elaborated the theme in his play with a deftness and imagination that grip any audience, sophisticated or otherwise. In an age where conformism is the price of survival and one has to be chained to the treadmill to make this terrible business of living bearable, it takes a lot of courage to stand out of the crowd. There are, as the playwright pursues, the run of the mill characters, Amal, Bimal, Kamal. There are exceptions—"an Indrajit" (Evam Indrajit). The Indrajits, a rare species and an unquestioned life not worth living. The quest leads them on to a rough-hewn path of a lone pioneer.

It is a quest without end. There

is no such thing as the journey's end. The path goes on and on but, in their case, there can be no faltering, no giving up. The rest, and they are the overwhelming majority, the Amals, Bimals and Kamals, go through life generation after generation like dumb, driven cattle—the perfunctory schooling, the cribbing in college examinations, eye-teasing in their adolescence, job-hunting and bootlicking in a crazy, competitive world of business, marrying as a matter of course and growing old, not gracefully but disgracefully harried by pecuniary and other anxieties, and then passing on the same legacy to their children and children's children. Is this life? Not according to restless seekers like Indrajit.

This is the theme that has been narrated and presented in all its gripping and chilling realism by Darpan artistes under the able direction of B.V. Karanth, Phalke award winner. Produced by Professor Satyamurthy, and brought to life by Bimal Bannerji as Lekhak (writer), Rakesh Verma as Indrajit, Sobhana Agarwal as Manasi, Prayag Din as Amal, Dr. Anil Rastogi as Bimal, Vijay Vastava as Kamal and Neerja Gupta as Mausī (aunt), 'Evam Indrajit' to use a much misused and well-worn cliché, casts a spell on the audience for two solid hours.

Bimal Bannerji has distinguished himself many times as a superb character actor but, as Lekhak he has risen to new heights. It is no reflection on the other members to say that he dominates the show from the beginning to the end. But then that's how the playwright wrote the play, Rakesh Verma as Indrajit was letter perfect. He portrayed the character, not merely of an angry young man but also of a sensitive soul who fought off his frustration in despair with that indefinable something generally dubbed as idealism.

Sobhana Agarwal as Manasi has won fresh laurels in a tough yet delicate part. A rebel by temperament, Manasi didn't have the courage to go against tradition and was yet too proud to grab the role of a clinging vine to win her man.

Amal, Bimal and Kamal gave a convincing performance, their range of acting covering the whole gamut of human emotions from pathos to bathos.

Neerja as Mausī gave good support to the main characters in a side role.

The stage setting and the movements were as original as they were effective.

Lucknow theatregoers can really look forward to something worthwhile on the Asian Theatre Day—Wednesday, November 1—at 7 p.m., at Ravindralaya.

Darpan plays end with a comedy

By A Staff Reporter

LUCKNOW, Oct. 20—Ajai Kartik is perhaps the most promising of the products of the National School of Drama. At least this fact was well in evidence in the two dramas Darpan presented to celebrate its 10th anniversary. Both the dramas were poles apart in their nature. The first "Fando and Lis" was a heart-throbbing tragedy and the other, "Janab-e-Aala", the Hindi version of Moliere's comedy, "Bourgeois Gentleman", a rib-tickling comedy. And in the presentation of both these French plays Kartik's directional acumen spoke for itself.

An exhibition of the still photographs of all the dramas Darpan has staged in its ten-year span of existence, and of the entire property used in their presentations—including the oriental and gorgeous costumes of Agha Hashra's "Yahudi Ki Larki" and "Rustam and Sohrab" were also on display in the exhibition which was set up in the Ravindralaya gallery.

While "Fando and Lis" gave a start to anniversary celebrations, the other, "Janab-e-Aala" brought it to a grand finale.

The main reason for the big success that this drama was the characterisation of the many roles by the seasoned members of the Darpan unit. The title role of the story though would have fitted the seasoned and experienced comedian Vijai Vastava as tailor-made was well portrayed by Prayag Verma. Verma deserves a bouquet for his role as a moneyed buffoon. Anil Rastogi looked grand as debonair gentleman who made a fool of the moneyed buffoon by extracting money from him and befooling young and handsome girls into marrying him.

Most of the artistes were comparatively new but each of them bore the stamp of directional success of Ajai Kartik by displaying their talents to the full. The biggest surprise packet of talents was the young and budding Tulika Gupta in the role of Mary.

The other artistes who deserve special mention included Asha Sharma, Rekha Singh, Shipra Ghosh, Asha Saxena and Nasrin Shah.

BOURGEOIS GENTLEMAN

Writer- Moliere Director- Ajay Kartik

Character- Debonair Gentleman

PIONEER-21.10.1982

PIONEER 21.10.82.
BOURGEOIS GENTLE
MAN.

DARPAN FESTIVAL IN MUMBAI

Panchi Jaa Panchi Aa and Fando & Lis

Writer- Surendra Gulati

Arabaal

Director- Dina Nath

Ajay Kartik

Character- Pawan (Protagonist)

Fando (Protagonist)

The Current (Mumbai) - 24.09.1982

'दर्पण' की बंबई में दो प्रस्तुतियां

बंबई : लखनऊ की सर्वाधिक सक्रिय नाट्य संस्था 'दर्पण' ने विगत दिनों बम्बई के पृथ्वी थियेटर और पाटकर हॉल में 'पंछी जा, पंछी आ' (निदेशक दीनानाथ, ले. सुरेन्द्र गुलाटी) एवं फ्रेंच नाटककार अरावाल के 'फैंडो और लिस' (अनुवाद एवं निर्देश. अजय



छायाचित्र : सुरेन्द्र

कार्तिक) नाटक प्रस्तुत किये. 'पंछी जा, पंछी आ' में यदि प्रेक्षक उन्मुक्त ठहाके लगाता है तो 'फैंडो और लिस' में उसका सामना जीने की त्रासदी और एकाकीपन से होता है



छायाचित्र : के.के.

'पंछी जा, पंछी आ' के एक दृश्य में अनिल रस्तोगी और श्रीमती नीरजा गुप्त) ('फैंडो और लिस' के एक दृश्य में अनिल रस्तोगी और नसरीन शाह) प्रयाग वर्मा और विजय का अभिनय सार्थक रहा.

The Current • विवरण : रंग कीर्ति

Befitting tributes to Agha Kashmiri

By A Staff Reporter

LUCKNOW, Oct. 10— Two dramas of Agha Hashr Kashmiri, the greatest playwright of the last century were staged at Ravindralaya to mark the occasion of the playwright's centenary which is being celebrated all over the country.

The clubs which took the initiative in Lucknow, the city of culture, where his dramas had created history in popularity, were Nakshatra, who preferred to stage the Hindi classic, 'Sita Banvas', and 'Darpan', who staged a pure Urdu drama, 'Yahudi Ki Larki', to reflect the unparalleled control of dramatist over both Hindi and Urdu.

'Sita Banvas', a mythological subject, pertained to the period when Rama was compelled under public pressure to send his pious and beloved Sita to exile into a

jungle, while she was in the family way. The story also pin-pointed the historical events of the lives of her two sons, Lav and Kush, born in exile and brought up under the expert guidance of Balmiki. The story, however, is too well-known to be narrated here in detail. What actually needs reference is the perfect preparation for the production of the drama by Kumud Nagar. The settings of the jungle, Lord Rama's palace and the costumes provided to all the characters deserve special mention and the clever direction of veteran stage, radio and T.V. artistes, Vishwanath Misra.

The presentation of both the dramas was faithfully on the lines of the originals as written by Agha Hashra. The entire dialogues and the songs, which studded the play, were from the original script. The only—and slight—changes made in the dramas were to suit the limitations of the Ravindralaya stage and the lack of stage technique as compared to the Parsi theatres of the olden times.

It was true of the Urdu drama too. 'Darpan' also made grand preparations and these too made a marked hit.

In these days of Hindi, it was much more difficult for the artistes of the present age to speak the Persianised Urdu in which the dialogues and the songs were written by the playwright. It was, therefore, a big challenge for the members of the Darpan team to meet and they were correct in the

pronunciation of the Urdu and Persian words with which the dream was replete. her Roman spouse. The music and lighting arrangements were more than adequate for both plays.

Urmil Kumar Thapaliyal, director Urdu play, deserves all credit for this successful presentation.

In 'Sita Banvas', the entire cast charmed the audience with their well-rehearsed acting. However, there appeared quite a scope for improvement in the character of Rama. Binu Kalsi, a veteran figure of the city stage, excelled others with her expressions and histrionics.

In 'Yahudi Ki Larki', Anil Rastogi appeared to have carried the whole drama on his broad shoulders. He presented himself in the role of the Yahudi and reminded the veterans among the audience of the same role played in films by Sohrab Modi and M. Nawab Kashmiri. The others who immensely impressed was Kum Kum Dhar in the role of Rahil, the daughter of the Yahudi and Mohammad Aslam in the role of

TIMES OF INDIA

18.02.1984

An impressive presentation

LUCKNOW:

CONVEYING something relevant convincingly, in spite of being tied up with the grammar of the proscenium is no easy task. But Darpan did it again while staging "Shahjehan" at the Begum Hazrat Mahal Park pandal.

The dramatisation by Vilayat Jaffery ably transcreated the narrative form of the play. The inclusion of many characters to provide a visual identity to a happening in the history was imaginatively tackled.

However, overflowing emotionalism of Jaffrey's approach often had a stultifying effect. His compositions were well defined despite being rather limited in design.

Jaffery, it seems, has little insight into the form of the visual. His ability, as was apparent through the production, is limited only to the audio aspect of a production.

What was a treat to watch was the fusing of the graceful, stylistic approach of the performers with the representative clarity of the neo-theatre.

The light designing and operation was systematic and well coordinated. But there was also a

tendency towards an unnecessary dilution of effect. It is time that J.P. Singh took care to see that silhouettes don't create such shadows as would make it impossible for the audience to see the expressions.

The sets were creative, convincing and romantic for which Madhusudan Rao deserves to be complimented.

Urmil Thapliyal is no unknown name and neither is his control

Drama Review

upon the nuances of the "taal" and "laya". So the renderings expressing the aesthetics and philosophy of a particular period, with its fusion of lyricism and spirituality, its split-second precision, its ability to sting and caress at once, its melodic sensitivity, grace and artistry need not be described.

What, however, needs to be described is the incredible histrionic ability displayed by the actors in keeping the production from falling apart.

If there are names to be mentioned, the top billing will go to Dr Anil Rastogi, emoting convincingly the complex, deep-rooted character of Aurangzeb. This

actor has an amazing capacity to portray the emotion, and it is not for the first time that he has proved this. Theatregoers will find it difficult to forget his portrayal of Azra the Jew in "Yahudi" and in this production also, he has come up with another style of conveying the most complex of the emotions with ease and grace.

Prayag Verma playing the central of Shahjehan, has his voice as the greatest asset. He plays with it, hurting, luring and stunning the audience. Neerja Gupta as Jehanara fitted the role like a glove and so did Souvik.

—SHITAL MUKHERJI

THE TIMES OF INDIA, LUCKNOW, MONDAY, FEBRUARY 23, 1987

TIMES OF INDIA

23.02.1987

A VIEW FROM THE BRIDGE (Lahron Ki Wapsi)
Writer- Arthur Miller Director- Ajay Kartik
Character- Eddi, the Protagonist
Pioneer - 06.07.1982

6/7/82.
'Lahron Ki Wapsi': Anil steals limelight

Pioneer News Service

LUCKNOW, July 5—Darpan staged another successful play, 'Lahron Ki Wapsi' at Ravindralaya here on Saturday evening. The script of the play, a translation of Arther Miller's 'A view from the Bridge', provided ample scope for Darpan actors to show their talents.

The theme of the story centred around Eddie (Anil Rastogi), a longshoreman of Italian descent in New York, who has subconsciously fallen in love with Catherine (Bindu Rudainwal) the juvenile niece of his wife, Beatrice (Neerja Gupta). Complications develop as Catherine is swept off her feet by young Rodolpho (Ebnar Sadiq), an Italian illegal immigrant. The human conflict between social norms of 'decency' and 'dormant carnal desires was portrayed brilliantly by Anil.

Bindu did her varied bits with distinction. Neerja acted well except that her shocked postures at times carried the projected anguish too far.

The theme boldly showed peeps of abnormal suppressed sex, as is usual in Arther Miller's stories. Ebnar acted the part of a likeable, though effeminate, adolescent well enough.

Ajay Kartik directed the drama ably. But the lawyer's sermon against the futility of violence at the death of Eddie went against the grain of the play. The 'Ahimsa' epilogue was wholly unnecessary.

Some dialogues were very telling. The sets were impressive. Supporting cast also largely showed promise. The wide spectrum of audience indicated the acceptability of Darpan productions in the Capital generally.

The Pioneer

Brilliant acting by 'Phanda' cast

By Our Drama Critic

LUCKNOW:
"DARPAN'S" "Phanda", based on Agatha Christie's all-time hit, "The Mouse-trap", staged at Ravindralaya on Monday, brought out some brilliant performances by almost the entire cast. But in spite of inspired acting, the production sagged from time to time.

The blame for this rests squarely on the shoulders of the director, Dinanath. Although he has made a name for himself in light comedies, his grasp of the script of suspense and mystery was lax. The speed which was needed in the production was lacking.

A comparatively tighter blocking could have created an atmosphere of suspense. The characters, who were most of the time spread out on the stage, failed to involve the audience in the conspiring tone of the script.

The use of Brechtian background was imaginative and added to the mood of the production.

Dr Anil Rastogi, in the character of Major Vikram Singh, acted as an anchor to the almost adrift production. His complete hold on the role allotted to him and his perfect timing and coordination brought out the subtlest of the character traits of a special branch officer in disguise.

Sushen Bhatnagar has proved his histrionic ability in the past and does it in this production too. He is an actor of depth and long range with an ability to react to even the smallest nuances of the dialogues.

Mrs Shanti Mathur, who made her debut, left a lasting impression. Mithilesh Chaturvedi, with his peculiar gait, fitted the character of Lakkhoo like a glove.

Mukesh Kapoor, as the schizophrenic killer in the guise of a police inspector, verily lived the character.

Peer Ghulam Singh, an expert in light designing and operation, was an asset to this production.

DARPAN FOUR DAY DRAMA FESTIVAL IN MUMBAI

Yehoodi Ki Ladki

Harischannar Ki Ladai

Yehoodi

Commissioner

JANSATTA, MUMBAI 16.11.1988

जनसत्ता; बुधवार १६ नवंबर १९८८

बंबई में दर्पण की दो बेहतरीन प्रस्तुतियां

पिछले हफ्ते टाटा थिएटर में लखनऊ के 'दर्पण' ग्रुप ने दो नाटक खेला, 'यहूदी की लड़की' और 'हरिश्चन्नर की लड़ाई'। 'यहूदी की लड़की' आगा हश्र कश्मीरी का लिखा प्रसिद्ध नाटक है। 'हरिश्चन्नर' की लड़ाई के लेखक हैं उर्मिल कुमार थपलियाल। दोनों नाटकों का निर्देशन थपलियाल ने ही किया है। 'यहूदी की लड़की' का मंचन बंबई में कई बार विभिन्न संस्थाओं ने किया है। यह रोम के राजकुमार भायकल और अजरा यहूदी की लड़की राहील की प्रेम-कहानी है। बाद में, दोनों के प्यार में धर्म की दीवारें आड़े आ जाती हैं। लेकिन अंत में सब कुछ ठीक-ठाक हो जाता है।

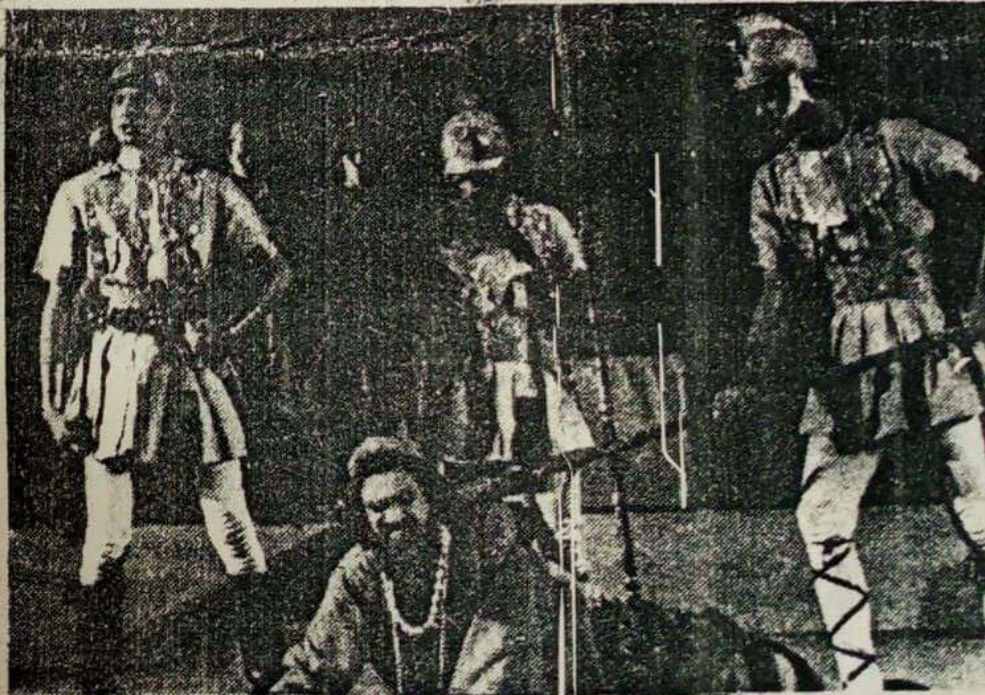
'यहूदी की लड़की' में अजरा यहूदी की भूमिका में डा. अनिल रस्तोगी ने कमाल का अभिनय किया। उनके संवाद खोलने का सफ़र 'जीर्द' और 'अग्नि' पल-गल बदलते हाव-भाव व संवादों में उतार-चढ़ाव देखते ही बनता था। 'यहूदी की लड़की' की लड़की, राहील की भूमिका में तुलिका गुप्ता का अभिनय भी सराहनीय था।

और संस्थाओं ने यह नाटक पूरी तरह पारसी थिएटर के अंदाज में खेला था। लेकिन 'दर्पण' की ओर से खेला गया यह नाटक पूरी तरह पारसी अंदाज में नहीं था। इसका कारण निर्देशक उर्मिलकुमार थपलियाल ने बताया कि रंगमंच की कोई पारसी शैली नहीं है।

हरअसल, यह पारसियों की तत्कालीन हिजारी चतुराई का नाम है, जिन्होंने शेरिपन और शेक्सपीयर के विस्टरियन मंच की पतनशील संस्कृति का बीज लेकर यहाँ थिएटर कंपनियाँ खोल लीं। मगर, फिल्मों के आते ही पारसी सेट फिल्मों में कूट पड़े और थिएटर बंद हो गए। श्री थपलियाल का कहना है कि अगर नाटकों की कोई पारसी शैली होती तो वह आज 'नौटंकी' शैली की तरह ज़िंदा होती। उनके निर्देशन में खेला गया दूसरा नाटक 'हरिश्चन्नर की लड़ाई' नौटंकी के अंदाज में खेला गया है, मगर उसकी 'थीम' बिल्कुल आधुनिक है। 'हरिश्चन्नर' की लड़ाई एक नौटंकी मास्टर की कहानी है। मास्टर गांव में नौटंकी करता है और उसमें सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र की भूमिका करता है। मगर एक रोज़ कुछ ऐसा होता है कि वह देवी के भ्रामने

प्रतिज्ञा कर लेता है कि नाटक वाले सत्यवादी पुरुष की भूमिका वह अपनी असल ज़िंदगी में भी उतारेगा। बस यहाँ से शुरू होती है उसके दुख की कहानी। दरअसल, नाटक ब्रह्मचार पर एक तीखा प्रहार है।

लेखक-निर्देशक थपलियाल ने नाटक में बड़ी चतुराई से नौटंकी और आधुनिक 'थीम' को मिलाया है। नाटक का संगीत नाटक की जान कहा जा सकता है, खासकर नक्कार। निर्देशक ने नाटक में नक्कार का बेहतरीन ढंग से इस्तेमाल किया है। अभिनय के मामले में हरीशचंद्र की भूमिका में अधिनी माखन और माली की भूमिका में उर्मिलकुमार थपलियाल ने औरों को पीछे छोड़ दिया। — चंद्र



'यहूदी की लड़की' में अजरा यहूदी की भूमिका में डा. अनिल रस्तोगी

THE HINDU



India's National Newspaper

Printed at Madras, Coimbatore, Bangalore, Hyderabad, Madurai and Gurgaon.
New Delhi Edition

Splendid portrayal

Sahitya Kala Parishad, in collaboration with the U.P. Department of Cultural Affairs sponsored four Hindi plays of Darpan from Gorakhpur, Lucknow, Kanpur and Delhi, last week at the SRC, auditorium. The second day was allotted to the Lucknow group's Surya Shikar (Sun Hunt) by Utpal Dutt. Although it was claimed not to be a historical play there was no denying the fact that the playwright had for his backdrop historical events of the post-Gupta period.

Two concurrent themes that caught the fancy of Utpal Dutt were—people's power asserting itself against an oppressive ruler and the nexus that should or should not be there between Science and Government. In his design the themes had a symbiotic relationship. The inspiration evidently was the life of Galileo on whom was heaped humiliation by the then dominant Church. Samudragupta was the monarch of all that he surveyed. He had in Hayagriva a valiant commander of the forces. Those were the times when superstition was the order of the day and irrationality ruled. The King, by his own admission, was Parameshwar. None dared defy him. None, excepting Kalhan, who propounded the theory of the roundness of the earth and the fact that the earth, the sun, the moon and the stars were mere matter and not gods. There was no God, and Knowledge was supreme.

Samudragupta humbled Kalhan by a ruse given only to those adhering to the Chanakya philosophy of government. Political expediency won against Reason and so long live the King. But this was to be a transient phenomenon, for, if not then, may be later, a thousand years from then, Truth would prevail. By way of injecting the romantic aspect, Utpal Dutt made Hayagriva fall in love with Indirani, the chief disciple of Kalhan. They were trampled to death by the royal elephant.

For good reasons, Dutt laid it thick with the ingredients of a cauldron of Revolution. An uprising was put down apparently but the King's men did not put out the embers. The torch was carried to some other place, though in a clandestine manner. The plot was etched beautifully and the denouement was a *coup de grace*.

Adeptly rendered: The most impressive part of the show was the rendering of the lines (in highly Sanskritised Hindi) by the entire cast. Shyama Jain's translation contained some words not commonly heard, but the artistes were adept at modulation and diction. Voice projection was very nearly flawless. Another fact that raised the quality of the production

was director Surya Mohan Kulshreshtha's juxtapositioning his men and women on the stage. Even when there was a crowd, one did not feel it because of well conceived groupings and compositions. Rajendra Nigam's Hayagriva

was splendid. But the last scene belonged to Dr. Anil Hastogi. In an effortless manner he mesmerised his courtiers bringing about a Machiavellian solution to an apparently intricate political problem. What if a few people were eliminated and the subjects were fooled? What mattered was Power vested in the Ruler. It was a superb portrayal of Samudragupta by Hastogi. I hope this will have yet another run in the capital in which case Hindi-lovers should not miss it.

Charm missing: Anarkali, dramatised and filmed several times, was the material offered by Darpan of Kanpur on the third day of the festival. The provocation for plumping for this

DRAMA

time-tested love story of a prince and a pauper was that it was in the Nautanki form. What one actually witnessed was a hybrid variety.

The directors of the play Pragat Shah and Rakesh Verma could not perhaps decide where to draw the line between the native style and the modern idiom. The result was a mixture of music (good in parts) and lines meant to be hyperbole. Somehow the innate charm or the folksiness of Nautanki was missing. It would have been totally soulless had not petite Bhavna Athavle sung and danced in the endearing way Anarkali was known to have done. Music contributed a good deal for the presentation. Mercifully they decided to cut short the sufferings of an imprisoned and hapless Anarkali. Emperor Akbar sentenced her to death - buried to be alive to be exact. So there was that last scene in which Anarkali bade goodbye singing.

Proud presentation: Youth Power had its say last week at the SRC basement when the Music Theatre workshop (MTW) presented Friedrich Durrenmatt's 'The Visit' in English. True to form, the workshop was agog with excitement, even noisy and the 20-odd teen-aged boys and girls worked overtime to interact, design and fabricate a prototype of which they could be proud.

'The Visit' took place in a decrepit small town of Germany of the post-war period. Claire, forced to leave the town in disgrace, hit the jackpot

'Kanyadaan' — Radical in content, approach

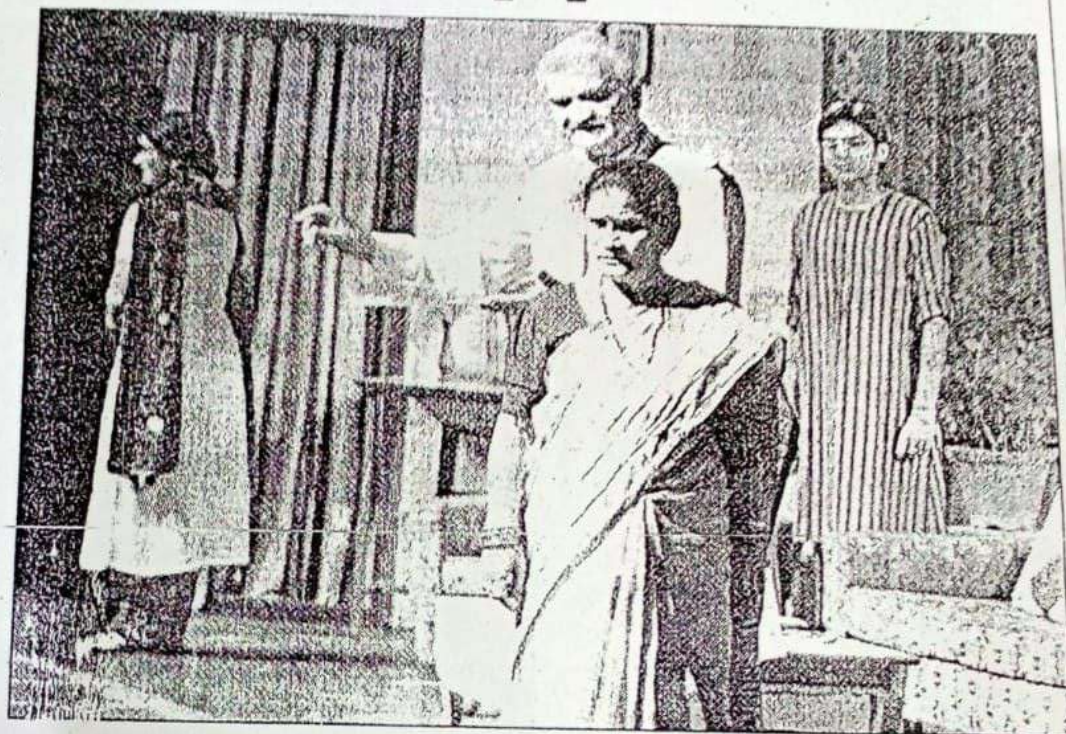
S.D. SHARMA

CHANDIGARH, SEPTEMBER 9
Lucknow-based 'Darpan' made a majestic presence at the ongoing seventh Rashtriya Natya Parv-2007 with 'Kanyadaan' that was staged at Tagore Theatre, here today.

A vast assemblage of theatre buffs reciprocated the performance with rapt attention while a section of crowd watched the engrossing play standing.

While playwright Vijay Tendulkar, with the bold-themed creation of socio-cultural relevance titled 'Kanyadaan' was hailed at the apex of his literary genius, play director Urmil Kumar Thaplial too has employed his 50 years of experience to bring alive the psyche of a Dalit writer and the grouse on caste prejudices nursing in the deeper recesses of his sub-conscious mind. The play depicts different ideological perceptions on the issue of caste system.

The protagonist, Jyoti, a young, enlightened and progressive daughter - imbibes the patronizing ideals of the



Actors enact a scene from 'Kanyadaan' that was staged at Tagore Theatre in Chandigarh on Sunday. Tribune photo: Vinay Malik

family, especially her father Yashwantrao Devlalikar, a political leader. Practising those principles in real life, she eventually marries a Dalit writer, Arun Athawale, only to repent later.

Arun turns a drunkard, beats and tortures Jyoti in a bid to avenge upon the subjugation and suppression meted out to

his forefathers by the upper-caste communities. None of this expected of a writer whose writings spoke of a strong liberal humanist ideology. But Jyoti puts up with the volte-face with courage, hoping against hope.

The actors - Shanti Ankuli (Jyoti), Manju Gupta (Seva Devi), Malya

Dutt (Arun) and Anil Rastogi (Yadu Nath) are all naturals. The former CDRI director and scientist, Anil Rastogi, won special applause. Abhishek, Aman Verma and Ramji Shukla Shubham Pande were in supporting roles. The music and chiaroscuro effects deserve a special mention.

CHANDIGARH TRIBUNE

10.09.2007

पद्मश्री प्रो. राज बिसारिया की थिएटर आर्ट वर्कशॉप की यह प्रस्तुति रशियन नाटक पर आधारित है

ढलती उम्र में निखरता रुहानी रिश्ता

नाट्य मंचन

लखनऊ | विशिष्ट संवाददाता

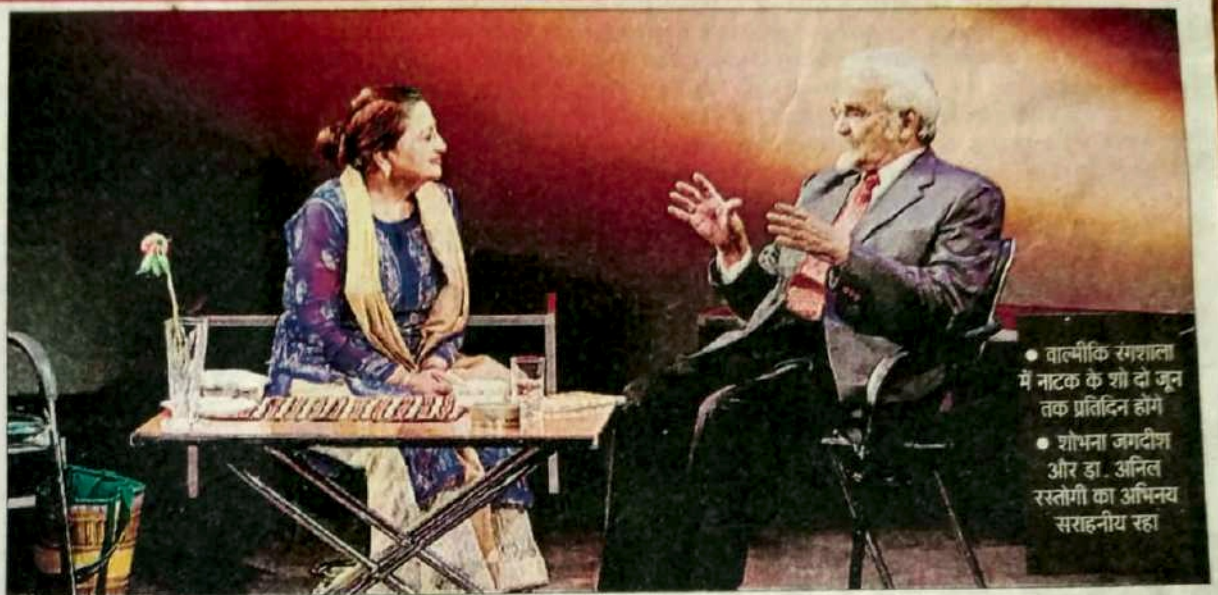
60 साल के अंदर की एक औरत, रीता चौधरी... (असल उम्र नहीं बताई जाएगी क्योंकि औरतों की उम्र पूछना उसे निहायत ही बेहूदा लगता है...।)

एक 65 वर्ष का डॉक्टर अरविंद भारद्वाज... जिसे औरतें विचित्र लगती हैं। दोनों मरीज व डॉक्टर की हैसियत से मिलते हैं... (अरे मरीज नहीं... क्योंकि रीता को कोई मरीज कहे, यह भी उसे अच्छा नहीं लगता...।)

...अब चूंकि दोनों एक-दूसरे से बिल्कुल अलग हैं तो नोकझोंक मामूली बात है। डॉ. अरविंद को रीता के बेपरवाह अंदाज से दिक्कत है तो रीता को डॉक्टर का खड़ूसपन नहीं सुहाता। मसलन डॉक्टर से सुबह 10 बजे का अप्वाइंटमेंट लेकर दोपहर 1 बजे आने पर जब उससे देर से आने की वजह पूछी जाती है तो वह बेसावता कह देती है... "फर्क क्या पड़ता है, आई तो हूँ... जल्दी आ जाती तो रूटीन गड़बड़ा जाता... मेरा नहीं, चिड़ियों का, जिन्हें मैं सुबह-सुबह दाना खिलाती हूँ।"

उम्र के चौथे सोपान पर खड़े दो लोगों के बीच इसी तरह की तकल्लस शुरू हुए रुहानी रिश्ते की खूबसूरत अभिव्यक्ति है नाटक 'विभास', जिसका मंचन गुरुवार को उग्र संगीत नाटक अकादमी की वाल्मीकि रंगशाला किया गया।

थिएटर गुरु कहे जाने वाले पद्मश्री प्रो. राज बिसारिया की थिएटर आर्ट



वाल्मीकि रंगशाला में गुरुवार को मंचित नाटक 'विभास' का मंचन किया गया।

• वाल्मीकि रंगशाला में नाटक के शो दो जून तक प्रतिदिन होंगे
• शोभना जगदीश और डा. अनिल रस्तोगी का अभिनय सरहनीय रहा

दर्शकों को माई शोभना की मौजूदगी

नाटक के प्रमुख कलाकार डॉ. अनिल रस्तोगी और अपने जमाने की मशहूर न्यूज रीडर शोभना जगदीश थीं। लम्बे अरसे बाद शोभना को सामने देखना, वह भी बिल्कुल अलग अंदाज में, दर्शकों को खूब भाया। अघेड उम्र में सहारा तलाशते दो तन्हा लोगों के किरदारों की केमिस्ट्री को मंच पर बखूबी उतारा गया।

वर्कशॉप की यह प्रस्तुति रशियन नाटक 'ओल्ड वर्ल्ड' पर आधारित थी, जिसका हिन्दी रूपान्तरण इप्ता से जड़े राकेश ने किया है। नाटक का निर्देशन खुद राज बिसारिया ने किया है।

संवाद, जो नाटक की जान हैं: हृद है, दुनिया में ऐसे लोग भी हैं जिन्हें

कविता सुनने से चिढ़ है, खरंटों से नहीं...।

...डॉक्टर न हुए अफलातून हो गए।

...पुरुष तो ज्यादातर काम चलाऊ हो होते हैं।

हर औरत को ख्वाहिश होती है कि वो अपने आखिरी दिन तक हसीन दिखे...।

दिलों के दर्द का मरहम तलाशने की कोशिश

नाटक के दोनों किरदारों के अपने-अपने दर्द हैं। डॉक्टर की पत्नी रेडक्रॉस वालंटियर थी, 1971 की लड़ाई में घायल सैनिकों की सेवा करते-करते वह काल के गाल में समा जाती है। रीता का पति उसे छोड़कर जा चुका है और बेटा मर चुका है। डॉ. अरविंद के सैनिटोरियम में जब दोनों मिलते हैं तो एक-दूसरे का दर्द बांट लेते हैं और यही दर्द इनके बीच की कड़वाहट कम करके, दोनों को करीब लाता है।

अभिनय के लिहाज से दोनों ने दिखाया कमाल

अभिनय के लिहाज से कुछ कहना गलत होगा क्योंकि डॉ. अनिल रस्तोगी तो मंजे हुए कलाकार हैं ही, शोभना की जबरदस्त अदाकारी ने भी दर्शकों को हैरान कर दिया और जब निर्देशन खुद थिएटर गुरु का हो तो कहीं कोई कमी खोज पाने की गंजाइश कम ही रह जाती है।

प्राति: डा०अनिल रस्तोगी जी

THANK YOU MR GLAAD
Writer- Anil Barve Director - Puneet Asthana
Character- Jailor Glaad
Swatantra Bharat -1995

भावनापरक परिकल्पना में खिल उठी ग्लाड की भावाभिव्यंजना

आज के भौतिक चिन्तन और उसी के अनुत्पन्न क्रिया कलाओं के बीच मानवता, भावना, संवेदना जैसे भाव बेमानी होते ही जा रहे हैं। लेकिन सम्झाई यह है कि कोई व्यक्ति किसी ऊंचे पद पर हो और भी जितना ही अभिजात्य अपने को सिद्ध करे पाँच भावनाक्रम संवेदनाक्रम स्तर पर कहीं न कहीं से टूट-झट रहा है। यही कथाभाव है अनिल बाई लिखित विजय बापट आशुगदित 'रैज्यू निस्तर ग्लाड' का जिसका अभिप्रेतन मंचकृति संस्था ने कुशल भावना एवं संवेदन के चित्तों निदेशक पुनीत अस्थाना के निर्देशन में किया।

पूरी प्रस्तुति ऊपर से कब्रों नियम कानूनों से आज्ञावित निस्तर ग्लाड जेलर व वीरभूषण घटनापरक जो मौत की सजा पाया कैदी के बीच में बड़े मार्किट व भावुक

परिस्थितियों के बीच गुजरता है। ग्लाड अन्दर ही अन्दर चाहता है कि वीरभूषण घटनापरक को फांसी की सजा माफ हो जाये और ऐसा न हो पाने की स्थिति में वह स्वयं वीरभूषण को अपनी ही रिवाल्वर की गोली से मार डाल रही है। मौत प्रदान कर देता है। ग्लाड को भूमिका में ऊपर से कब्रों अंदर से नाम दोनो व्यक्तियों के अंतर्द्व को अनिल रस्तोगी ने बखूबी भाव सम्प्रेषित किया। उनके अंदर दाह का अंतर्द्व कई परिदृश्यों में उद्घाटित हुआ, यथा कैदी को पत्नी उना के प्रति हमदर्दी, पुराने कैदी 'गणू' द्वारा वीरभूषण को फांसी न दिने जाने की जड़ में उसके साथ वार्तालाप में मारपीट तक, उसके द्वारा अपनी बेटी जनुना का वीरभूषण से जेल में परिचय करवाना आदि-आदि।

पत्रों में डा. अनिल रस्तोगी ग्लोड, जोनफ (कि.सी. निश्रा), सॉनिपर (अजय शर्मा), गणू (रावेव निश्रा), जेना (अर्चना शर्मा) ने अपनी भावनाओं का उत्कर्ष बड़ी स्तम्भविक्ता के साध किया। वहीं दूसरी ओर वीरभूषण (संगन बहुगुणा) हवलदार (शिखरबोता), इन्स्पेक्टर (राजीव भिंदेदी), बनर्जी (ईस अहमद) तथा उमा (संध्या दीप) ने पात्रानुसृत भूमिका निभाई। पूरी प्रस्तुति में ग्लाड की भूमिका में डा. अनिल रस्तोगी की भावाभिव्यक्ति बड़े गजब की थी। डा. रस्तोगी जो अब तक कितने ही रंगमंच नाटकों, रेडियो, नाटकों व टी.वी. सौरित्स तथा फ़िल्मों में काम करने के बावजूद अभी तक रंगमंच से अपने को जीवन की साँठों की तरह समाये हुये हैं यह पुरे सचनऊ रंगमंच जगत के लिये गौरव



'रैज्यू निस्तर ग्लाड' में जेना (अर्चना शर्मा) व ग्लाड जेलर (डा. अनिल रस्तोगी)

WHEN DAUGHTER MEETS FATHER!



A scene from the play Tum held at Bhartendu Natya Academy on Saturday and Sunday

DEEPAK GUPTA/HT

Relationship between father and daughter was showcased during the play 'Tum' staged at Thrust Auditorium of Bhartendu Natya Academy on Saturday and Sunday. Written and directed by Hemendra Bhatia, on stage was veteran actor Anil Rastogi as Brahmanand Vashist and Bhavya Dwivedi as his daughter Pooja.

The director hails from Kanpur and is an alumni of Film and Television Institute (FTI), Pune. The play revolves around Pooja who is in search of her father after several years. On meeting him, she conceals her identity and becomes friends with him. During the

course of the play, various emotions of father-daughter relationship were seen which succeeded in touching the heart of the audience. Later, the father comes to know that she is his daughter and together they begin a new journey.

Rastogi and Dwivedi earned applause by the audience for their acts. Other notable actors who impressed were Pavni Gupta as Shalu, Rupali Chandra as Sonali, Miraj Alam as Arjun and Ankur Saxena as Saini. The music during the play was by Vivek Srivastava, stage management by Abhudaya Tiwari, lights by Arun Trivedi and costumes by Kucha Sathi and Duvall.



Rupali Chandra

The play was presented by Darpan, Lucknow and Sangeet



Dr Anil Rastogi & Bhavya Dwivedi



Pawani Gupta



TUM

Writer- Director--- Hemendra Bhatia

Character- Protagonist

HINDUSTAN TIMES- 24.20.2019

रविवार • 20.10.2019

अमर उजाला

'तुम' ने दिखाई रिश्तों में गहराई

बीएनए में दर्पण की नाट्य प्रस्तुति में नजर आए अभिनेता डॉ. अनिल रस्तोगी

मार्ई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। 'तुम' शब्द प्रतीक है रिश्तों की गहराई संग आपसी आत्मीयता का। ऐसे में क्या होता है जब बचपन में अपने पिता से बिछड़ चुकी बेटी वर्षों बाद उनसे मिलती है।

ऐसे ही कथानक का मंचन शनिवार गोमतीनगर बीएनए के थ्रस्ट थिएटर में हुआ। दर्पण संस्था की ओर से हेमन्त कुमार भट्टिया निर्देशित नाटक तुम के मंचन ने भावनाओं के उतार-चढ़ाव में दर्शकों को बांधे रखा।

मंचन ने दिखाया कि बचपन में पिता ब्रम्हानंद से अलग हुई पूजा, सालों बाद जब उनसे मिलती है तो मुलाकात दोस्ताना रवैये से शुरू होती है। तमाम संवेदनाओं के बीच आखिर में पिता को पूजा की सच्चाई पता चलती है तो एक और नई कहानी शुरू होती है। मंच पर भव्या द्विवेदी, बरिष्ठ रंगकर्मी डॉ. अनिल रस्तोगी उतरे। नाटक के दो शो का मंचन रविवार को भी होगा।



Writer- Director--- Hemendra Bhatia
Character- Protagonist
AMAR UJALA - 20.20.2019

रंगमंच की त्रिमूर्ति



लखनऊ के रंगमंच पर पिछले दिनों मंचित 'बेयरफुट इन एथेन्स' को जहां प्रसिद्ध रंगकर्मी राज बिसारिया के श्रेष्ठ निर्देशन और प्रभावपूर्ण प्रस्तुति के लिए याद किया जाएगा, वहीं इस बात के लिए भी रेखांकित किया जाएगा कि इसमें लखनऊ के तीन प्रमुख रंगकर्मी सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ, अनिल रस्तोगी और जुगुल किशोर ने एक साथ और यादगार अभिनय किया। इन तीनों रंगकर्मियों के बिना लखनऊ के रंगमंच की कल्पना अधूरी है। रंगमंच से लेकर छोटे और बड़े परदे तक इनकी अभिनय प्रतिभा अक्सर चर्चा में रहती है। लखनऊ के हिंदी रंगमंच की इस 'त्रिमूर्ति' की रंगयात्रा पर नजर डाल रहे हैं आलोक पराड़कर

'बेयरफुट इन एथेन्स' में अभिनय की धुरी तीन रंगकर्मी थे। केंद्रीय भूमिका निभा रहे सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ, उनके विरोध के तर्क गढ़ने वाले डॉ. अनिल रस्तोगी और इस गंभीर नाटक में अपने चरित्र से हास्य के रंग भरने वाले जुगुल किशोर। वैसे, इस नाटक को अगर लखनऊ के रंगमंच का परिदृश्य मान लें तो भी इन तीन रंगकर्मियों की भूमिका भी इस परिदृश्य में इतनी ही महत्वपूर्ण रही है। लखनऊ के रंगमंच की ये तीन प्रतिभाएं ऐसी हैं जो अक्सर रंगकर्म से जुड़ी चर्चाओं के केंद्र में रहती हैं और नाटकों से लेकर फिल्म और धारावाहिकों तक छाया रहती हैं।

अमर उजाला

रविवार, 24 फरवरी, 2013

BARE FOOT IN ATHENS

Writer- Maxwell Anderson Director- Raj Bisaria

Character- Lycon

AMAR UJALA - 24.02.2013

सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ, जुगुल किशोर और अनिल रस्तोगी ये तीनों ही लखनऊ रंगमंच की त्रिमूर्ति हैं, जो अक्सर रंगकर्म से जुड़ी चर्चाओं के केंद्र में रहती हैं और नाटकों से लेकर फिल्म और धारावाहिकों तक छाया रहती हैं।

नाटकों में अभिनय शतक लगाने की तैयारी



अनिल रस्तोगी

- जन्म : 4 अप्रैल 1943
- शिक्षा : एमएस-सी, पीएचडी
- कार्य अनुभव : सीडीआरआई से वैज्ञानिक पद से सेवाविवृत, नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज के फेलो, पचास वर्षों से रंगमंच पर सक्रिय, 80 से अधिक नाटकों के 850 से अधिक प्रदर्शन, दर्पण के आरंभिक सदस्यों में से एक, सचिव पद पर कार्यरत।
- नाट्य अभिनय : यहूदी की लड़की, रुस्तम सोहराब, हयवदन, सखाराम बाइण्डर, थैव्यू मिस्टर ब्लैड, पंछी जा पंछी आ, बोईंग बोईंग (400 से अधिक प्रदर्शन), ताजमहल का टैंडर, मुख्यमंत्री, शाहजहां, कन्यादान, मित्र, एक संसदीय समिति की उठक-बैठक, अन्धार यात्रा।
- टेलीविजन और फिल्म : ये वो मंजिल तो नहीं, मरीचिका, खुन बहा गंगा में, मेरी पत्नी और वो, चिट्ठी जी, कॉफी हाउस, मोनिका, इश्कजादे सहित कई फिल्मों और उड़ान, जहां चाह वहां राह, दानी मोरघज, मुखड़ा वया देखें दर्पण में, बीबी नातियों वाली, बानो बेगम, नाच्यो बहुत गोपाल, पीली आंधी, ना बोले तुम ना मैंने कुछ कहा धारावाहिकों, टेली फिल्मों में अभिनय।
- सम्मान : उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी अवार्ड (1984), अमृतलाल नागर स्मृति सम्मान, सरस्वती सम्मान, फिदा हुसैन नरसी सम्मान, अवधौ अस्मिता सम्मान, रंगयात्रा अवार्ड, उत्पल दत्त अवार्ड।

BARE FOOT IN ATHENS

Writer- Maxwell Anderson Director- Raj Bisaria

Character- Lycon

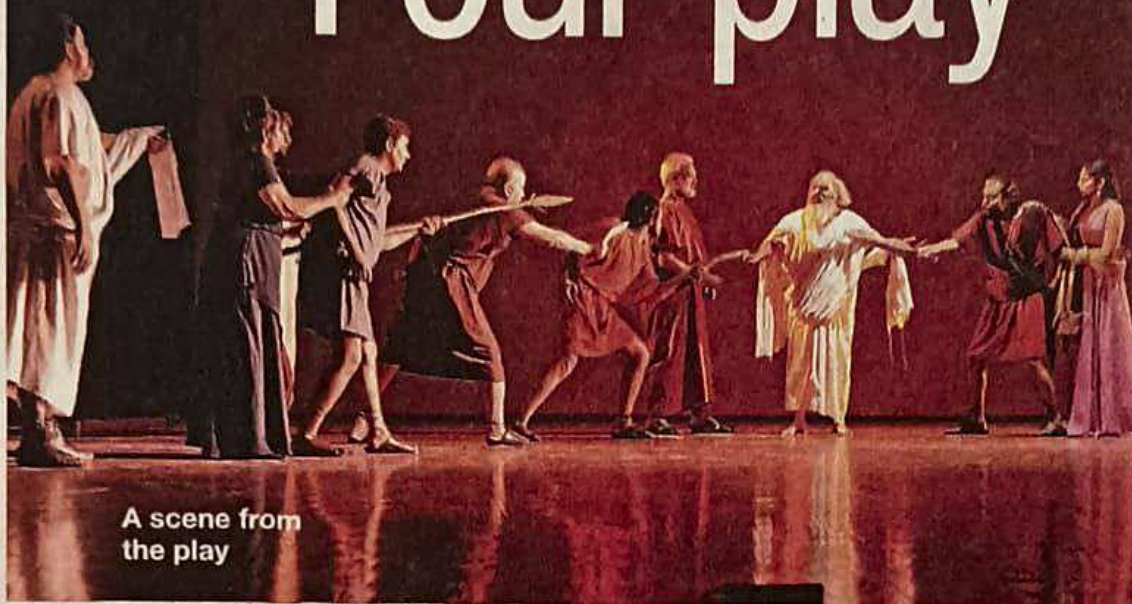
TIMES OF INDIA- 15.02.2013

LUCKNOW TIMES, THE TIMES OF INDIA

3

Pics: Arun Pushkar

Four play



A scene from the play

Theatre lovers in the city were recently treated with a power-packed performance by three theatre veterans from Lucknow - **Dr Anil Rastogi**, **Jugal Kishore** and **Surya Mohan Kulshrestha** in a single play, *Barefoot in Athens*.

"And this could become possible only with the efforts **Raj Bisaria**, the director of the play" informed **Ashish Tewari**, who was also a part of the play, adding, "To bring them together was a difficult task. But when Rajji asked them to be a part of the play no one could say ni."

The play, which is an account of the last days of Socrates and is also an imaginative extension of the philosopher's life in Athens in the 5th century BC, was staged for the first time in India.



Jugal Kishore



Surya Mohan Kulshrestha

Dr Anil Rastogi

Age is just a number for these actors!

Anil Rastogi and Shobhana Jagdish in a scene from the play *Vibhaas*

THE OLD WORLD (VIBHAAS)
 Writer- Alexie Arbutov/Rakesh Director- Raj Bisaria
 Character- The Male Protagonist, Doctor
 TIMES OF INDIA- 10.07.2019

Pics: Vishnu Jaiswal



Dr Shobha Bajpai (L) and Vinita Mishra



Kiran Raj Bisaria



Atul (L) and Anant Chaturvedi



Amit Mukherjee



Prof Raj Bisaria



Jayant Krishna (L) and Beena Krishna



Dr Rashmi Chaturvedi (L) and Prof Kumkum Dhar



Gopal Sinha



>> Diya Badgel

A play titled *Vibhaas* was recently staged at Sangeet Natal Akademi. Directed by theatre veteran Padma Shri Prof Raj Bisaria, the play that was staged on three consecutive days and witnessed a full house each day.

Based on Russian playwright Aleksei Arbutov's play *Old World*, it was adapted in Hindi by Rakesh Veda. Theatre veterans Dr Anil Rastogi and Shobhana Jagdish were cast in the lead roles as Arvind Bhardwaj and Rita. The chemistry between the duo on stage was electrifying. Shobhana, who was back on stage after a long time, surprised the audience with her singing skills during the play while Anil's dance moves on English numbers was a scene that everyone enjoyed thoroughly.

The plot of the play revolved around two characters who are lonely in their respective lives. While Anil played the role of the psychiatrist who lost his wife, Shobhana essayed the role of his patient. Interestingly, love blooms between the two and a special chemistry is seen on stage.

Veena and Major SC Mathur

Actors Prafulla Tripathi and Somya Chawla also played key roles in the play. "It is very rare that we get to see love stories on older generation couples on stage these days. The plot and the versatility of the actors was just amazing," said Himanshu Patel, present among the audience.

— Saad Abbasi



Pradeep Kapoor (L) and Rakesh Pandey



<< Naheed and Justice Shabihul Hasnain

पायनियर

बृहस्पतिवार, 3 नवम्बर, 2011



वाल्मीकी रंगशाला में प्रचित नाटक आइनों का फोकस का एक दृश्य

पायनियर

खचाखच भरा हॉल...व्यंग्य विनोद...और ठहाके

लखनऊ | वरिष्ठ संवाददाता

ट्रेन में सफर के दौरान किन हालातों का सामना पड़ता है। कैसे महिलाओं के साथ चोरी की घटनाएं हो जाती हैं? कैसे भिखारी परेशान करते हैं? किस तरह चेन पुलिंग होती है और बिना किसी ठोस कारण के ट्रेन घंटों खड़ी रहती है। यही दिखाया गया है विजय तेंदुलकर लिखित व सत्येन शरद के अनुवादित नाटक 'थीफ पुलिस' में। संगीत नाटक अकादमी के वाल्मीकि प्रेक्षागृह में बुधवार को डॉ. अनिल रस्तोगी की प्रस्तुति व्यंग्य विनोद 'आइनों का कोरस' में तीन नाटकों का मंचन किया गया। तीनों नाटक हास्य व्यंग्य से भरपूर रहे। खचाखच भरा हॉल ठहाकों से गुंजता रहा। सभी नाटकों की परिकल्पना व निर्देशन उर्मिल कुमार थपलियाल का रहा।

नाटक 'थीफ पुलिस' की कहानी ट्रेन में सवार यात्रियों के आसपास घूमती है। उच्च परिवार की महिला प्रीति को आराधन न मिलने से जनरल में सफर करना पड़ता है। उसका हार चोरी हो जाता



एसएनए के वाल्मीकि प्रेक्षागृह में बुधवार को 'आइनों का कोरस' में विजय तेंदुलकर लिखित 'थीफ पुलिस' नाटक का मंचन हुआ। • हिन्दुस्तान

है। चेन पुलिंग करके ट्रेन रोक दी जाती है। गार्ड जांच शुरू करता है। पता चलता है...महिला ने हार पहना ही नहीं था। यह नाटक शुरू होने के पहले मंचन में काम होने वाली चीजों का एक तरह से मंचन होता है। पहले नाटक से दूसरे नाटक के अंतराल को भी इसी से भरा जाता है। मंचन में विकास, सुनील, शिवांगी, डॉ. अनिल रस्तोगी का मंचन सशक्त रहा।

दूसरा नाटक 'आओ बहस करें' सआदत हसन मंटो की 'आओ' सीरीज का एक रेडियो नाटक है। इसके केन्द्र में पति-पत्नी के बीच की बहस है। नाटक में संध्या दीप, अनिल रस्तोगी व राजू पांडे ने सशक्त अभिनय किया है।

व्यंग्य विनोद का तीसरा नाटक दिनेश चंद थपलियाल का 'पुनर्जन्म' हुआ। इसमें रावण व नारद मुनि का वार्तालाप

नाट्य मंचन

- एसएनए में 'आइनों का कोरस' के तहत 'थीफ पुलिस', 'आओ बहस करें' व 'पुनर्जन्म' नाटक का मंचन
- उर्मिल कुमार थपलियाल का निर्देशन व डॉ. अनिल रस्तोगी की प्रस्तुति दर्शकों को भाई

हिन्दुस्तान

लखनऊ • गुरुवार • 03 नवम्बर 2011



play

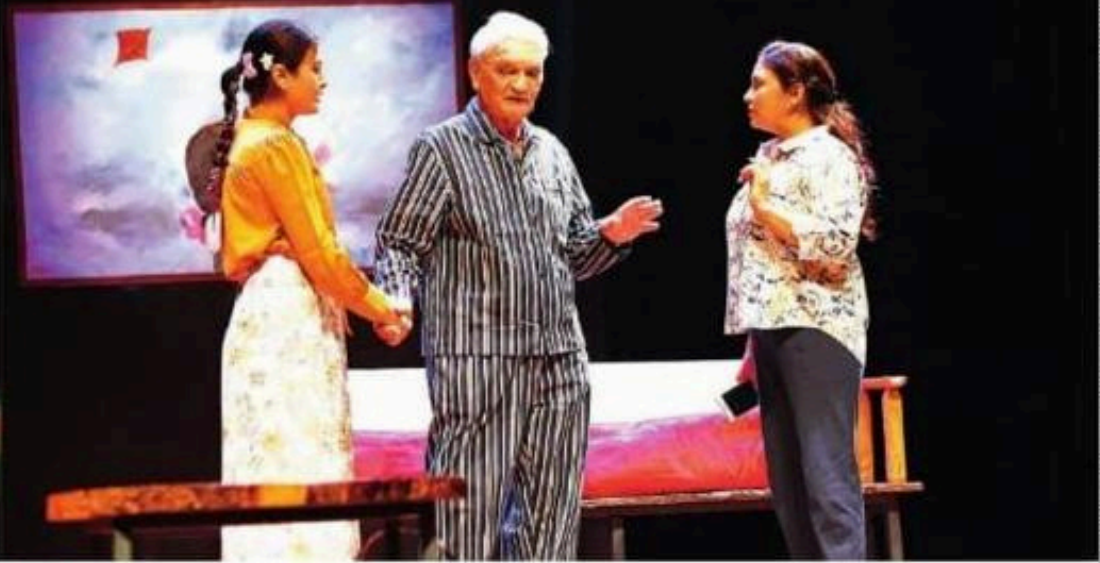
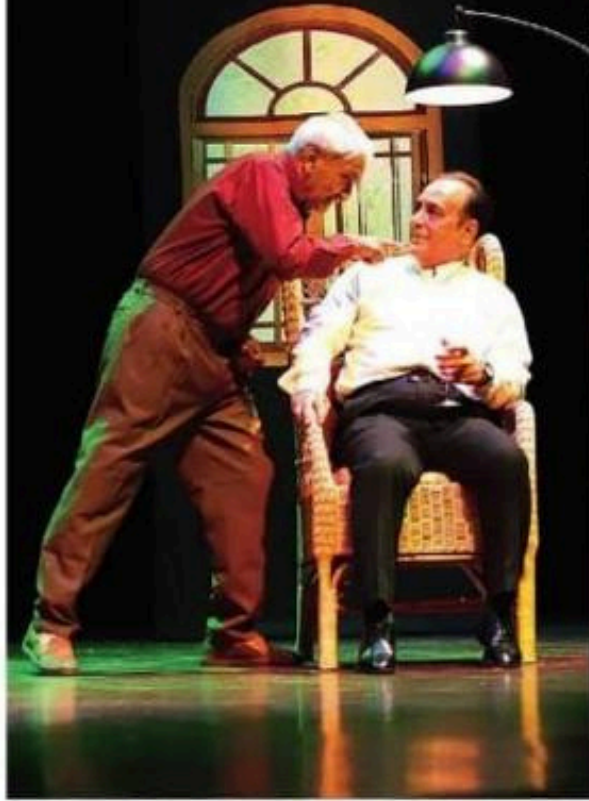
DADDY

Director Surya Mohan
Kulshreshtha

Newspaper Coverage
of the play

Pics: Aditya Yadav

A heartwarming & heartbreaking tale



Dolly Rastogi



Gopal Sinha

The play *Daddy*, directed by **Surya Mohan Kulshrestha**, was recently staged at Sangeet Natak Akademi. Inspired by the play *Le Père* by French writer Florian Zeller, the production deeply moved the audience with the emotional journey of a father suffering from dementia.

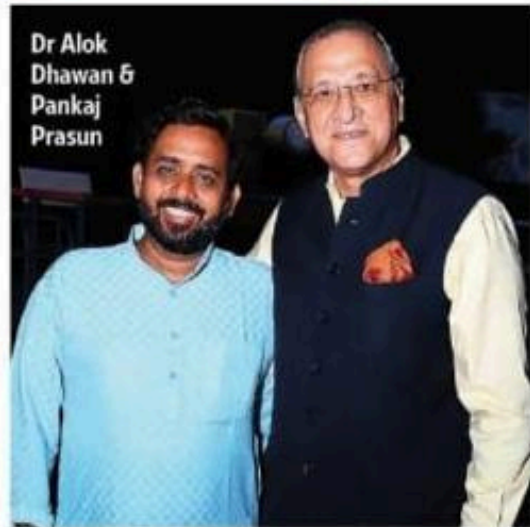
The play delved into the life of a devoted daughter and her aging father. While the daughter grapples with her own dreams, love, and aspirations, she also shouldered the weighty responsibility of caring for her ailing father.

The unique perspective of the play took the audience on an immersive exploration of dementia's effects, revealing how memory shapes our understanding of the world and those around us. As the father's mind drifts back to his childhood, his late mother becomes his sole refuge.

Silence took over the hall, and the emotionally moved audience stood to applaud.

Dr Anil Rastogi, who portrayed the role of the father, was highly appreciated for his powerful performance.

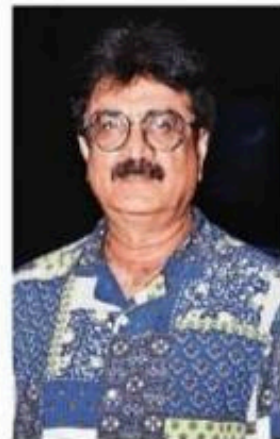
— Manas Mishra



Dr Alok Dhawan & Pankaj Prasun



Dr Mithilesh & Mandvi Singh



Tariq Khan



Kishor Kumar



Dhruv and Tanya Rishi



Bhanu and Preeti

पिता ने बेटी से पूछा तुम कौन हो..

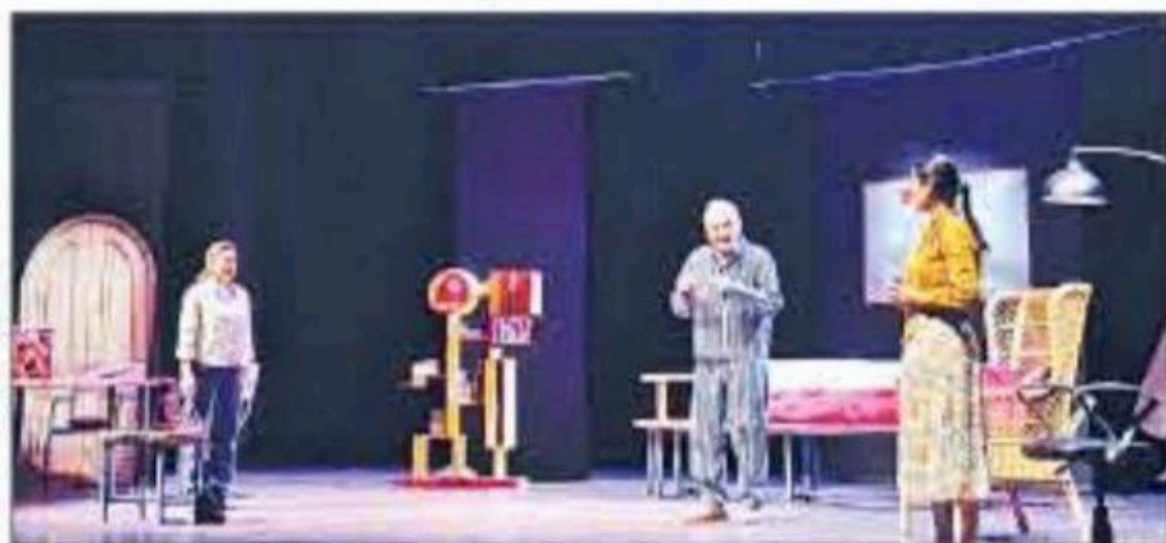
संगीत नाटक अकादमी के संत गाडगे महाराज प्रेक्षागृह में "डैडी" का हुआ समापन

lucknow@inext.co.in

LUCKNOW(26 July) : पिता और बेटी के रिश्ते की गहराई, उम्र के साथ आती विस्मृति और पहचान के संकट को लेकर मंचित नाटक डैडी ने दर्शकों को भावनाओं के समंदर में डुबो दिया. यह दो दिवसीय नाट्य प्रस्तुति 25 और 26 जुलाई को एसएनए में हुई, शनिवार को इसका समापन हुआ. नाटक का निर्देशन किया था वरिष्ठ रंगकर्मी सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ ने.

नाटक की झलक

वह एक वृद्ध पिता, जो कभी पायलट था या शायद इंजीनियर अब उसे कुछ याद नहीं रहता. उसकी दुनिया धुंधली हो रही थी. चेहरों की, रिश्तों की, यहां तक कि खुद की भी. उसकी बेटी अन्नू रोज उसे समझाने की कोशिश करती कि मैं हूँ तुम्हारी बेट, लेकिन वो कभी उसे देख कर कहता क्या तुम मेरी मां हो? घर वही था, लेकिन हर



पात्रों की भूमिका ने दर्शकों को झकझोरा

मुख्य भूमिका में दिग्गज कलाकार अनिल रस्तोगी ने एक ऐसे बुजुर्ग का किरदार निभाया है जो डिमेंशिया

(भूलने की बीमारी) से पीड़ित है. उसकी बेटी अन्नू, उसके बदलते बर्ताव, याददाश्त और यथार्थ से

उसके संबंधों को सहेजती है, लेकिन खुद भी एक मानसिक जंग लड़ रही होती है.

दिन वो किसी और कमरे में जागता था, किसी और समय में. उसे लगता, कोई उसे घर से निकालने की साजिश कर रहा है. धीरे-धीरे, उसे समझ नहीं आता कि कौन सच है, कौन सपना. न अंत दिखता, न शुरुआत. बस एक भूलभुलैया थी, जिसमें वह अकेला छूट गया था. आप कौन हैं. जब वह अपनी ही बेटी को पहचान नहीं पाता और यह सवाल करता.

संदेश जो दिल को छू गया

नाटक दिखाता है कि जब कोई बुजुर्ग अपने होश-हवास खोने लगता है, तो उसके साथ पूरा परिवार धीरे-धीरे उसकी पहचान और रिश्तों को भी संभालने लगता है. डैडी केवल एक व्यक्ति की बीमारी नहीं, बल्कि रिश्तों की परीक्षा है. वहीं, नाटक के संवादों ने भी लोगों को रिश्तों की अहमियत का अहसास कराया.

राग रंग

आलोक पराड़कर

विस्मृतियों का संसार

कुछ वर्षों पूर्व एक कहानी पढ़ी थी। कथाकार ने अनूठे शिल्प का प्रयोग किया था। आधी कहानी पढ़ने के बाद पता चलता है कि कहानी सुनाने वाला वह नहीं है, जिसे हम समझ रहे थे, बल्कि यह तो कोई दूसरा है। वास्तव में किसी भी रचना को पढ़ते या देखते हुए हम निरपेक्ष होना चाहते हैं, लेकिन वह रचना हमें किसी न किसी पात्र से जोड़ लेती है, जिसके नजरिए से या जिसकी कथा को लेकर वह कही जा रही होती है।

नाटक में भी हम घटनाओं को लेकर एक निरपेक्ष दर्शक होना चाहते हैं। अक्सर होते भी हैं, कई बार नहीं भी हो पाते हैं। लेकिन तब क्या होगा जब हम किसी एक पात्र के नजरिए से ही सब कुछ देखना शुरू कर दें और फिर अगर वह व्यक्ति विस्मृति का शिकार हो तो। एक कैसा संसार बनेगा हमारे आसपास? बनेगा या लगातार टूटता दिखेगा? अगर किसी ऐसे व्यक्ति के नजरिए से हम घटनाओं को देखने की कोशिश करेंगे जिसकी याददाश्त, सोच, भाषा या निर्णय की क्षमताएं प्रभावित हो चुकी हैं तो क्या होगा? लोग, नाम, चीजें, घटनाएं, वस्तुएं, यादें सब कुछ आपस में गड़गड़गड़ होकर किस तरह हो जाएंगी, कुछ ऐसा रूप ले लेंगी जिन्हें तर्क या यथार्थ से जोड़ पाना संभव नहीं हो सकेगा, असंगत होंगी।

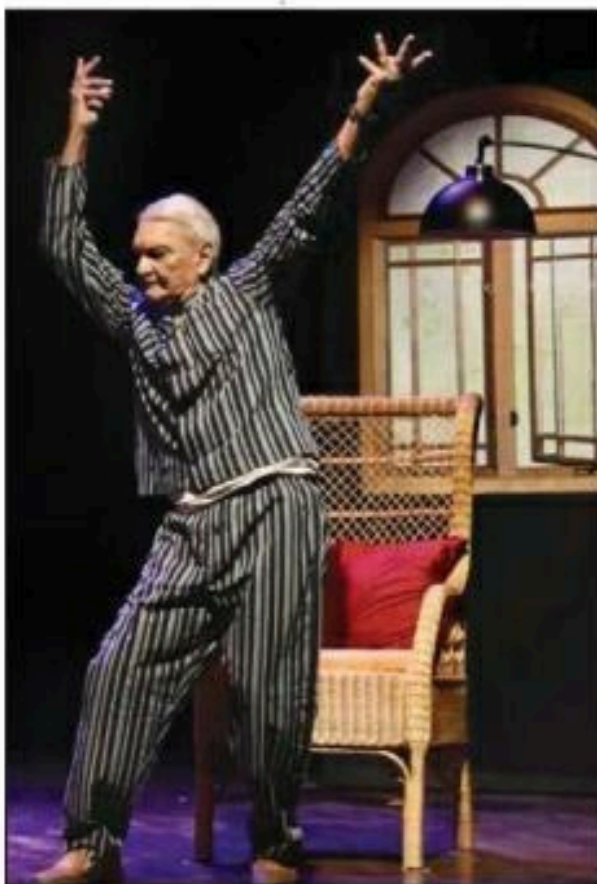
'दर्पण' की नवीनतम प्रस्तुति 'डैडी' न सिर्फ एक डिमेंशिया के मरीज की कहानी है, बल्कि उसकी नजर से दुनिया को देखने की कोशिश भी है। फ्लोरियो जैलर की 'ले पेरे' से प्रभावित इस नाटक में अगर हम घटनाओं, चरित्रों, उनके शक्ल और व्यवहार के बदलने को किसी क्रम में बैठाना चाहें या तर्क की कसौटी पर कसना चाहें तो मुश्किल होगी लेकिन अगर हम मरीज की जगह खुद को रख कर देखने की कोशिश करेंगे तो यह समझ सकेंगे कि ऐसी स्थितियों में हमें कैसा महसूस होता है, कैसे लोगों के नाम, चेहरे, व्यवहार, घटनाओं, वस्तुओं को लेकर हम उधेड़बुन में खो जाते हैं, कैसे वे हमें हमेशा बदले हुए लगते हैं, कैसे यह लगता है कि हमारे खिलाफ षड़यंत्र हो रहा है, कैसे जगहों को लेकर हम परेशान रहते हैं?

नाटक का मंचन बीते 25 एवं 26 जुलाई को लखनऊ के गाडगे जी महाराज सभागार में हुआ। नाटक का शिल्प और उसकी प्रस्तुति का प्रयोग एक

बात है लेकिन जो इस प्रस्तुति की दूसरी खास बात है, वह है लखनऊ के दो वरिष्ठ रंगकर्मीयों का एक नाटक में साथ होना। नाटक के निर्देशक सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ हैं जबकि डैडी की मुख्य भूमिका अनिल रस्तोगी ने की है। अनिल रस्तोगी 82 वर्षीय हैं, फिल्म और धारावाहिकों में काम करते हैं लेकिन फिल्म और धारावाहिकों में छोटे-छोटे दृश्य फिल्माए जाते हैं, डबिंग की सुविधा होती है, नाटक जैसे जीवंत माध्यम में डेढ़ घंटे तक लगातार अभिनय करना, लंबे-लंबे

संवाद याद कर बोलना निश्चय ही मुश्किल काम है। इस काम को उन्होंने बखूबी निभाया है। उन्हें इस प्रकार अभिनय करते देखना नाटक की उपलब्धि है। कुलश्रेष्ठ उनसे दस साल छोटे हैं। वह कहते हैं, 'काफी समय से मेरी और उनकी इच्छा थी कि हम साथ काम करें। मैं एक ऐसे नाटक की तलाश में था जिसमें उनकी अभिनय प्रतिभा पूरी तरह खिल कर सामने आ सके और एक निर्देशक के तौर पर मेरे लिए भी चुनौतीपूर्ण हो।' नाटक की महिला कलाकारों ने भी अच्छा अभिनय किया है, खासकर बेटी की भूमिका में शालिनी विजय ने। पूजा सिंह एवं अंकिता दीक्षित अन्य भूमिकाओं में हैं, लेकिन अजय शर्मा और अभिषेक सिंह की भूमिकाएं ठीक से उभर नहीं सकी हैं। वैसे नाटक को थोड़ा छोटा और कसा हुआ होना चाहिए था। नाटक की गति धीमी है और प्रसंगों में भी दोहराव जैसा लगता है। नाटक के संगीत, वेशभूषा, दृश्यबंध शिवांगी निगम के थे जबकि प्रकाश परिकल्पना गोविंद यादव की थी।

'दर्पण' ने यह प्रस्तुति अपने संस्थापक प्रोफेसर सत्यमूर्ति के शताब्दी वर्ष के अवसर पर की है। प्रो. सत्यमूर्ति ने 1961 में कानपुर और 1971 में लखनऊ में 'दर्पण' की स्थापना की थी। हालांकि उन्होंने खुद कभी नाटकों में अभिनय या निर्देशन नहीं किया। उन्होंने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय और दूसरे नगरों से ख्यातिप्राप्त निर्देशकों को आमंत्रित कर नाटकों के मंचन भी कराए जो काफी लोकप्रिय हुए। जन्मशती वर्ष में आगे कई दूसरे आयोजन भी होने हैं।



दर्पण संस्था की ओर से संगीत नाटक अकैडमी में हुआ नाटक का मंचन

‘डैडी’ की स्मृतियां और वीरान मंच

डि डिमेशिया से पीड़ित एक वृद्ध जो निरंतर अपनी स्मृतियों को खोता जा रहा है, उसके नजरिए से दुनिया कैसी है यह दिखाने के लिए शुक्रवार को संगीत नाटक अकैडमी में दर्पण संस्था की ओर से नाटक डैडी का मंचन हुआ। संस्था के संस्थापक प्रो. सत्यमूर्ति की जन्मशती पर फ्रेंच लेखक फ्लोरियां जैलर के नाटक ‘ले पेरे’ से प्रेरित नाटक का लेखन व निर्देशन सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ ने किया, जबकि सह-लेखन व सह-निर्देशन शिवांगी निगम ने किया। नाटक में डैडी की मुख्य भूमिका में वरिष्ठ अभिनेता डॉ. अनिल रस्तोगी नजर आए। करीब 36 वर्ष बाद सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ के निर्देशन में डॉ. अनिल रस्तोगी ने अपने 99वें नाटक में अभिनय किया। इसके पहले, डॉ. रस्तोगी ने वर्ष 1989 में सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ के निर्देशन में नाटक सूर्य शिकार में अभिनय किया था।

बेटी निरंतर द्वंद्व में रहती

शुरुआत एक पिता अनंत और पुत्री अनु के संवाद से होती है, जिसमें अनु बीमार पिता को नर्स को भगा देने के लिए गुस्सा कर रही है। इस दौरान कई पर्दों पर पेंटिंग, खिड़की, दरवाजे आदि के चित्र और मंच पर कुर्सी, सोफा आदि सामान नजर आते हैं। पिता अपनी घड़ी रखकर भूल जाता है और नर्स को चोर बताता है। इसके बाद दामाद अतुल की एंट्री होती है, जिसे पिता पहचान नहीं पाता। अनंत को कई ऐसी बातें याद आती हैं, जो पहले हुई हैं लेकिन उसे भ्रम होता है कि अब भी वही समय है। समय के साथ जैसे-जैसे स्मृति धूमिल होती है मंच से सामान भी कम होने लगते हैं। अनंत बेटी के घर को अपना घर समझता है और अपनी बेटी को अपमानित करता



है यह कहते हुए कि वह उसकी संपत्ति पर कब्जा करना चाहती है। बेटी निरंतर द्वंद्व में है कि क्या करे। इस दौरान उसे कई अजीब खयाल आते हैं। बेटी अपना जीवन जीना चाहती है, इसके लिए वो घर में नर्स रखती है, जो शुरू में पिता को अपनी छोटी बेटी से मिलती हुई लगती है। नाटक में काफी देर तक यह सस्पेंस बना रहता है कि आखिर छोटी बेटी कहाँ है, जो अंतिम दृश्यों में खुलता है कि उसकी मौत हो चुकी है।



कथक भी दिखाया डॉ. रस्तोगी ने

नाटक के एक दृश्य में अनंत को यह भी भ्रम होता है कि वह एक कथक डांसर था। ऐसे में दर्शकों को डॉ. रस्तोगी कथक भी दिखाते हैं, जिसे प्रो. कुमकुम धर ने तैयार करवाया। नाटक में एक चीज, जो सबसे ज्यादा प्रभावित करती है, वो मरीज की जिजीविषा है। निरंतर जूझने के बाद भी वो जीना चाहता है। वो जिंदगी से हार नहीं मानता है। नाटक यह संदेश देता है कि हमारी समाज को लेकर समझ सिर्फ हमारी स्मृतियों तक सीमित है पर संसार हमारी स्मृतियों से कहीं बड़ा है इसलिए हम सभी कहीं ना कहीं डिमेशिया से पीड़ित हैं। नाटक में डॉ. अनिल रस्तोगी के साथ शालिनी विजय, अभिषेक सिंह, अकिता दीक्षित, पूजा सिंह, अजय शर्मा और अभिषेक पाल समेत कई कलाकार नजर आए। प्रकाश परिकल्पना गोविन्द यादव, संगीत संचालन अविजित पांडेय का रहा।

'Daddy' explores complex relationship

TIMES NEWS NETWORK

Lucknow: A play 'Daddy' commemorating the birth centenary of Darpan founder Prof Satyamurthy was staged at UP Sangeet Natak Akademi (UPSNA) on Friday.

An adaptation of Florian Zeller's French masterpiece 'Le Pere', the play has been adapted and directed by veteran dramatist Suryamohan Kulshreshtha. It features acclaimed actor Anil Rastogi in the lead role.

"This collaboration with Rastogi was long overdue, I was searching for a script that would challenge both his acting prowess and my directorial skills," said Kulshreshtha.

The narrative centers around a father suffering from dementia and his daughter, ex-



Veteran actor Anil Rastogi performs in the play 'Daddy' staged at UP Sangeet Natak Akademi on Friday

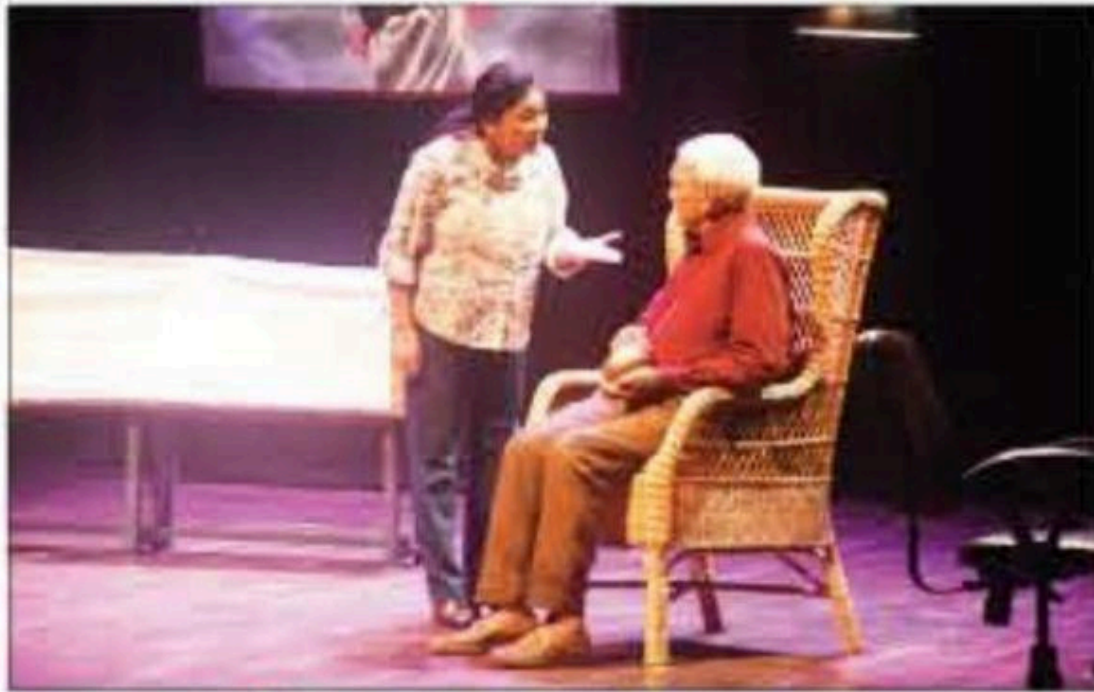
ploring their complex relationship. The story delicately balances the daughter's personal aspirations with her responsibilities toward her ailing father. Through its powerful storytelling, the play demonstrates how memory limitations affect the understanding of the world and rela-

tionships.

The cast also included Shalini Vijay, Ajay Sharma, Puja Singh, Ankita Dixit, Abhishek Singh, Vipin Pratap Rai and Abhishek Pal.

Theatre lovers can catch public performances of 'Daddy' on Saturday at 7.30pm at UPSNA.

डिमेंशिया पेशेंट का भी अनुभव करा गया 'डैडी'



संगीत नाटक अकादमी के संत गाडगे महाराज प्रेक्षागृह में हुआ मंचन

LUCKNOW (25 JULY): एक बेटी और पिता के रिश्ते की कहानी है 'डैडी'. एक तरफ बेटी की अपनी जिंदगी, सपने और अपना प्यार है तो दूसरी तरफ डिमेंशिया से पीड़ित वृद्ध पिता की देखभाल की जिम्मेदारी. पिता याददाश्त खोता जा रहा है. उसका भ्रम और संभ्रम पराकाष्ठा पर पहुंचता है तो वह अबोध बच्चे सा बन जाता है और उसे याद आती है मां. नाटक इस ढंग से परिकल्पित किया गया कि दर्शकों ने इसे डिमेंशिया के मरीज के दृष्टिकोण से देखा. उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी के संत गाडगे महाराज प्रेक्षागृह में शुक्रवार को डिमेंशिया मरीज और उसकी बेटी के भावनात्मक रिश्ते

को उतारा गया.

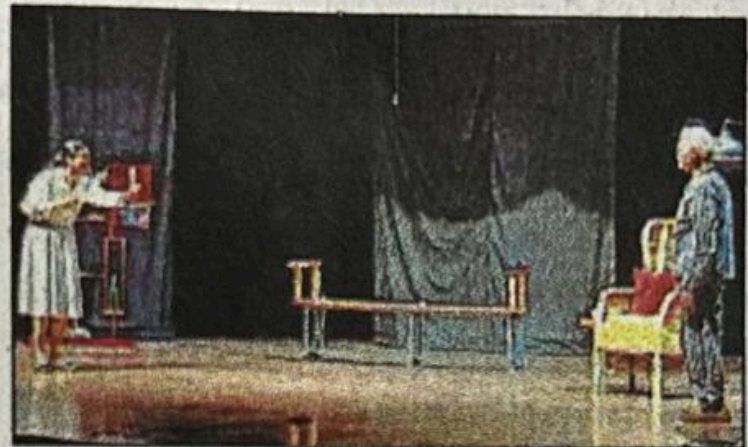
हम सभी डिमेंशिया से पीड़ित

अपने जीवन का 99वां नाटक 'डैडी' कर रहे वरिष्ठ रंगकर्मी डा. अनिल रस्तोगी ने मुख्य भूमिका निभाई. नाटक ने यह एहसास दिलाया कि कहीं न कहीं कुछ हद तक तो हम सभी डिमेंशिया से पीड़ित हैं. हमारी जो भी समझ-बूझ है वो पूरी नहीं है. डा. रस्तोगी ने बताया कि आमतौर पर मैं एक महीने तक नाटक का पूर्वाभ्यास करता हूं, लेकिन इस नाटक का पूर्वाभ्यास 14 मई से कर रहा था. यह 'यहूदी की लड़की' के बाद मेरे जीवन का सबसे चुनौतीपूर्ण नाटक है. उन्होंने बताया कि दर्पण संस्था अपने संस्थापक प्रोफेसर सत्यमूर्ति के जन्म शताब्दी वर्ष में इस नाटक को प्रस्तुत कर रही. नाटक का लेखन वरिष्ठ रंगकर्मी सूर्य मोहन कुलश्रेष्ठ व शिवांगी निगम ने किया है. निर्देशन भी सूर्य मोहन कुलश्रेष्ठ का है.

'Daddy' brings dementia to life on stage at UPSNA

LUCKNOW: A play Daddy, portraying society through the eyes of a person living with dementia, was staged on Friday at the Sant Gadgeji Maharaj Auditorium of the UP Sangeet Natak Akademi. Originally written in French by playwright Florian Zeller as *Le Père*, the play was adapted into Hindi by renowned theatre artists Suryamohan Kulshreshtha and Shivangi Nigam.

The play was also directed by Kulshreshtha. It was staged by Darpan Theatre group as part of the birth centenary year celebrations of its founder Prof Satyamurty. The play revolves around a daddy (played by veteran actor Anil Rastogi) - a dementia patient and his daughter Anu (Shalini Vijay).

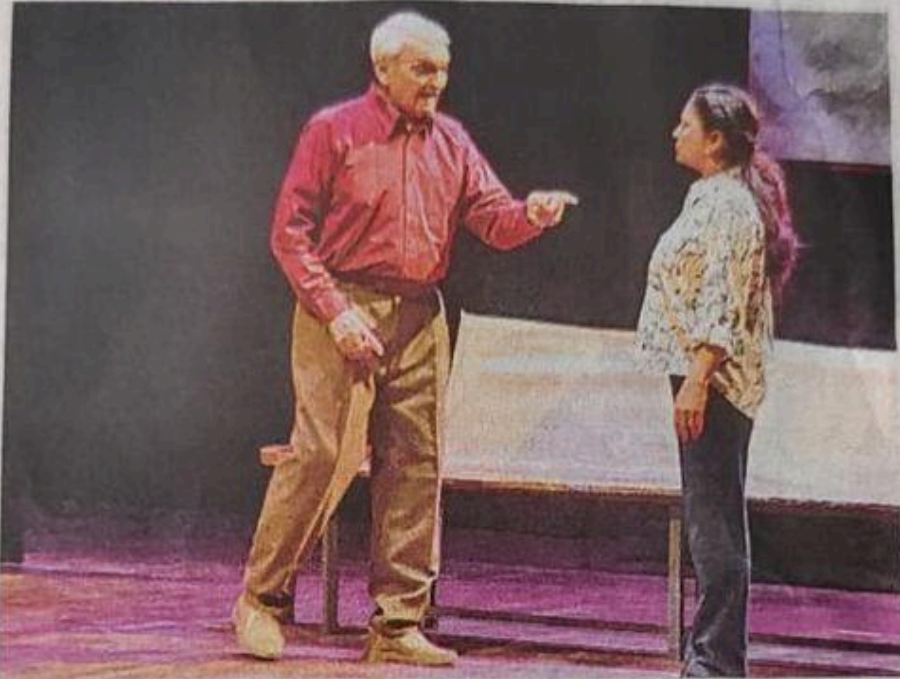


A scene from the play 'Daddy' staged on Friday.

The play vividly captured the confusion and inner turmoil of the father, who is gradually losing his memory. This was creatively depicted through a stage set made of curtains painted with household objects that disappeared one by one—mirroring the fading fragments of his memory. By the end, his memory loss reaches its peak. HTC

Dainik Jagran

'डैडी' को देख दर्शकों ने किया डिमेंशिया मरीज का अनुभव



गोमती नगर स्थित संगीत नाटक अकादमी में डैडी नाटक का मंचन करते वरिष्ठ रंगकर्मी अनिल रस्तोगी और साथी कलाकार • जागरण

जागरण संवाददाता • लखनऊ : एक बेटी और पिता के रिश्ते की कहानी है डैडी। एक तरफ बेटी की अपनी जिंदगी, सपने और अपना प्यार है तो दूसरी तरफ डिमेंशिया से पीड़ित वृद्ध पिता की देखभाल की जिम्मेदारी। पिता धीरे-धीरे अपनी याददाश्त खोता जा रहा है। उसका भ्रम और संभ्रम पराकाष्ठा पर पहुंचता है तो वह एक अबोध बच्चे सा बन जाता है और उसे याद आती है मां। नाटक इस ढंग से परिकल्पित किया गया कि दर्शकों ने इसे डिमेंशिया के मरीज के दृष्टिकोण से देखा, उसके अनुभव से गुजरे। उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी के संत गाडगे महाराज प्रेक्षागृह में शुक्रवार को डिमेंशिया मरीज और उसकी बेटी के भावनात्मक रिश्ते को उतारा गया।

अपने जीवन का 99वां नाटक 'डैडी' कर रहे वरिष्ठ रंगकर्मी डा. अनिल रस्तोगी ने इसमें मुख्य भूमिका

निभाई। हमारी स्मरण शक्ति की जो सीमा है, वही हद है संसार और व्यक्तियों को समझ-बूझ पाने की। नाटक ने यह एहसास दिलाया कि कहीं न कहीं कुछ हद तक तो हम सभी डिमेंशिया से पीड़ित हैं। हमारी जो भी समझ-बूझ है वो पूरी नहीं है।

डा. रस्तोगी ने बताया कि यह चुनौती पूर्ण नाटक है। आमतौर पर मैं एक महीने तक नाटक का पूर्वाभ्यास करता हूं, लेकिन इस नाटक का पूर्वाभ्यास 14 मई से कर रहा था। यह 'यहूदी की लड़की' के बाद मेरे जीवन का सबसे चुनौतीपूर्ण नाटक है। उन्होंने बताया कि दर्पण संस्था अपने संस्थापक प्रोफेसर सत्यमूर्ति के जन्म शताब्दी वर्ष में इस नाटक को प्रस्तुत कर रही। नाटक का लेखन वरिष्ठ रंगकर्मी सूर्य मोहन कुलश्रेष्ठ व शिवांगी निगम ने किया है। निर्देशन भी सूर्य मोहन कुलश्रेष्ठ कर रहे हैं।

डैडी में दिखा पिता-पुत्री का मार्मिक रिश्ता

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। डिमेंशिया से पीड़ित एक बुजुर्ग व्यक्ति और उसकी बेटी के बीच मार्मिक रिश्ते में लिपटी कहानी जब मंच पर उतरी तो उसकी संवेदनशीलता दर्शकों के दिलों को छू गई। संगीत नाटक अकादमी के संत गाडगे प्रेक्षागृह में शुक्रवार को सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ के निर्देशन में नाटक डैडी के पहले मंचन ने दर्शकों को हंसाया तो आंखें भी नम कीं। डैडी की भूमिका में वरिष्ठ रंगकर्मी अनिल रस्तोगी ने एक बार फिर अपने अभिनय का लोहा मनवाया। बेटी अन्नू के किरदार में शालिनी विजय ने सशक्त अदाकारी से खूब तालियां बटोरीं।

फ्लोरियां जैलर के नाटक 'ले पेरे' से प्रेरित डैडी की परिकल्पना तैयार की वरिष्ठ रंगकर्मी सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ ने। एक तरफ बेटी की अपनी निजी जिंदगी है, सपने हैं और अपना प्यार है। ...लेकिन दूसरी तरफ डिमेंशिया से पीड़ित वृद्ध पिता की देखभाल की जिम्मेदारी जो उसे अपने सपने और प्यार से दूर करती है। अंततः बेटी अपने बुजुर्ग पिता की देखभाल की

वरिष्ठ रंगकर्मी अनिल रस्तोगी के अभिनय ने दर्शकों को रुलाया



संगीत नाटक अकादमी में मंचन करते वरिष्ठ रंगकर्मी अनिल रस्तोगी व अन्य। -संवाद

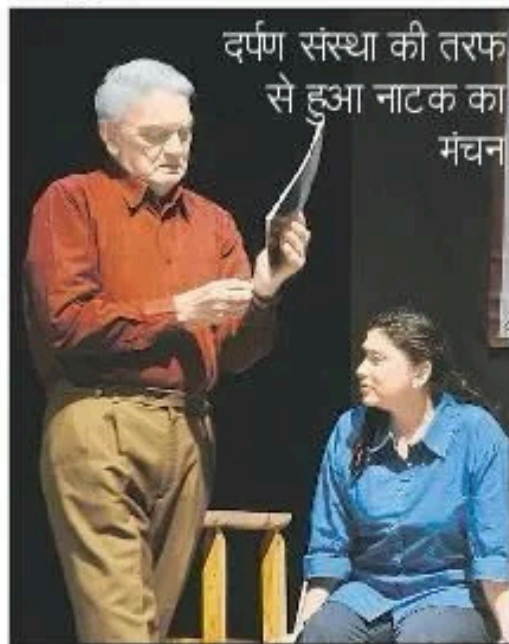
जिम्मेदारी को प्राथमिकता देती है। अजय शर्मा, पूजा सिंह, अंकिता दीक्षित, अभिषेक सिंह, विपिन प्रताप राव और अभिषेक पाल ने भी अहम भूमिकाएं निभाईं। सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ ने बताया कि शनिवार को भी इस नाटक का मंचन संगीत नाटक अकादमी में ही किया जाएगा।

डैडी में दिखा स्मृतियों में खोए बुजुर्ग का द्वंद्व

■ NBT न्यूज, लखनऊ: एक वृद्ध जो निरंतर स्मृतियों को खोता जा रहा है उसके नजरिये में दुनिया कैसी है यह दिखाने के लिए मंगलवार को दर्पण संस्था की ओर से नाटक डैडी का मंचन किया गया। फ्रेंच लेखक फ्लोरियां जेलर के नाटक ले पेरे पर आधारित नाटक का लेखन सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ और शिवांगी निगम ने किया। सूर्यमोहन निर्देशित नाटक में मुख्य भूमिका डॉ. अनिल रस्तोगी की रही।

नाटक की शुरुआत एक पिता अनंत और पुत्री अनु के संवाद से होती है। जिसमें अनु नर्स को भगाने के चलते बीमार पिता पर नाराज हो रही है। पिता अपनी घड़ी को रखकर भूल जाता है और नर्स को चोर बताता है। इसके बाद दामाद अतुल की भी एंट्री होती है, जिसे पिता पहचान नहीं पाता है। अनंत को कई ऐसी बातें याद आती हैं जो पहले हुई हैं लेकिन उसे भ्रम होता है कि अभी भी वही समय है।

समय के साथ जैसे-जैसे स्मृति धूमिल



होती है मंच के सामान भी कम होने लगते हैं। अनंत बेटी के घर को अपना समझता है और बेटी को यह कहते हुए कि अपमानित करता है उसकी संपत्ति पर हड़पना चाहती है। बेटी घर में नर्स रखती है जो शुरू में पिता को अपनी छोटी बेटी से मिलती हुई लगती है। नाटक में काफी देर तक यह सस्पेंस बना रहता है कि आखिर छोटी बेटी

कहाँ है जो अंतिम दृश्यों में खुलता है कि उसकी मौत हो चुकी है। अंत में बेटी पिता को साइकेट्रिक हॉस्पिटल में भर्ती करवा देती है। अनंत यह नहीं समझ पाता है वह हॉस्पिटल में है और बेटी को ढूँढता है। अब उसकी स्मृति और ज्यादा खो चुकी है और मंच पर सिर्फ एक बेड रह जाता है। अंत में अनंत एक बच्चे की तरह रोता है और अब वो बेटी नहीं अपनी मां को याद करता है। नाटक की खास बात रही मरीज की जिजीविषा। निरंतर झुझने के बाद भी वो जीना चाहता है। नाटक यह संदेश देता है कि समाज को लेकर हमारी समझ सिर्फ स्मृतियों तक सीमित है, जबकि संसार हमारी स्मृतियों से कहीं बड़ा है, इसलिए हम सभी कहीं ना कहीं डेमेशिया से पीड़ित हैं। मंच पर शालिनी विजय, अभिषेक सिंह, अंकिता दीक्षित, पूजा सिंह, अजय शर्मा और अभिषेक पाल ने अभिनय किया। प्रकाश परिकल्पना गोविंद यादव, संगीत संचालन अविजित पांडेय का रहा।

Times Of India

'Vision 2047'. This year is

Play explores father-daughter relationship

Abhay Raj | TNN

Lucknow: An adaptation of the French masterpiece 'Le Pere' by Florian Zeller, titled 'Daddy', was staged at Sant Gadge Ji Maharaj auditorium at Sangeet Natak Akademi on Tuesday.

The adaptation is directed by veteran dramatist Suryamohan Kulshreshtha and featured celebrated actor Anil Rastogi in the lead role.

The story explores delicate and often painful dynamics



A scene from the play, Daddy

between a father-daughter duo, who has lost grip of his reality. On the other hand, the daughter struggles to maintain a balance between her personal aspirations and caregiving.

The cast included Shalini Vijay, Ajay Sharma, Pujan Singh, Ankita Dixit, Abhishek Singh, Vipin Pratap Rai, and Abhishek Pal.

‘डैडी’ में पिता और बेटी के रिश्ते को गहराई से दिखाया

वरिष्ठ संवाददाता (vol)

लखनऊ। लखनवी रंगमंच के लिए मंगलवार को दिन बेहद खास रहा। राष्ट्रपति के हाथों संगीत नाटक अकादमी अवार्ड ले चुके अभिनेता डा. अनिल रस्तोगी और रंग निर्देशक सूर्य मोहन कुलश्रेष्ठ की बेहतरीन जुगलबंदी बहुत दिनों बाद शहर में नए नाटक के रूप में देखने को मिली। दर्पण की ओर से सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ के निर्देशन में नाटक डैडी तैयार किया गया। जिसमें मुख्य भूमिका वरिष्ठ रंगकर्मी अनिल रस्तोगी ने निभायी। मंगलवार को इस विशेष शो का मंचन संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह में किया गया। फ्लोरियां जैलर के नाटक ले पेरे से प्रेरित नाटक डैडी का लेखन सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ एवं शिवांगी निगम ने किया। डैडी की कहानियां एक डिमेंशिया रोगी और बुजुर्ग डैडी अनन्त की कहानी है। जो झण-झण याददाश्त



खोते जा रहे हैं। इस डैडी का भ्रम और संभ्रम नाटक के अन्त में पराकाष्ठा पर पहुंचता है। नाटक ने पिता और बेटी के रिश्ते को बहुत गहराई से चित्रित किया। एक तरफ बेटी की अपनी जिन्दगी है, अपने सपने, अपना प्यार है और दूसरी तरफ डिमेंशिया पीड़ित पिता की जिम्मेदारी। यह द्वन्द्व नाटक में लगातार दिखता है। डिमेंशिया पीड़ित पिता के किरदार को वरिष्ठ रंगकर्मी अनिल रस्तोगी ने जीवंत कर दिया और निर्देशन में सूर्य मोहन कुलश्रेष्ठ ने कहानी के मर्म को उजागर कर दिया। मंच पर बेटी अन्नू का किरदार शालिनी विजय ने प्रभावी रूप से निभाया।